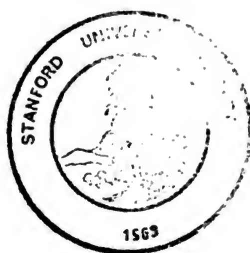
# Dilucidationes Aesopiae

Leo Sternbach


STANFORD

# DILUCIDATIONES AESOPIAE.

SCRIPSIT

LEO STERNBACH.

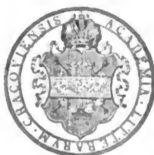



CRACOVIAE.
SUMPTIBUS ACADEMIAE LITTERARUM.
APUD BIBLIOPOLAM SOCIETATIS LIBRARIAE POLONICAE.
(SPÓŁKA WYDAWNICZA POLSKA).
1894.

# DILUCIDATIONES AESOPIAE.

SCRIPSIT

LEO STERNBACH.




CRACOVIAE.
SUMPTIBUS ACADEMIAE LITTERARUM.
APUD BIBLIOPOLAM SOCIETATIS LIBRARIAE POLONICAE.
(SPÓŁKA WYDAWNICZA POLSKA).
1894.

Seorsum impressum ex XXIII. Tomo Dissertationum Classis philologicae
Academiae Litterarum Cracoviensis.

Cracoviae, 1894. — Typis Universitatis Iagellonicae, provisore A. M. Kosterkiewicz.

# Dilucidationes Aesopiae.

Scripsit

**Leo Sternbach.**

Fabularum Aesopiarum sylloge e codice Parisino Gr. n. 690 nuper [1]) eruta eo potissimum nomine notabilis est, quod haud exigua apologorum pars reliquis eiusdem argumenti fabulis et inventionis laude et verborum compositione et incorrupta sermonis integritate longe praestat. In censum veniunt Furiae corpus Florentinum (F) [2]) et fabularum thesaurus a Corai (C) [3]) adornatus, praecipue vero in contentionis iudicium vocanda est conlectio Augustana (A) codicis Monacensis Gr. n. 564 a Schneidero [4]) publici iuris facta, quippe quae exemplum Parisinum propinqua cognatione contingat.

---

[1]) „Rozprawy Wydziału filologicznego Akademii Umiejętności" vol XXI (1894) p. 320 sqq. — Paginarum numeros secundum exemplaria seorsim impressa adferri moneo.

[2]) „Fabulae Aesopiae, quales ante Planudem ferebantur, ex vetusto Codice Abbatiae Florent. nunc primum erutae una cum aliis partim hinc inde collectis partim ex Codd. depromptis Latina versione notisque exornatae cura ac studio Francisci de Furia" (Lipsiae 1810) Alteram eiusdem operis editionem paravit Carolus Ernestus Christophorus Schneider (Lipsiae 1810).

[3]) „Παρέργων Ἑλληνικῆς βιβλιοθήκης τόμος δεύτερος. Μύθων Αἰσωπείων συναγωγή" (Lutetiae Parisiorum 1810).

[4]) „Fabulae Aesopiae e codice Augustano nunc primum editae. — Recensuit et emendavit Jo. Gottlob Schneider" (Vratislaviae 1812). Ex FCA manarunt „Fabulae Aesopicae collectae. Ex recognitione Caroli Halmii" (Lipsiae 1852).

Fabularum synopsis haec est:

| M | A | M | A | M | A | M | A | M | A |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 10 | 44 | 44 | 87 | 92 | 130 | 136 | 173 | 170 |
| 2 | 9 | 45 | 45 | 88 | 93 | 131 | — | 174 | 171 |
| 3 | 16 | 46 | 46 | 89 | 94 | 132 | — | 175 | 172 |
| 4 | 18 | 47 | 47 | 90 | 95 | 133 | 137 | 176 | 173 |
| 5 | 19 | 48 | 48 | 91 | 97 | 134 | — | 177 | 174 |
| 6 | 20 | 49 | 49 | 92 | 98 | 135 | 138 | 178 | 175 |
| 7 | 21 | 50 | 50 | 93 | 100 | 136 | 139 | 179 | 176 |
| 8 | 27 | 51 | 51 | 94 | 101 | 137 | 140 | 180 | 177 |
| 9 | 32 | 52 | 52 | 95 | 102 | 138 | 141 | 181 | 178 |
| 10 | 42 | 53 | 53 | 96 | — | 139 | 142 | 182 | 179 |
| 11 | 1 | 54 | 54 | 97 | 103 | 140 | 143 | 183 | 180 |
| 12 | 2 | 55 | 55 | 98 | 105 | 141 | 144 | 184 | 181 |
| 13 | 3 | 56 | 56 | 99 | 106 | 142 | 145 | 185 | 182 |
| 14 | 4 | 57 | 57 | 100 | 107 | 143 | 146 | 186 | 183 |
| 15 | 5 | 58 | 58 | 101 | — | 144 | 147 | 187 | 184 |
| 16 | 6 | 59 | 61 | 102 | 109 | 145 | 148 | 188 | — |
| 17 | 7 | 60 | 72 | 103 | 110 | 146 | 149 | 189 | 185 |
| 18 | 8 | 61 | 63 | 104 | 111 | 147 | 150 | 190 | 186 |
| 19 | 11 | 62 | 64 | 105 | 112 | 148 | 151 | 191 | 187 |
| 20 | 12 | 63 | — | 106 | 113 | 149 | — | 192 | — |
| 21 | 13 | 64 | 65 | 107 | 114 | 150 | 152 | 193 | — |
| 22 | 14 | 65 | 66 | 108 | 115 | 151 | 153 | 194 | 188 |
| 23 | 15 | 66 | 67 | 109 | 116 | 152 | 154 | 195 | 189 |
| 24 | 17 | 67 | 68 | 110 | 117 | 153 | 155 | 196 | 190 |
| 25 | 22 | 68 | 69 | 111 | 118 | 154 | 156 | 197 | 191 |
| 26 | 23 | 69 | 73 | 112 | 119 | 155 | — | 198 | 192 |
| 27 | 24 | 70 | 74 | 113 | 120 | 156 | 157 | 199 | 193 |
| 28 | 25 | 71 | 75 | 114 | 121 | 157 | 160 | 200 | 195 |
| 29 | 26 | 72 | 76 | 115 | 122 | 158 | — | 201 | 196 |
| 30 | 28 | 73 | 77 | 116 | 123 | 159 | — | 202 | 197 |
| 31 | 29 | 74 | 78 | 117 | 124 | 160 | 161 | 203 | 198 |
| 32 | 30 | 75 | 79 | 118 | 125 | 161 | 162 | 204 | 199 |
| 33 | 31 | 76 | 80 | 119 | 126 | 162 | 163 | 205 | 200 |
| 34 | 33 | 77 | 81 | 120 | 127 | 163 | 164 | 206 | 201 |
| 35 | 34 | 78 | 82 | 121 | 128 | 164 | — | 207 | 202 |
| 36 | 35 | 79 | 83 | 122 | 129 | 165 | 166 | 208 | 203 |
| 37 | 36 | 80 | 84 | 123 | 130 | 166 | — | 209 | 204 |
| 38 | 37 | 81 | 85 | 124 | — | 167 | — | 210 | 205 |
| 39 | 38 | 82 | 86 | 125 | 131 | 168 | 167 | 111 | 206 |
| 40 | 39 | 83 | 87 | 126 | 132 | 169 | — | 212 | — |
| 41 | 40 | 84 | 88 | 127 | 133 | 170 | 99 | 213 | — |
| 42 | 41 | 85 | 89 | 128 | 134 | 171 | 168 | 214 | — |
| 43 | 43 | 86 | 91 | 129 | 135 | 172 | 169 | 215 | 209 |

| M | A | M | A | M | A | M | A | M | A |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 216 | — | 220 | 211 | 224 | — | 228 | 221 | 232 | 226 |
| 217 | 222 | 221 | 213 | 225 | — | 229 | 223 | 233 | 230 |
| 218 | — | 222 | — | 226 | 216 | 230 | 224 | 234 | — |
| 219 | 210 | 223 | 214 | 227 | 220 | 231 | 225 | 235 | — |

Desunt in A duodetriginta corpusculi Parisini fabulae, ex aliis vero syllogis recensiones gemellae vel saltem similes tribus et viginti apologis admoveri possunt cf.

63) F 56 (sive C 398);

96) C 103 (sive F 255);

124) C 34ª (sive F 227); cf. Syntip. 33 (sive C 34ᵇ);

131) C 199 (sive F 283), Bodl. 60;

132) F 354 (sive C 405); cf. Babr. 80;

134) C 214, F 112;

149) C 231 (sive F 300);

155) F 105, C 236;

158) F 113, C 40;

164) C 243, F 117; cf. Babr. 60;

166) C 248, F 123; cf. cod. Vatic. Gr. 777 [1]) n. 130 (sive Babr. n. 131 Gitlbauer);

167) C 43, F 126;

169) F 125, C 109;

188) C 253 (sive F 311);

212) C 250 (sive F 310);

213) C 274 (sive F 320);

214) Bodl. 50; cf. Babr. 66;

218) Bodl. 117; cf. Ignat. 19 (sive C 313ᵈ) cl. C 313ª (ex Aristotelis Rhet. II 20, 5), 313ᵇ (ex Cononis Narrat. 42), Nicephor. Basilac. 2 (sive C 313ᶜ);

222) C 282 (sive F 325);

224) C 278 (sive F 322);

225) C 206 (sive F 288);

234) C 291, F 197; cf. cod. Vatic. Gr. 777 n. 192 (p. 688 Knoell. = Babr. 135 Gitlb.);

235) C 244 (et M 104, A 111, F 84).

Restant fabellae quinque, quas quidem uberius explanare placet:

[1]) P. Knoell, neue Fabeln des Babrius („Sitzungsberichte der philos.-histor. Classe d. kais. Akademie d. Wissenschaften" vol. XCI — Vindob. 1878 — p. 659 sqq.).

## CI.

Ζεὺς Ἑρμῇ προσέταξε πᾶσι τοῖς τεχνίταις ψεύδους φάρμακον χεῖν. Ὁ δὲ τοῦτο τρίψας καὶ μέτρον ποιήσας ἴσον ἑκάστῳ ἐνέχεεν. Ἐπεὶ δὲ μόνου τοῦ ἰατροῦ ὑπολειφθέντος πολὺ φάρμακον κατελείπετο, λαβὼν [οὖν] ὅλην τὴν θυίαν κατ' αὐτοῦ κατέχεεν. Ἐκ τούτου συνέβη τοὺς τεχνίτας πάντας ψεύδεσθαι, μάλιστα δὲ πάντων τοὺς ἰατρούς.

Ὁ λόγος εὔκαιρος πρὸς ἄνδρα ψευδολόγον.

Medicorum vaniloquentiam [1]) iisdem fere verbis auctor exagitat, quibus n. 96 sutorum mendacia sugillantur:

Ζεὺς Ἑρμῇ προσέταξε πᾶσι τοῖς τεχνίταις ψεύδους φάρμακον χέαι. Ὁ δὲ τοῦτο τρίψας καὶ μέτρον ποιήσας ἴσον ἑκάστῳ ἐγχεῖ. Ἐπεὶ δὲ μόνου τοῦ σκυτέως ὑπολειφθέντος πολὺ φάρμακον κατελείπετο, λαβὼν ὅλην τὴν χύσιν κατ' αὐτοῦ κατέχεεν. Ἐκ τούτου συνέβη τοὺς τεχνίτας πάντας ψεύδεσθαι, μάλιστα <δὲ> τοὺς σκυτέας.

Πρὸς ἄνδρα ψευδολόγον ὁ λόγος εὔκαιρος

De scripturae discrepantiis haec habeo, quae adnotem [2]):

Χεῖν—χέαι] alteram lectionem commendat M 100 Ζεὺς πλάσας ἀνθρώπους ἐκέλευσεν Ἑρμῇ νοῦν αὐτοῖς ἐ γ χ έ α ι, ubi ἐκχέαι in ἐγχέαι ex A 150 mutavi; praesens confirmat M 96 in recensione Coraisiana 103 (sive F 255) Ζεὺς Ἑρμῆν προσέταξε πᾶσι τοῖς τεχνίταις ψεύδους φάρμακον ἐ γ χ ε ῖ ν [3]), quo loco accusativus Ἑρμῆν notandus est. Dativum adgnoscit M etiam n. 144 προσέταξε τῷ ὄνῳ διελεῖν αὐτοῖς (p. 40, 16 sq.) et τῇ ἀλώπεκι μερίσαι προσέταξεν (l. 19), utrumque casum in verbis ἐπιτρέπειν, κελεύειν, παραινεῖν praebet cf. 1) *a)* 61; *b)* 13; — 2) *a)* 95. 100. 178; *b)* 87. 213; — 3) *a)* 24. 53. 144 (bis). 186; *b)* 2. 68. 152. 198. Dativus cum accusativo copulatur n. 25 ὁ δὲ α ὐ τ ῇ παρῄνεσεν εἰς τὴν ἑαυτοῦ καλύβην ε ἰ σ ε λ θ ο ῦ σ α ν κρυβῆναι, qua de constructione cf. n. 179 συνέβη δὲ α ὐ τ ῷ τῶν σπόγγων ἀνασπασάντων τὸ ὕδωρ μὴ δ υ ν ά μ ε ν ο ν (sic scripsi pro δυνάμενος, — formam δυναμένῳ exhibent A 176 et C 254ᵃ) ἐξαναστῆναι ἐνταῦθα

---

1) Idem argumentum tractant M 106 (A 113, C 31 sive F 224), 167 (F 126, C 43), Babrius 75 (Bodl. 53, C 192 sive F 277).

2) Leviora editio suppeditat; unum addo in utraque fabula Ἑρμῇ et ἑκάστῳ legi. Scilicet M paucissimis locis ι ἀνεκφώνητον adscribit: αὐτῶι 135 (p. 37, 28). 136. 154 (p. 43, 15). 171 bis (p. 48, 5 et 17). 188 (p. 52, 34 pro αὐτόν). 201 (p. 56, 15). 205 (p. 57, 16), 218 bis. 229 (p. 63, 15), αὐτῆι 201 (p. 56, 16 pro αὐτῷ), τῶι 144. 158. 198. 214, τῆι 153. 234 (p. 64, 26).

3) Cf. etiam Xenophon Anab. IV, 3, 13 τοῖς νεανίσκοις ἐ γ χ ε ῖ ν ἐκέλευε et Plutarchus de genio Socratis 30 (Mor.) p. 596 F αἰτήσας δὲ ποτήριον ἐκέλευσεν ἐ γ χ ε ῖ ν. Sed aoristum adhibent Aristophanes Acharn. 1051 ἐκέλευε δ' ἐ γ χ έ α ι σε τῶν κρεῶν χάριν et Aristoteles Oecon. 2 p. 1353ᵇ 22 ἀγαθοῦ δαίμονος κελεύσας ἐ γ χ έ α ι. Addatur Pherecrates fr. 101, 1 (Kock).

ἀποπνιγῆναι, 202 συνέβη δὲ αὐτῇ τῶν πτερῶν περιθραυσθέντων ἐπὶ τῆς γῆς καταπεσοῦσαν ὑπό τινος τῶν παρατυχόντων συλληφθῆναι, — 33 οὕτω τε συνέβη αὐτῷ ὑπὸ ἀμφοτέρων ἐν μέρει τιλλομένῳ φαλακρότερον [1]) γενέσθαι, 94 οὕτω τε συνέβη αὐτῷ ἀπογυμνωθέντι κολοιὸν γενέσθαι, — 59 ἀλλ' ἡμῖν ἀνεκτότερον μαχομένους ὑπ' ἀλλήλων διαφθαρῆναι ἢ σοῦ διαλλακτοῦ τυχεῖν, — 178 ἀλλ' ἔμοιγε αἱρετώτερον ἦν παρὰ τοῖς προτέροις δεσπόταις ἀχθοφοροῦντα λιμώττειν ἢ ἐνταῦθα παραγενέσθαι. Hinc etiam n. 126 <συνέβη δὲ αὐτῇ ἀμφοτέρων στερηθῆναι> [καὶ] τοῦ μὲν <μὴ> ἐφικομένην, διότι οὐδὲν ἦν, τοῦ δέ, ὅτι ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ παρεσύρη lacunosam et corruptam sylloges nostrae memoriam ex A 132 ita supplevi et emendavi, ut codicis M scriptura ἐφικόμενον accusativum, non ἐφικομένῃ (A) significari putarem [2]). Accusativum cum infinitivo habet C 209ᵃ συνέβη δὲ αὐτὴν ἀμφοτέρων στερηθῆναι, τοῦ μὲν μὴ ἐφικομένην, διὸ μηδὲν [3]) ἦν, τοῦ δέ, ὅτι ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ κατεσύρετο, quae constructio etiam in M recurrit n. 28. 40. 68. 70. 71. 75. 84. 96. 100. 101. 128. 145. 159. 162. 205. 213. 214. 231, unde n. 58 καὶ δὴ τοῦτο αὐτῆς ποιούσης συνέβη [εἰς] τὴν ὄρνιν πίονα γενομένην μηκέτι μηδὲ ἅπαξ τεκεῖν voculam εἰς cum A 58 includendam esse adparet [4]).

Ἐνέχεεν—ἐγχεῖ] cf. M. 100 κἀκεῖνος μέτρον ποιήσας ἴσον ἐνέχεεν ἑκάστῳ. Etiam in n. 96 C ἐνέχεεν offert. Ceterum nostro loco ἐνέχεεν pro ἐνέχει edidi, quemadmodum in sequentibus κατέχεεν habes: nimirum formae contractae ad inperfectum pertinent cf. ἐνέχεις (Aristophanes Plut. 1021), ἐνέχει (Aristophanes fr. 165 Kock, Antiphon Or. I 19), ἐξέχει (Aeschylus Agam. 1029, Aristophanes Acharn. 987), ἐπέχει (Dromo fr. 2, 3 vol. II p. 419 Kock), σύγχει (Homerus Il. 13, 808), formae non contractae aoristum significant, qui nostro loco expectatur cf. χέε(ν) apud Homerum Il. 20, 321; 23, 220 et 765, Od. 11, 588, ἔχεεν (sive potius

---

[1]) L. φαλακρὸν cum A 31 cf. Babr. 22, 11 sq. ἕως φαλακρὸν ἥ νέη τε χἠ γραίη | ἔθηκαν, Bodl. 15 (et C 162ᵇ) ἕως ἂν αὐτὸν φαλακρὸν ἐποίησαν, C p. 352 οὕτω τοίνυν ποιοῦσαι ἀμφότεραι φαλακρὸν τὸν τρισάθλιον καὶ βρεφύλλιον ἀπειργάσαντο, Phaedr. II 2, 8 sq. qui se putaret fingi cura mulierum, | calvus repente factus est. Comparativum praebet C 162ᵃ.

[2]) Praeterea A et ante αὐτῇ et ante ὅτι formam elisam δ' offert, qua de cf. Excursus I.

[3]) Ex hoc loco corrigenda est sylloges Angustanae lectio μηδέ.

[4]) Eadem praepositio prave et inrepsit et excidit n. 2 ἡ δὲ τὴν συντυχίαν ἀσπασαμένη [εἰς] ἔπαινον τοῦ ὕδατος κατέτεινε (p. 1, 12 sq.) et χρήσιμον οἶδα, ἐὰν μόνον θελήσῃς, <εἰς> τὴν ἀμφοτέρων σωτηρίαν (l. 16 sq.) cf. *a*) A 9 et F 4 ἡ δὲ τὴν δυστυχίαν (genuinam scripturam servavit M) ἀσπασαμένη πολὺν (in A πολλὴν repperi) ἔπαινον τοῦ ὕδατος κατέτεινε. — *b*) A 9 καὶ ἡ ἀλώπηξ χρήσιμόν τι ἔφη ἐπινενοηκέναι εἰς τὴν ἀμφοτέρων σωτηρίαν, F 4 χρήσιμόν τι ἡ ἀλώπηξ ἔφη ἐπινενοηκέναι εἰς τὴν ἀμφοτέρων σωτηρίαν, C 4ᵃ θάρσει χρήσιμόν τι καὶ εἰς τὴν ἀμφοτέρων σωτηρίαν ἐπινενόηκα.

ἐξέχεεν, — nam praepositio ἐκ per tmesin cum ἔχεεν cohaeret) apud Callimachum Hymn. I 32, poetam anonymum in Schneideri Callimacheis vol. II p. 711 n. 34, Tryphiodorum 119, ἐνέχεεν (Pherecrates fr. 70, 2), κατέχεε(ν) (Aristophanes Nub. 74, Xenarchus fr. 7, 16, Ps.-Demosthenes XLV 74 p. 1124, 1 R.), συνέχεε (Plato Rep. II p. 379 E). — De posteriorum usu cf. Lobeckius ad Phrynich. p. 222.

Ὑπολειφθέντος] ὑπολιπόντος M 96, quod cum C correxi. Similiter n. 166 νέος ἄσωτος καταφαγὼν τὰ πατρῷα ἱματίου αὐτῷ μόνου περιλειφθέντος ultimum verbum pro περιλιπόντος reposui, quam emendationem C 248 et F 123 corroborant.

Λαβὼν [οὖν] ὅλην τὴν θυίαν — λαβὼν ὅλην τὴν χύσιν] falso in apodosin particula οὖν se insinuavit, quod accidit etiam n. 37: ἀνὴρ κακοπράγμων συνορισάμενος πρός τινα ψευδῆ ἐπιδεῖξειν τὸ ἐν Δελφοῖς μαντεῖον, <ὡς> ἐνέστη ἡ προθεσμία, λαβὼν [οὖν] στρουθίον εἰς τὴν χεῖρα καὶ τοῦτο τῷ ἱματίῳ σκεπάσας ἧκεν εἰς τὸ ἱερόν, ubi ὡς adicere et οὖν eicere malui, quam συνορισάμενος in συνωρίσατο mutare cf. A 36. Similiter δὲ inrepsit n. 3. 15. 52. 90 cf. insuper n. 104.

Θυίαν adgnoscit etiam C in n. 96: ἐπεὶ δὲ πολὺ κατελέλειπτο φάρμακον, ὅλην λαβὴν τὴν θυείαν ἐνέχεεν αὐτῷ. De nostrae sylloges forma cf. Andromachus apud Galenum vol. XIII p. 877 (Kuehn) καὶ τὰ μὲν ἐν θυίῃ πολλῷ μαλθάσσετο οἴνῳ.

Μάλιστα δὲ πάντων τοὺ ἰατροὺς — μάλιστα <δὲ> τοὺς σκυτέας] in M 96 itidem δὲ πάντων post μάλιστα intercidisse probat C: κὰκ τούτου συνέβη τοὺς τεχνίτας ἅπαντας ψεύδεσθαι, μάλιστα δὲ πάντων τοὺς σκυτέας, ubi varietas κὰκ et ἅπαντας observatione est digna. Eodem modo M inter οὕτως συνέβη (40) et οὕτω τε συνέβη (33. 94. 115. 159. 169) fluctuat. Plenior vocis πᾶς forma in M ter comparet: n. 24 (ἅπασας). 169 (ἅπασι). 188 (ἁπάντων), brevioris exempla haec sunt in promptu: πᾶς (34), πᾶν (31. 38. 53. 54. 100. 154), παντὸς (28), πᾶσαν (10), πάντες (32. 87. 162), πάντων (5. 62. 70. 80. 89. 101. 116), πᾶσι (96. 101. 200), πάντας (11. 96. 103. 140. 162), πάντα (40. 57 bis. 84. 87. 90. 98. 144. 166. 208. 218. 220), πάσας (16 bis. 171), — πανταχόθεν (13. 141), πανταχοῦ (33), [παντελῶς (175), πάντως (93. 116. 177)].

Ὁ λόγος εὔκαιρος πρὸς ἄνδρα ψευδολόγον — πρὸς ἄνδρα ψευδολόγον ὁ λόγος εὔκαιρος] altera epimythii conformatio in M longe frequentior est atque usitatior cf. n. 19 πρὸς τοὺς παρὰ καιρόν τι πράττοντας ὁ λόγος εὔκαιρος, 42 πρὸς ἄνδρα ῥᾳδιουργὸν καὶ μωρὸν κλέπτην ὁ λόγος εὔκαιρος, 70 πρὸς ἄνδρα ψευδολόγον ὁ λόγος εὔκαιρος, 80 πρὸς τοὺς διὰ φθόνον κρείττοσιν ἁμιλλωμένους ὁ λόγος εὔκαιρος, 95 πρὸς τοὺς ῥᾳδίως δανειζομένους, μετὰ λύπης δὲ ἀποδιδόντας ὁ λόγος εὔκαιρος. 100 πρὸς ἄνδρα εὐμεγέθη μὲν σώματι, κατὰ ψυχὴν δὲ ἀλόγιστον ὁ λόγος εὔκαιρος

[ὁ καιρὸς εὔλογος M [1])], 116 πρὸς ἄνδρα ἀνόητον ὁ λόγος εὔκαιρος, 126 πρὸς ἄνδρα πλεονέκτην ὁ λόγος εὔκαιρος, 129 πρὸς ἄνδρα ἀμφίβολον ὁ λόγος εὔκαιρος, 136 πρὸς ἄνδρα γλωσσαλγίαν οὐδὲν πλέον τοῦ λαλεῖν δυνάμενον ὁ λόγος εὔκαιρος, 156 πρὸς ἄνδρα κακοῦργον δι' ὑποκρίσεως ἐνεδρεύοντα ὁ λόγος εὔκαιρος, 170 πρὸς ἄνδρα αἰσχροκερδῆ μηδὲ θεῶν πεφροντικότα ὁ λόγος εὔκαιρος, 185 πρὸς ἄνδρα φιλόνεικον ὁ λόγος εὔκαιρος, 207 πρὸς ἄνδρα κόλακα ὁ λόγος εὔκαιρος, 213 πρὸς ἄνδρα σκαιὸν καὶ θηριώδη ὁ λόγος εὔκαιρος, 220 πρὸς ἄνδρα ἀχάριστον ὁ λόγος εὔκαιρος, 234 πρὸς ἄνδρα πονηρόψογον ἑτέροις ἀεὶ αἰτίας προςάπτειν ἐπιχειροῦντα λόγος (l. ὁ λόγος) εὔκαιρος. Cum M 101 consentit tantummodo n. 30 ὁ λόγος εὔκαιρος πρὸς ἄνδρα ψευδολόλον, ubi ὁ adieci in codice casu omissum [2]). Aliter n. 83 ὁ λόγος πρὸς ἄνδρα ἄσωτον δι' ἡδυπάθειαν ἀπολωλότα εὔκαιρός ἐστιν, quam structuram offert etiam F 18 ὁ λόγος πρὸς ἄνδρα ῥᾳδιουργὸν καὶ κλέπτην εὔκαιρός ἐστιν. Ex reliquis syllogis accedunt A 202 ὁ λόγος εὔκαιρός ἐστι πρὸς ἄνδρα κόλακα, — 211 οὗτος ὁ λόγος εὔκαιρος πρὸς ἄνδρα ἀχάριστον, — C 209ᵃ ὁ λόγος πρὸς ἄνδρα πλεονέκτην εὔκαιρος, — Babrius 27 πρὸς τοὺς μετρίως μὲν ὠφελοῦντας, βλάπτοντας δὲ τὰ μεγάλα εὔκαιρός ἐστιν ὁ λόγος.

Ceterum in M 96 Corais exemplum ὁ μῦθος πρὸς ψευδολόγους τεχνίτας exhibet, ubi rectius artificum notio premitur; quamquam fabulae tenor in M 96 πρὸς σκυτέα ψευδολόγον ὁ λόγος εὔκαιρος, in M 101 ὁ λόγος εὔκαιρος πρὸς ἰατρὸν ψευδολόγον videtur flagitare cf. Bodl. 53 et C 192 (sive F 277) ὅτι τοὺς ἀπαιδεύτους καὶ ἀμαθεῖς καὶ κομψολόγους ἰατροὺς ὁ παρὼν μῦθος (ἐλέγχει καὶ adicit C) στηλιτεύει. — De epimythii Coraisiani forma cf. C 11. 40. 47. 52. 55. 67ᵃ. 81ᵃ. 88ᵃ. 90. 100. 106. 127ᵃ. 130ᵃ. 131. 138ᵃ. 139ᵇ. 144ᵃ. 146. 209ᵇ. 262ᵇ, Babrius 64. 125. (sive F 368). 133 (Gitlbauer).

## CLIX.

Μαντευομένης τινὸς περὶ τοῦ ἑαυτῆς παιδὸς νηπίου ὄντος οἱ μάντεις προέλεγον, ὅτι ὑπὸ κόρακος ἀναιρεθήσεται. Διόπερ φοβουμένη λάρνακα μεγίστην κατασκευάσασα ἐν ταύτῃ αὐτὸν καθεῖρξε φυλαττομένη, μὴ ὑπὸ κόρακος ἀναιρεθῇ.

[1]) Correxi cum A 107; nescio tamen, an scribendum sit: εὔκαιρος ὁ λόγος. Certe gemellum epimythium n. 8 πρὸς ἄνδρα μεγαλοπρεπῆ μὲν σώματι, κατὰ ψυχὴν δὲ ἀλόγιστον in $M_2$ (sic! inter n. 29 et 30) formula εὔκαιρος ὁ λόγος clauditur (ὁ λόγος εὔκαιρος in sententiae introitu conlocat A 27).

[2]) Primis et fabularum et affabulationum litteris librarius colorem aureum inducere solet, id quod nostro loco facere neglexit. Verumenimvero unius litterae vacuum spatium remansit.

Καὶ διετέλει τεταγμέναις ὥραις ἀναπεταννῦσα καὶ τὰς ἐπιτηδείους αὐτῷ τροφὰς παρεχομένη. Καί ποτε ἀνοιξάσης αὐτῆς καὶ τὸ πῶμα ἐπιθείσης ὁ παῖς ἀπροφυλάκτως παρέκυψεν. Οὕτω τε συνέβη τῆς λάρνακος τὸν κόρακα κατὰ τοῦ βρέγματος κατενεχθέντα ἀποκτεῖναι αὐτόν.

Exquisitam vocis κόραξ ambiguitatem praestat Nicetae Choniatae narratio de morte Ioannis Comneni p. 55, 20 sqq. (Bekker) οἱ δὲ τὰς τῶν βασιλέων διαδοχὰς καὶ μεταθέσεις φιλοκρινοῦντες καὶ τοῦτο πέρας εἰληφέναι ἔλεγον.

ὢ πῶς γενήσῃ βρῶμα δεινῶν κοράκων·

πῇ μὲν ἐς τὰ μέλανα καὶ σίζοντα σιδήρια τὸ παλαίφατον τοῦτο λόγιον ἀφορᾶν ἰσχυριζόμενοι, δι' ὧν ὁ καυτὴρ τῇ χειρὶ τοῦ βασιλέως ἐπενήνεκται, πῇ δ' ἐς τὸ τῶν βουνῶν προσώνυμον [1]), ἐφ' ὧν ἐκεῖνος κατεσκηνώκει, τὸ προφοίβασμα ἀπολύοντες. Simili ratione fati saevam necessitatem Lysandri, Philippi, Daphidae interitus inlustrat cf. *a*) Plutarchus Vit. Lysandri XXIX 5 sqq. p. 450 BC ἐνταῦθα δὴ τῆς στρατιᾶς καταυλισαμένης λέγεταί τινα τῶν Φωκέων ἑτέρῳ μὴ παρατυχόντι τὸν ἀγῶνα διηγούμενον εἰπεῖν, ὡς οἱ πολέμιοι προσπέσοιεν αὐτοῖς τοῦ Λυσάνδρου τὸν Ὁπλίτην ἤδη διαβεβηκότος. Θαυμάσαντα δὲ Σπαρτιάτην ἄνδρα τοῦ Λυσάνδρου φίλον ἐρέσθαι, τίνα λέγοι τὸν Ὁπλίτην· οὐ γὰρ εἰδέναι τοὔνομα. Καὶ μὴν ἐκεῖ γε' φάναι 'τοὺς πρώτους ἡμῶν οἱ πολέμιοι κατέβαλον· τὸ γὰρ παρὰ τὴν πόλιν ῥεῖθρον Ὁπλίτην καλοῦσιν'. Ἀκούσαντα δὲ τὸν Σπαρτιάτην ἐκδακρῦσαι καὶ εἰπεῖν, ὡς ἄφευκτόν ἐστιν ἀνθρώπῳ τὸ πεπρωμένον. Ἦν γάρ, ὡς ἔοικε, τῷ Λυσάνδρῳ δεδομένος χρησμὸς οὕτως ἔχων.

Ὁπλίτην κελάδοντα φυλάξασθαί σε κελεύω
γῆς τε δράκονθ' υἱὸν δόλιον κατόπισθεν ἰόντα.

Τινὲς δὲ τὸν Ὁπλίτην οὐ πρὸς Ἁλιάρτῳ ῥεῖν λέγουσιν, ἀλλὰ πρὸς Κορώνειαν χειμάῤῥουν εἶναι τῷ Φιλάρῳ ποταμῷ συμφερόμενον παρὰ τὴν πόλιν, ὃν πάλαι μὲν Ὁπλίαν, νῦν δὲ Ἰσόμαντον προσαγορεύουσιν. Ὁ δὲ ἀποκτείνας τὸν Λύσανδρον Ἁλιάρτιος ἀνὴρ ὄνομα Νεόχωρος ἐπίσημον εἶχε τῆς ἀσπίδος δράκοντα· καὶ τοῦτο σημαίνειν ὁ χρησμὸς εἰκάζετο cl. de Pythiae oraculis 27 (Mor.) p. 408 B Λύσανδρος δὲ καὶ παντάπασιν ἀγνοήσας τὸν Ἀρχελίδην λόφον καὶ Ἀλώπεκον προσαγορευόμενον καὶ τὸν Ὁπλίτην ποταμὸν γῆς τε δράκονθ' υἱὸν δόλιον κατόπισθεν ἰόντα μάχῃ κρατηθεὶς ἔπεσεν ἐν τοῖς τόποις ἐκείνοις ὑπὸ Νεοχώρου Ἁλιαρτίου ἀνδρὸς ἀσπίδα φοροῦντος ἐπίσημον ὄφιν ἔχουσαν, ubi genuinam scripturam Ὀρχαλίδην et Ἀλώπεκον recte Bernardakis repo-

---

[1]) Cf. p. 53, 17 sqq. ἐν δ' εὐρυτάτῃ στρατοπεδευσάμενος φάραγγι, καθ' ἣν ὄρη διχόρυμβα ἐπὶ πολὺ τοῦ ἀέρος ἀνέβαινον, ἅπερ λόγος αἱρεῖ Κοράκων νοσσιὰς κικλήσκεσθαι, εἰς κυνηγέσιον ἔξεισι.

suit ex Vita Lysandri XXIX 10 sq. p. 450 D λέγεται δὲ καὶ Θηβαίοις ὑπὸ τὸν Πελοποννησιακὸν πόλεμον ἐν Ἰσμηνίῳ γενέσθαι χρησμὸν ἅμα τήν τε πρὸς Δηλίῳ μάχην καὶ τὴν πρὸς Ἁλιάρτῳ ταύτην ἐκείνης ὕστερον ἔτει τριακοστῷ γενομένην προμηνύοντα. Ἦν δὲ τοιοῦτος·

ἐσχατιὰν πεφύλαξο λύκου [1]) καμάκεσσι δοκεύων
καὶ λόφον Ὀρχαλίδην, ὃν ἀλώπηξ οὔποτε λείπει.

Τὸν μὲν οὖν περὶ Δήλιον τόπον ἐσχατιὰν προςεῖπε, καθ' ἣν ἡ Βοιωτία τῇ Ἀττικῇ σύνορός ἐστιν, Ὀρχαλίδην δὲ λόφον, ὃν νῦν Ἀλώπεκον καλοῦσιν, ἐν τοῖς πρὸς τὸν Ἑλικῶνα μέρεσι τοῦ Ἁλιάρτου κείμενον, — *b*) Aelianus V. H. III 45 Φιλίππῳ φασὶ χρηστήριον ἐκπεσεῖν ἐν Βοιωτοῖς ἐν Τροφωνίου φυλάττεσθαι δεῖν τὸ ἍΡΜΑ. Ἐκεῖνον οὖν δέει τοῦ χρησμοῦ λόγος ἔχει μηδέποτε ἀναβῆναι ἅρμα. Διπλοῦς οὖν ἐπὶ τούτοις ὑποῤῥεῖ (διαῤῥεῖ non recte Hercher) λόγος. Οἱ μὲν γάρ φασι (ὁ μὲν γάρ φησι Hercher) τὸ τοῦ Παυσανίου ξίφος, ᾧ τὸν Φίλιππον διεχρήσατο, ἅρμα ἔχειν ἐπὶ τῆς λαβῆς διαγεγλυμμένον ἐλεφάντινον· ὁ δὲ ἕτερος (adde: λόγος) τὴν Θηβαϊκὴν περιελθόντα λίμνην τὴν καλουμένην Ἅρμα ἀποσφαγῆναι. Ὁ μὲν πρῶτος λόγος δημώδης, ὁ δὲ οὐκ εἰς πάντας ἐξεφοίτησεν, Gnomol. Paris. ed. Sternbach [2]) n. 23 φυλάττεσθαι τὸ ἍΡΜΑ χρησμὸς ἦν Φιλίππῳ· διὸ οὐδέποτε ἀνέβη εἰς ἅρμα. Τὸ δὲ ἐδήλου πόλιν Βοιωτικήν. Οἱ δέ φασιν, ὡς τὸ τοῦ Παυσανίου ξίφος, ᾧ διεχρήσατο τοῦτον, ἐπὶ τῆς γλυφῆς εἶχε γεγραμμένον ἐλεφάντινον ἅρμα, Valerius Maximus I 8 Ext. 9 eodem oraculo Macedonum rex Philippus admonitus, ut a quadrigae violentia salutem suam custodiret, toto regno disiungi currus iussit eumque locum in Boeotia qui Quadriga vocatur, semper vitavit. Nec tamen denuntiatum periculi genus effugit: nam Pausanias in capulo gladii, quo eum occidit, quadrigam habuit caelatam. Accedat Cicero de fato III 5 aut Philippus hasne in capulo quadrigulas vitare monebatur? quasi vero capulo sit occisus, — *c*) Hesychius Milesius 14 (Fragm. Histor. Gr. ed. Mueller vol. IV p. 160) Δαφίδας ὁ Τελμισσεὺς πᾶσιν ἐλοιδορεῖτο μηδὲ αὐτῶν φειδόμενος τῶν θεῶν· διὸ καὶ ἐχθρὸς ἦν Ἀττάλῳ τῷ βασιλεῖ Περγάμου. Οὗτος ἐλθὼν ποτε εἰς Πυθίαν ἔσκωπτεν εἰς τὸ μαντεῖον καὶ ἐπεγγελῶν ἠρώτα, εἰ τὸν ἵππον εὑρήσοι· ἔχρησε δὲ αὐτῷ εὑρήσειν ταχέως. Ἐκεῖνος δὲ διεθρύλλησε τοῦτο, ὡς οὐδὲ ἦν αὐτῷ ἵππος οὐδὲ ἀπώλετο. Ἀναχωρήσαντα δὲ συλλαβόμενος Ἄτταλος ἐκέλευσε κρημνισθῆναι. Ὁ δὲ τόπος, ἐν ᾧ τοῦτο ἐγένετο, ἐκαλεῖτο Ἵππος· καὶ ἔγνω πρὸς τῷ θανάτῳ μὴ ἐψεῦσθαι τὸ λόγιον, Suidas vol. I 1

---

[1]) L. λύκου, — minus recte Ed. Cougny Anthol. Gr. Append. VI 132 λύκους exhibet (Epigrammatum Anthol. ed. Didotian. vol. III p. 489).

[2]) „Rozprawy Wydziału filologicznego Akademii Umiejętności“ vol. XX (1893) p. 135 sqq.

p. 1182 sq. (Bernhardy) Δαφίδας Τελμισεύς, γραμματικὸς γεγραφὼς περὶ Ὁμήρου καὶ τῆς αὐτοῦ ποιήσεως, ὅτι ἐψεύσατο· Ἀθηναῖοι γὰρ οὐκ ἐστράτευσαν ἐπὶ Ἴλιον. Ἦν δὲ οὗτος λοιδορούμενος παντὶ καὶ μέχρις αὐτῶν μὴ φειδόμενος τῶν θεῶν. Καὶ Ἄτταλον μὲν τὸν βασιλέα Περγάμου διὰ τοῦτο ἔχειν αὐτῷ ἐπιβουλεύοντα. Εἰς δὲ τὴν Πυθίαν ἐλθόντα ποτὲ σκώπτειν εἰς τὸ μαντεῖον καὶ ἐπιγελῶντα ἐρέσθαι, εἰ τὸν ἵππον εὑρήσει· χρησθῆναι δὲ αὐτῷ εὑρήσειν ταχέως. Εἶτα ἐκεῖνον διαθρυλῆσαι τοῦτο, ὅτι μηδὲ ἦν αὐτῷ ἵππος μηδὲ ἀπώλετο. Ἀναχωρήσαντα δὲ συλλαβόμενος Ἄτταλος ἐπέταξε κατακρημνισθῆναι· ἐν ᾧ δὲ τόπῳ τοῦτο ἐγένετο, ἐκαλεῖτο Ἵππος ὁ τόπος. Καὶ ἔγνω πρὸς τῷ θανάτῳ μὴ ἐψεῦσθαι τὸ λόγιον. Οὕτως (l. οὗτος) οὖν ἐνυβρίσας κακῶς ἀπώλετο, Valerius Maximus I 8 Ext. 8 non invitus huic subnecto Daphidam, ne quis ignoret, quantum interfuerit cecinisse deorum laudes et numen obtrectasse. Hic cum eius studii esset, cuius professores sophistae vocantur, ineptae et mordacis opinationis Appollinem Delphis irridendi causa consuluit, an equum invenire posset, cum omnino nullum habuisset. Cuius ex oraculo reddita vox est inventurum equum, sed ut eo perturbatus periret. Inde cum iocabundus quasi delusa sacrarum sortium fide reverteretur, incidit in regem Attalum, saepenumero a se contumeliosis dictis absentem lacessitum eiusque iussu saxo, cui nomen erat Equi, praecipitatus ad deos usque cavillandos dementis animi iusta supplicia pependit. Adde Ciceronem de fato III 5 si Daphitae fatum fuit ex equo cadere atque ita perire, ex hocne equo, qui cum equus non esset, nomen habebat alienum? — Paulo aliter Strabo XIV 1, 39 p. 647 (Casaubon.) κεῖται δ' ἐν πεδίῳ πρὸς ὄρει καλουμένῳ Θώρακι ἡ πόλις, ἐφ' ᾧ σταυρωθῆναί φασι Δαφίταν τὸν γραμματικὸν λοιδορήσαντα τοὺς βασιλέας διὰ διστίχου·

πορφύρεοι μώλωπες, ἀποῤῥινήματα γάζης
Λυσιμάχου, Λυδῶν ἄρχετε καὶ Φρυγίης.

Καὶ λόγιον δ' ἐκπεσεῖν αὐτῷ λέγεται φυλάττεσθαι τὸν Θώρακα.

Ex fabulis Aesopiis inprimis huc facit C 264 [1]):

Υἱόν τις γέρων δειλὸς μονογενῆ ἔχων γενναῖον κυνηγεῖν ἐφιέμενον εἶδε τοῦτον καθ' ὕπνους ὑπὸ λέοντος ἀναλωθέντα· φοβηθεὶς δέ, μήπως ὁ ὄνειρος

[1]) Herodoti narrationem de Croesi filio (I 34—45) auctori nostro ante oculos obversatam esse perperam Corais statuit p. 175 n. 1; Herodoti vestigia premunt Diodorus Siculus IX 29, Lucianus Jupit. Confut. 12 (cum Scholiis), Scholiastae Dionis Chrysostomi LXV vol. II p. 708 (Reiske) et Aristidis XLVI vol. III p. 464 (Dindorf). — Valerius Maximus I 7 Ext. 4.

ἀληθεύσῃ, οἴκημα κάλλιστον καὶ μετέωρον κατεσκεύασε κἀκεῖσε τὸν υἱὸν εἰσαγαγὼν ἐφύλαττεν. Ἐζωγράφησε δὲ ἐν τῷ οἰκήματι πρὸς τέρψιν τοῦ υἱοῦ παντοῖα ζῷα, ἐν οἷς ἦν καὶ λέων. Ὁ δὲ ταῦτα ὁρῶν πλείονα λύπην εἶχε· καὶ δή ποτε πλησίον τοῦ λέοντος στὰς εἶπεν· ὦ κάκιστον θηρίον! διὰ σὲ καὶ τὸν ψευδῆ ὄνειρον τοῦ ἐμοῦ πατρὸς τῇδε τῇ οἰκίᾳ κατεκλείσθην ὡς ἐν φρουρᾷ· τί σοι ποιήσω; Καὶ εἰπὼν ἐπέβαλε τῷ τοίχῳ τὴν χεῖρα ἐκτυφλῶσαι τὸν λέοντα. Σκόλοψ δὲ τῷ δακτύλῳ αὐτοῦ ἐμπαρεὶς ὄγκωμα καὶ φλεγμονὴν μέχρι βουβῶνος εἰργάσατο· πυρετὸς δὲ ἐπιγενόμενος αὐτῷ θᾶττον τοῦ βίου μετέστησεν. Ὁ δὲ λέων καὶ οὕτως ἀνῄρηκε τὸν παῖδα μηδὲν τῷ τοῦ πατρὸς ὠφεληθέντα σοφίσματι.

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οὐδεὶς δύναται τὸ μέλλον ἐκφυγεῖν.

Quam fabellam non sine varietate scripturae repetunt Bodl. 135 et F 187: γέρων δειλὸς μονογενῆ ἔχων] μονογενῆ γέρων δειλὸς ἔχων B, ἔχων μονογενῆ (μονογεννῆ Cod.) F ‖ γενναῖον] ἀνδρεῖον F | κυνηγεῖν] καὶ κυνηγεῖν B | κυνηγεῖν ἐφιέμενον om. F | εἶδε (ἴδε C, corr. Halmius n. 349ª) τοῦτον καθ' ὕπνους] τοῦτον καθ' ὕπνους εἶδεν B, εἶδε καθ' ὕπνον F | ἀναλωθέντα] θανατωθέντα B, θνῄσκειν F | φοβηθεὶς δὲ] ὁ δὲ φοβηθεὶς F | μήπως ὁ ὄνειρος ἀληθεύσῃ (ἀληθεύει ante Corain)] μὴ ὕπαρ γένηται καὶ ἀληθεύσῃ (ἀληθεύσει Cod.) ὄνειρος (l. ὁ ὄνειρος) B, μήπως τοὔναρ ἀληθεύσῃ F | κάλλιστον καὶ μετέωρον] τερπνὸν F | κατεσκεύασε κἀκεῖσε] κατασκευάσας ἐκεῖσε B ‖ εἰσαγαγὼν ἐφύλαττεν] παρεφύλαττε B ‖ ἐν τῷ οἰκήματι — ζῷα] καὶ τὸ οἴκημα πρὸς τέρψιν παντοίοις ζῴοις B ‖ κατεσκεύασε — ζῷα] κατασκευάσας ἐζωγράφησε τοὺς τοίχους πρὸς τὴν τέρψιν ζῴοις παντοίοις αὐτοὺς ἐγκαλλωπίσας F ‖ ἦν καὶ λέων] καὶ λέων ἐμορφώθη B, καὶ λέων ἀνεμορφώθη F, ubi ἀπεμορφώθη scripsit Halmius n. 349ᵇ, equidem simplex verbum reponendum esse censeo ‖ ὁρῶν] μᾶλλον ὁρῶν B ‖ πλείονα λύπην] πλείω τὴν λύπην B ‖ ὁ δὲ — εἶχε] ὡς οὖν ἑώρα τὸν λέοντα ὁ νέος, μᾶλλον κατεῖχεν αὐτὸν ἡ λύπη πλέον F ‖ εἶπεν] εἶπε (post θηρίον) B ‖ καὶ—εἶπεν] ὃς ἱστάμενος τοῦ λέοντος πλησίον τούτῳ προςεῖπεν F ‖ ψευδῆ] ψεύστην B ‖ τῇδε — φρουρᾷ] γυναικείᾳ ἐνεκλείσθην φρουρᾷ B ‖ διὰ σέ—φρουρᾷ] διὰ τὸ ὄναρ τὸ ψευδὲς τοῦ πατρός μου, ὃ αὐτὸς ἑώρακεν ἐν ὕπνοις μάτην, προςκατεκλείσθην (προςκατεκλείθη Cod., προςκατεκλείθην Furia; corr. C. E. Chr. Schneider) φρουρᾷ τῇ γυναικείᾳ F ‖ τί σοι ποιήσω] ἆ! τί δέ σοι ἐγὼ ἄρτι ποιήσω F ‖ τῷ τοίχῳ τὴν χεῖρα] τὴν χεῖρα τῷ τοίχῳ B | ἐκτυφλῶσαι] ὡς τυφλώσων B recte | καὶ—λέοντα] ταῦτα αὐτοῦ τῷ λέοντι εἰπόντος ὑπεξέτεινε τὴν χεῖρα ὑπὸ βάτου τοῦ λαβεῖν κλάδους καὶ τὸν λέοντα καῦσαι F, ubi ἐπεξέτεινε τὴν χεῖρα ἐπὶ βάτον citra necessitatem cum Corai (p. 394 n. 1) edidit Halmius neque C. E. Chr. Schneideri emendatione ὑπὸ βάτον opus est. De extrema voce haec adnotat Furia p. 64: „verbum hoc in Codice adeo vetustate intercidit, ut vix aliqua satis distincta lectio adstrui possit. Incertus haereo, an legendum sit κλάσαι, κροῦσαι, τύψαι vel quid simile, quod sermo quidem postulare videtur"; κροῦσαι Corai praeeunte (p. 394 n. 2) recte scripsit Halmius ‖ τῷ δακτύλῳ αὐτοῦ

ἐμπαρείς] τῷ ὄνυχι αὐτοῦ ὑπεισδύς B ‖ ὄγκωμα] ἄλγημα ὀξὺ B ‖ βουβῶνος] βουβώνων (βοβόνων Cod.) B ‖ σκόλοψ δὲ — εἰργάσατο] εὐθὺς δὲ σκόλοψ προσκρούσας τῷ δακτύλῳ ἄλγη μὲν μέγα ἐφλέγμανε τὸν νέον καὶ παραυτίκα ἄλαλος κατεκλίθη F, ubi falso ἄλγει μεγάλῳ coniecit Corais (p. 394 n. 3) adsentiente Halmio. Omnino corrigendum: ἄλγημα μέγα. Nominativi absoluti usum vel enuntiatum, quod in F sequitur, inlustrat; addatur C. E. Chr. Schneideri nota ad F 1 ‖ πυρετὸς δὲ ἐπιγενόμενος αὐτῷ] πυρετός τε ἐπὶ τούτοις ἀνάψας τὸν παῖδα B, ὑπανάψας δὲ πυρετὸς ἐξαπίνης F ‖ τοῦ βίου μετέστησεν] τοῦ βίου ὑπεξήγαγεν B, ὁ νέος ἐξέλιπε τὸν βίον F ‖ καὶ οὕτως ἀνῄρηκε τὸν παῖδα] καίπερ γραπτὸς ὢν τοῦτον ἀνῃρήκει B ‖ ὁ δὲ — σοφίσματι om. F ‖ ὁ μῦθος — ἐκφυγεῖν] ὅτι, ἃ δεῖ (δὴ Knoellius ex Hartelii coniectura; mihi glossema videtur prave inrepsisse) μέλλει συμβαίνειν τινί, ἐγκαρτερείτω τούτοις γενναίως καὶ μὴ σοφίζεσθαι (l. σοφιζέσθω)· οὐ γὰρ ἐκφεύξεται B, ubi Codicis scripturam ἐκφεύξηται in ἐκφεύξεται, non in ἐκφευξεῖται (cum Knoellio) mutavi; ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι, ἃ μέλλει συμβῆναί τινι, τούτοις γενναίως ἐγκαρτερείτω καὶ μὴ κατασοφιζέτω· οὐ γὰρ ἐκφεύξει F, quo loco formae κατασοφιζέτω [1]) et ἐκφεύξει ipsi auctori imputandae sunt.

Ex his exemplis epimythium fabulae nostrae adsumi potest. Accedit Babrii affabulatio in Etym. Magn. s. v. πεπρωμένον p. 662, 26 sq.: ἅ σοι πέπρωται, ταῦθα τλῆθι γενναίως | καὶ μὴ σοφίζου· τὸ χρεὼν γὰρ οὐ φεύξῃ [2]).

Ipsa sententia de inevitabili fati necessitate, quam neque homines neque dii immortales subterfugere possint, trita est et a scriptoribus utriusque linguae frequentissime celebratur. Praeivit Homerus Il. 6, 488 sq.:

μοῖραν δ' οὔτινά φημι πεφυγμένον ἔμμεναι ἀνδρῶν
οὐ κακὸν οὐδὲ μὲν ἐσθλόν, ἐπὴν τὰ πρῶτα γένηται,

12, 326 sq.: ἔμπης γὰρ Κῆρες ἐφεστᾶσιν θανάτοιο
μυρίαι, ἃς οὐκ ἔστι φυγεῖν βροτὸν οὐδ' ὑπαλύξαι,

Od. 3, 236 sqq.: ἀλλ' ἤτοι θάνατον μὲν ὁμοίϊον οὐδὲ θεοί περ
καὶ φίλῳ ἀνδρὶ δύνανται ἀλαλκέμεν, ὁππότε κεν δὴ

---

[1]) Verbum κατασοφίζεσθαι adgnoscit F 156 (M 176, A 173, C 47) ὁ λόγος πρὸς ἄνδρα φιλάργυρον τὸν καὶ θεοὺς διὰ πλεονεξίαν κατασοφιζόμενον. Adde M 65 ἡ αὐτὴ [ἡ] ἀσέβεια τῆς ἐπιορκίας, κἂν αὐτήν τις κατασοφίζηται (κατασκευάζηται falso A 66), Ignat. 3 (sive C 151[c]) φανερὸν ἁμάρτημα μὴ σοφίζεσθαι. Ceterum nostro loco praeter Bodl. 135 deponens exhibet Babrius fr. 135 (Lachmann), unde κατασοφιζέσθω reposuit Corais p. 394 n. 5 Halmium adstipulatorem nactus.

[2]) Duo eiusdem fabulae versus supersunt apud Suidam s. v. βουκολήσας vol. I 1 p. 1016, 3 sq. Bernh (fr. 135 Lachm., 142 Gitlb.) χὤπως ἔχῃ τι βουκόλημα τῆς λύπης, ἀνέθηκε τοίχοις ποικίλας γραφὰς ζῴων. Ex Suida Scholia ad Aristophanis Pac. 153 interpolavit Aldus

μοῖρ' ὀλοὴ καθέλῃσι τανηλεγέος θανάτοιο,
24, 29: μοῖρ' ὀλοή, τὴν οὔτις ἀλεύεται, ὅς γε γένηται.

Ex primo loco Eustathius Thessalonicensis p. 657, 29 sq. manasse putat oraculum ab Aeliano in libello περὶ προνοίας laudatum (fr. 20 Hercher ed. Didot., fr. 17 ed. Teubner.):

μοῖραν μὲν θνητοῖσιν ἀμήχανον ἐξαλέασθαι,
ἥν ἐπὶ γεινομένοισι πατὴρ Ζεὺς ἐγγυάλιξεν,

ex Il. 12, 326 sq. Plutarchus de vita et poesi Homeri 157 p. 146 sq. (Duebner) censet sua delibasse Aeschylum fr. 362 (Nauck):

ἀλλ' οὔτε πολλὰ τραύματ' ἐν στέρνοις λαβὼν
θνήσκει τις, εἰ μὴ τέρμα συντρέχοι βίου,
οὔτ' ἐν στέγῃ τις ἥμενος παρ' ἑστίᾳ
φεύγει τι μᾶλλον τὸν πεπρωμένον μόρον

et Demosthenem XVIII 97 p. 258, 20 sqq. R.: πέρας μὲν γὰρ ἅπασιν ἀνθρώποις ἐστὶν τοῦ βίου θάνατος, κἂν ἐν οἰκίσκῳ τις αὑτὸν καθείρξας τηρῇ· δεῖ δὲ τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας ἐγχειρεῖν μὲν ἅπασιν ἀεὶ τοῖς καλοῖς τὴν ἀγαθὴν προβαλλομένους ἐλπίδα, φέρειν δ', ἂν ὁ θεὸς διδῷ, γενναίως.

Versus Homericos (inprimis Il. 6, 488 et. Apol. 8 et Philopatr. 14) respicit Lucianus Iupit. Confut. 1 ἀνέγνως γὰρ δῆλον ὅτι καὶ σὺ τὰ Ὁμήρου καὶ Ἡσιόδου ποιήματα· εἰπὲ οὖν μοι, εἰ ἀληθῆ ἐστι τὰ περὶ τῆς Εἱμαρμένης καὶ τῶν Μοιρῶν, ἃ ἐκεῖνοι ἐρραψῳδήκασιν, ἄφυκτα εἶναι, ὁπόσα ἂν αὗται ἐπινήσωσι γεινομένῳ ἑκάστῳ, ubi significari videtur praeterea Hesiodi Theog. 904 sqq.:

Μοίρας θ', ᾗς πλείστην τιμὴν πόρε μητίετα Ζεύς,
Κλωθώ τε Λάχεσίν τε καὶ Ἄτροπον, αἵτε διδοῦσι
θνητοῖς ἀνθρώποισιν ἔχειν ἀγαθόν τε κακόν τε

cf. etiam 217 sqq. Καὶ Μοίρας καὶ Κῆρας ἐγείνατο νηλεοποίνους,
Κλωθώ τε Λάχεσίν τε καὶ Ἄτροπον, αἵτε βροτοῖσι
γεινομένοισι διδοῦσιν ἔχειν ἀγαθόν τε κακόν τε,
αἵτ' ἀνδρῶν τε θεῶν τε παραιβασίας ἐφέπουσιν,
οὐδέ ποτε λήγουσι θεαὶ δεινοῖο χόλοιο,
πρίν γ' ἀπὸ τῷ δώωσι κακὴν ὄπιν, ὅστις ἁμάρτῃ.

Ex posterioribus ad Il. 6, 488 sq. manifesto spectat Simonides fr. 39, 3 sqq. (Bergk):

ὁ δ' ἄφυκτος [1]) ὁμῶς ἐπικρέμαται θάνατος·

---

[1]) Tartarum idem poeta fr. 124[b] (ex Anth. Pal. VII 507, 3 sq.) adpellat: τὸν ἄφυκτον — ξανθῆς Φερσεφόνης θάλαμον.

κείνου γὰρ ἴσον λάχον μέρος οἵ τ' ἀγαθοὶ
ὅςτις τε κακός,

aliis pigmentis usi sunt:

Callinus fr. 1, 12 sq. (Bergk):

οὐ γάρ κως θάνατόν γε φυγεῖν εἱμαρμένον ἐστὶν
ἀνδρί,

Solo fr. 24, 9 (sive Theognis 727):

οὐδ' ἂν ἄποινα διδοὺς θάνατον φύγοι,

Theognis 817:

Κύρν', ἔμπης ὅ τι μοῖρα παθεῖν, οὐκ ἔσθ' ὑπαλύξαι,

Pindarus Pyth. XII 30:

τό γε μόρσιμον οὐ παρφυκτόν,

Aeschylus Prom. 518 (de Iove):

οὔκουν ἂν ἐκφύγοι γε τὴν πεπρωμένην,

Sept. 281:

οὐ γάρ τι μᾶλλον μὴ φύγῃς τὸ μόρσιμον,

Sophocles Antig. 951 sqq.:

ἀλλ' ἁ μοιριδία τις δύνασις δεινά·
οὔτ' ἄν νιν ὄλβος οὔτ' Ἄρης οὐ πύργος [1]) οὐχ ἁλίκτυποι
κελαιναὶ νᾶες ἐκφύγοιεν,

ibid. 1337 sq.:

πεπρωμένης
οὐκ ἔστι θνητοῖς συμφορᾶς ἀπαλλαγή,

fr. 865, 3 sq.:

ὅταν δ' ὁ καιρὸς τοῦ θανεῖν ἐλθὼν τύχῃ,
οὐδ' ἂν πρὸς αὐλὰς Ζηνὸς ἐκφύγοι μολών,

Euripides Heracl. 615:

μόρσιμα δ' οὔτι φυγεῖν θέμις,

Hippol. 1256:

οὐδ' ἔστι μοίρας τοῦ χρεών τ' ἀπαλλαγή,

---

[1]) Etiam apud Pindarum fr. 232 τὸ πεπρωμένον οὐ πῦρ, οὐ σιδάρεον σχήσει τεῖχος in voce πῦρ equidem πύργος (πύργωμ') delitescere statuo.

Philemo fr. 115 (Kock):

ὃ δεῖ παθεῖν σε, μηδαμοῦ σκέψῃ φυγεῖν·
οὐ γὰρ δυνήσῃ διαφυγεῖν, ὅ σε δεῖ παθεῖν·
τὸ πεπρωμένον γὰρ οὐ μόνον τοῖσιν βροτοῖς
ἄφευκτόν ἐστιν, ἀλλὰ καὶ κατ' οὐρανόν,

Phanocles apud Clement. Alexandr. Strom. VI p. 750 Pott.:

ἀλλὰ τὸ Μοιράων νῆμ' ἄλλυτον, οὐδέ πή ἐστιν
ἐκφυγέειν, ὁπόσοι γῆν ἐπιφερβόμεθα,

Theocritus Id. XXIV 68 sq.:

οὐκ ἔστιν ἀλύξαι
ἀνθρώποις, ὅ τι Μοῖρα κατὰ κλωστῆρος ἐπείγει,

Apollonius Rhodius Argon. I 1035 sq.:

μοῖραν ἀνέπλησεν· τὴν γὰρ θέμις οὔποτ' ἀλύξαι
θνητοῖσιν,

IV 1504:

οὐ γάρ τις ἀποτροπίη θανάτοιο, —

Herodotus I 91 (est Pythiae oraculum, quod ex Herodoto repetit Anth. Pal. XIV 80) τὴν πεπρωμένην μοῖραν ἀδύνατά ἐστι ἀποφυγέειν καὶ θεῷ, III 65 ἐν τῇ γὰρ ἀνθρωπηίῃ φύσι οὐκ ἐνῆν ἄρα τὸ μέλλον γίνεσθαι ἀποτρέπειν, IX 16 ὅ τι δεῖ γενέσθαι ἐκ τοῦ θεοῦ, ἀμήχανον ἀποτρέψαι ἀνθρώπῳ, Plato Gorg. p. 512 E (quem exscripsit M. Antoninus VII 46) πιστεύσαντα ταῖς γυναιξίν, ὅτι τὴν εἱμαρμένην οὐδ' ἂν εἷς ἐκφύγοι, Aristoteles apud Stobaeum Flor. CVIII 22 ἄφυκτον γὰρ τὸ τῆς πεπρωμένης ἐστὶ κακόν (unde fortasse extricandus est senarius: ἄφυκτόν ἐστι τῆς πεπρωμένης κακόν), Josephus Flavius Bell. Iud. VI 5, 4 ἀλλὰ γὰρ οὐ δυνατὸν ἀνθρώποις τὸ χρεὼν διαφυγεῖν οὐδὲ προορωμένοις, Diogenianus Epicureus apud Eusebium Praep. Evang. VI 8 p. 263 A τίς γὰρ ἂν δύναιτο τὰ κατ' ἀνάγκην παντὶ ζῴῳ συγκυροῦντα διαφυγεῖν; Plutarchus Vit Caesar. LXIII 1 p. 737 B ἀλλ' ἔοικεν οὐχ οὕτως ἀπροσδόκητον ὡς ἄφυκτον[1]) εἶναι τὸ πεπρωμένον, Con-

[1]) Volgatam scripturam ἀφύλακτον correxi cf. Vit. Camilli IV 4 p. 130 F καὶ μαθὼν ἄρα τὸ πεπρωμένον ὡς ἄφυκτον εἴη, Pyrrhi XXX 2 p. 403 B τὸ δὲ χρεὼν ἦν ἄφυκτον, Lysandri XXIX 7 p. 450 καὶ εἰπεῖν ὡς ἄφευκτόν ἐστιν ἀνθρώπῳ τὸ πεπρωμένον, quo loco pro ἄφευκτον equidem ἄφυκτον scripserim, qua forma Plutarchus utitur praeterea Vit Marii XXIX 4 p. 422 C, XLVI 7 p. 433 D, Crassi XVIII 3 p. 554 B, XXVII 4 p. 560 E, Pompei LXXVIII 2 p. 660 F, Demosthenis XXXI 2 p. 860 E, Antonii XXVII 2 p. 927 E, Consol. ad Apollon. 11 (Mor.) p. 107 B, Quaest. Conviv. I n. I 4, 5 p. 614 D, Compar. Aristophanis et Menandri III 3 p. 854 B cf. Eustathius

sol. ad Apollon. 31 (Mor.) p. 117 E πρὸς πάντας δὴ τοὺς θανάτους ἐλαφρῶς ἑκτέον εἰδότας, ὅτι τὴν μοῖραν οὐκ ἔστιν ἐκφυγεῖν, idem ἐκ τοῦ εἰ ἡ τῶν μελλόντων πρόγνωσις ὠφέλιμος in Stobaei Anthol. I 5, 19 (vol. I p. 81, 24 sqq. Wachsmuth = fr. XV 2 p. 37, 17 sqq. Duebner) διὰ τοῦτο τὴν εἱμαρμένην καὶ Ἀδράστειαν καλοῦσιν, ὅτι πέρας ταῖς αἰτίαις ἠναγκασμένον ἐπιτίθησιν ἀνέκφευκτος οὖσα καὶ ἀναπόδραστος [1]), Alciphro Epist. I 25, 1 sq. ζῆν μὲν γὰρ καὶ τεθνάναι μεμοίραται πᾶσιν ἡμῖν καὶ οὐκ ἔστι τὸ χρεὼν φυγεῖν, κἂν ἐν οἰκίσκῳ τις αὑτὸν καθείρξας τηρῇ· [2]) ἐνεργὸς γὰρ ἡ εἱμαρμένη καὶ τὸ πεπρωμένον ἄφυκτον, Heliodorus Aethiop. II 24 τοὺς γὰρ Μοιρῶν ἀτρέπτους ὅρους προϊδεῖν μὲν δυνατόν, ἐκφεύγειν δ' οὐκ ἐφικτόν, Hermes Trismegistus apud Stobaeum Anthol. I 5, 20 (vol. I p. 82, 7 sq.) οὔτε γὰρ εἱμαρμένην φυγεῖν τις δύναται οὔτε φυλάξαι ἑαυτὸν ἀπὸ τῆς τούτων δεινότητος [3]), Isidorus Pelusiota Epist. II n. 77 τὸ χρεὼν οὐδὲ προμηνυόμενον διαφυγεῖν οἷόν τε, Auctor vitae Aesopi 21 p. 53, 11 sqq. (Westermann) ὁ δὲ Αἴσωπος οὐχ εὑρὼν μηχανὴν τῆς πονηρᾶς τύχης, ὡς θνητὸς ὢν (adde: οὐ)

---

Thessalonicensis ad Homeri Od. 1, 18 p. 1385, 13 οὕτω καὶ τὸ ἄφευκτον ἄφυκτον λέγεται. — Eiusdem inconstantiae alterum exemplum in formis φεύξιμος (de superstit 4 p. 166 E) et (κατα)φύξιμος (Quaest. Rom. 111 p. 290 C, Praec. ger. reip. XXXI 7 p. 823) occurrit. Diphthongum praebent φευκτὸς (Consol. ad Apollon 31 p. 117 D, de Stoic. repugn. XV 7 p. 1040 F, XVIII 6 et 7 p. 1042 D ter, de commun. not. IV 1 p. 1060 C, XI 5 p. 1063 E, XXIV 2 p. 1070 C), ἀνέκφευκτος (de superstit 4 p. 166 E), διάφευξις (Vit. Tib. Gracchi V 2 p. 826 B, de solert. anim. XXVI 2 p. 977 E; — codicum deteriorum lectio ἀπόφευξιν pro ἀπόφασιν respuenda est de adul et amico 22 p. 63 E) cf. omnino Lobeckius ad Phrynich. p. 726 sq. — Ad memoriam ἀφύλακτον conroborandam nihil valet Plutarchus de superst. 4 p. 167 A οὕτως ἡ κακοδαίμων δεισιδαιμονία, καὶ ὃ τῷ μὴ παθεῖν ἐκπέφευγεν, ἀφύλακτον τῷ προσδοκᾶν αὐτῇ πεποίηκε, siquidem Duebner, cuius editio semper ad manum est, cum Wyttenbachio genuinum textum οὕτως ἡ κακοδαίμων δεισιδαιμονία τῇ περιττῇ πρὸς ἅπαν τὸ δοκοῦν δεινὸν εὐλαβείᾳ λανθάνει ἑαυτὴν ὑποβάλλουσα παντοίοις δεινοῖς oblitteravit.

[1]) Cf. Aristoteles de mundo 7 p. 401ᵇ 13 Ἀδράστειαν δὲ ἀναπόδραστον αἰτίαν οὖσαν κατὰ φύσιν, Arius Didymus fr. 30 Diels (Doxogr. Gr. p. 465, 2 sq.) Ἀδράστειαν δέ, ὅτι οὐδὲν ἔστιν αὐτὸν ἀποδιδράσκειν, Alexander de fato 2 ὅσοι μὲν γὰρ αὐτῶν πάντα καθ' εἱμαρμένην γίνεσθαι λέγουσιν, τὴν εἱμαρμένην ὑπολαμβάνουσιν ἀπαράβατόν τινα αἰτίαν εἶναι καὶ ἀναπόδραστον, de anima p. 134 (Orelli) ποτὲ μὲν γὰρ ἀπαράβατόν τι καὶ ἀναπόδραστον τὴν εἱμαρμένην τίθενται, codex Havniensis 1971 apud Gaisfordum in not. ad Etymol. Magn. p. 1873: τὴν δὲ αὐτὴν εἱμαρμένην ἔλεγον καὶ Ἀδράστειαν διὰ τὸ μὴ ἀποδιδράσκειν πάντα τὰ προορισθέντα.

[2]) Videlicet auctor in usum suum convertit Demosthenicae σεμνότητος exemplum (cf. Philostratus Vit. Sophist. I 17, 2 et Maximus Planudes Rhet. Gr. vol. V p. 490, 23 sqq. Walz cll. Hermogene ibid. vol. III p. 225, 13 sq. et Aristide ibid. vol. IX p. 343, 8 sq.), quod quidem ex Homeri Il. 6, 488 repetit Clemens Alexandrinus Strom. VI p. 750 Pott.

[3]) Cf. ibid. I 5, 17 (p. 80, 8 sq.) εἱμαρμένη δὲ αἰτία ἐστὶ τῆς τῶν ἄστρων διαθέσεως· οὗτος νόμος ἄφυκτος, καθ' ὃν πάντα τέτακται.

δυνήσεται τὸ μέλλον ἐκφυγεῖν, ἐπένθει, Apostolius XVI 80 τὸ μέλλον οὐδεὶς ἐκφύγοι. — Ex scriptoribus Latinis huc pertinent Lucretius III 1079 nec devitari letum pote, Horatius Sat. II 6, 94 sq. neque ulla est | aut magno aut parvo leti fuga [1]), Manilius II 113 mitto, quod certum est et inevitabile fatum, — Curtius Rufus IV 6, 17 sed, ut opinor, inevitabile est fatum, X 1, 30 fatum, cuius inevitabilis sors est, adpetebat, Velleius Paterculus II 57, 3 sed profecto ineluctabilis [2]) fatorum vis, Tacitus Hist. I 18, 1 quae fato manent, quamvis significata non vitantur.

Casu et fortuito evenisse, ut epimythium in M 159 omitteretur, probat M 36, ubi ex A 30 affabulationem ἀτὰρ οὖν καὶ ἡμᾶς περιφεύγειν δεῖ τὴν φιλίαν, ὧν ἀμφίβολός ἐστιν ἡ διάθεσις subiunxi [3]). Similiter C 126 ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι δεῖ φεύγειν ἡμᾶς τὰν φιλίας, ὧν ἀμφίβολός ἐστιν ἡ διάθεσις et F 26 ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οὕτω δεῖ καὶ ἡμᾶς ἀποφεύγειν τὰς φιλίας, ὧν [4]) ἀμφίβολός ἐστιν ἡ ἀντίθεσις (l. διάθεσις), alia ratione Bodl. 145 ὅτι διγνώμους ἄνδρας τοὺς ποτὲ μὲν ἐπαινοῦντας, ποτὲ δὲ ψέγοντας ὁ μῦθος

---

[1]) Dispositio poetae Venusini est propria cf. Carm. I 4, 13 sq. pallida mors aequo pulsat pede pauperum tabernas | regumque turres, II 3, 21 sqq. divesne prisco natus ab Inacho | nil interest an pauper et infima | de gente sub divo moreris | victima nil miserantis Orci, 14, 9 sqq. conpescit unda, scilicet omnibus, | quicumque terrae munere vescimur, | enaviganda, sive reges | sive inopes erimus coloni, 18, 32 sqq. aequa tellus | pauperi recluditur | regumque pueris, III 1, 14 sq. aequa lege necessitas | sortitur insignes et imos, Epist. II 2, 178 sq. metit Orcus | grandia cum parvis non exorabilis auro. Auctor fortasse est Homerus Il. 6, 488 sq., ceterum cf. Pindarus Nem. VII 19 sqq. ἀφνεὸς πενιχρός τε θανάτου πόρον | σάμα νέονται, Trag. inc. fr. 504 (Nauck) ὦ Μοῖρα κεδνῶν καὶ κακῶν κυνηγέτι, Ps.-Phocylides 113 ξυνὸς χῶρος ἅπασι, πένησί τε καὶ βασιλεῦσιν.

[2]) Locutionem ineluctabile fatum ante Velleium adhibuit Vergilius Aen. VIII 334; ex Vergilio manavit etiam Anthol. Lat. I 45, 3.

[3]) Sylloges Augustanae exempla tractat Excursus II.

[4]) Vox ad pronomen τούτων pertinet secundum attractionis leges omissum cf. M 16 ὁ λόγος δηλοῖ μὴ δεῖν τούτων ἀσπενίζεσθαι τὰς φιλίας, οἳ. Pluralem numerum τὰς φιλίας habes etiam M 81 οὗτος ὁ λόγος ἁρμόσειεν ἂν πρὸς ἐκείνους, οἳ τὰς φιλίας μέχρις ἑστιάσεως μόνον παρέχονται, verbo ἡ διάθεσις non amicitiae, sed homines denotantur cf. M 163 ὁ δὲ τὰς μορφὰς ἀλλάξας τὴν διάθεσιν οὐ μετεβάλλετο, 192 ἀτὰρ οὖν καὶ ἡμᾶς προσήκει μὴ ἀπὸ τῆς ἀρχῆς, ἀπὸ δὲ τοῦ τέλους τὴν ἑκάστου δοκιμάζειν διάθεσιν, 198 τοῦ δὲ καρκίνου συνεχῶς αὐτὸν παραινοῦντος ἐξαπλοῦσθαι τὰ πρὸς αὐτὸν καὶ τὴν αὐτοῦ διάθεσιν μιμεῖσθαι, — Babrius 1 ὅτι δεῖ ἐκ τῶν προσφερομένων γινώσκειν τὴν ἑκάστου διάθεσιν, 121 πρὸς τοὺς πονηρᾷ διαθέσει χρηστότητα ἐπιδεικνυμένους ὁ λόγος εὔκαιρος, — C 104 (sive F 256) Ζεὺς πλάσας τοὺς ἀνθρώπους τὰς μὲν ἄλλας διαθέσεις (διανοίας A 108) αὐτοῖς ἐνέθηκε, 161 οὕτω τῶν πονηρῶν ἡ διάθεσις πολλάκις διὰ τοῦ σώματος φαίνεται, ubi ἀπὸ pro διὰ rectius exhibent M 38, A 37, F 17 cf. C 9 ἀλλ' ἀπὸ τοῦ (articulus typothetae incuria excidit in M 6) δέρματός γε φαίνῃ.

διαβάλλει, quo loco ὅτι non recte delendum esse significavit Knoellius cf. Bodl. 18 (C 156[a]) ὅτι τοὺς δι' ἀδυναμίαν τινὸς ἀποτυγχάνοντας πράγματος καὶ θέλοντας τοῦτο διὰ ψεύδους καλύψαι ἐλέγχει ὁ μῦθος, 25 ὅτι ἐν πόλει, ἧς ἔσχατοι καὶ ἄφρονες κρατοῦσιν ἀντὶ τῶν πρώτων καὶ φρονίμων, ἁρμόζει ὁ μῦθος, 53 (= C 192 sive F 277) ὅτι τοὺς ἀπαιδεύτους καὶ ἀμαθεῖς καὶ κομψολόγους ἰατροὺς ὁ παρὼν μῦθος (ἐλέγχει καὶ addit C) στηλιτεύει, 60 (=C 199 sive F 283) ὅτι τοὺς ἀχαρίστους καὶ κακούργους τοὺς ἀντὶ ἀγαθῶν κακὰ ἀντιδιδόντας ὁ μῦθος ἐλέγχει, 70 (= C 213[a] sive F 294) ὅτι τοὺς εὐτελεῖς (ἀκλεεῖς C)[1]) καὶ ἀδόξους καὶ μαχομένους τυράννοις (τυράννους falso F, non C) ἐλέγχει ὁ μῦθος (λόγος C), 79(= C 175[a] sive F 267) ὅτι τοὺ θρασεῖς καὶ δειλοὺς ὁ μῦθος (λόγος C) ἐλέγχει, τοὺς τολμηροὺς ἐν τοῖς λόγοις (μόνοις adiungit C) καὶ οὐκ ἐν τοῖς ἔργοις, 85 (= C 234[a] sive F 303) ὅτι (eiecit F, non C) ἅρπαγας καὶ πλεονέκτας λῃστὰς ἐν ἑνὶ[2]) πταίσματι κειμένους καὶ ἀλλήλους μεμφομένους ὁ μῦθος (λόγος C) ἐλέγχει, 56 ὅτι τοὺς ἀδίκῳ γνώμῃ τυραννοῦντας τοὺς πέλας ἐν παραβάσει νόμου ὁ μῦθος ἐλέγχει, 107 ὅτι τοὺς ἀπολλυμένους οἰκείᾳ ἀφροσύνῃ ὁ μῦθος ἐλέγχει, 109 ὅτι κτηνώδεις ἄνδρας τοὺς τετυφωμένους ἐπ' ἀλλοτρίαις δόξαις ὁ μῦθος ἐλέγχει, 111 ὅτι ὑποκριτὰς δολίους φιλεῖν λέγοντας ὁ μῦθος ἐλέγχει, 116 (= C 260[a] sive F 313) ὅτι (sustulit C, non F) ἄνδρας δολίους καὶ κακοὺς καὶ τοῖς δεσπόταις ἐπανισταμένους ὁ μῦθος (λόγος C) ἐλέγχει, 133 (= C 280[a]) ὅτι (καὶ addit C) τοὺς ἀχαρίστους καὶ βουλομένους τοὺς φίλους πλεονεκτεῖν ὁ μῦθος ἐλέγχει (ἐλέγχει ὁ λόγος C), 143 ὅτι τοὺς ὑπνώδεις καὶ ἀργοὺς καὶ ἐξ ἀλλοτρίων πόνων τρεφομένους ὁ μῦθος ἐλέγχει. Editor quidem undique ὅτι expulit, sed auctorem ille, non librarium correxit.

## CXCII.

Ὄνος καὶ ἡμίονος ἐν ταὐτῷ ἐβάδιζον. Καὶ δὴ ὄνος ὁρῶν ἀμφοῖν γόμους ἴσους ὄντας ἠγανάκτει καὶ ἐσχετλίαζεν, εἴγε διπλασίονος τροφῆς ἠξιωμένη ἡ ἡμίονος οὐδὲν περιττότερον βαστάζει. Μικρὸν δὲ αὐτῶν τῆς ὁδοῦ προϊόντων ὁ ὀνηλάτης ὁρῶν τὸν ὄνον ἀντέχειν μὴ δυνάμενον ἀφελόμενος αὐτοῦ τὸ φορτίον

[1]) Cf. Babrius 84 κατηγορίαν ὁ λόγος περιέχει ἀνδρὸς εὐτελοῦς καὶ λίαν ἀδυνάτου, ὑπολήψεις δὲ μεγάλας περὶ ἑαυτοῦ κεκτημένου et Syntipas 47 (sive C 213[d]) ὁ μῦθος οὗτος δηλοῖ, ὡς καὶ ἄνθρωποί τινες εὐτελεῖς ἅμα καὶ ἄφρονες προδήλως τυγχάνοντες δοκοῦσι καθ' ἑαυτοὺς τῶν ἐν τιμῇ τε καὶ συνέσει διαπρεπόντων ὑπάρχειν, ubi κρείττονες videtur in fine excidisse.

[2]) ἐνὶ B et C, ἐν ἑνὶ corr. Corais, ἔν τινι perperam Knoellius edidit cf. Babrius 105 ὁ μῦθος [δικαίως] προσφόρως ῥηθήσεται πρὸς ἄνδρας ἀδίκους ἀλλήλους αἰτιωμένους ἐπὶ τῷ αὐτῷ πταίσματι κειμένους, quo loco δικαίως cum Eberhardo inclusi. Minus recte δικαίως καὶ προσφόρως reponebat Boissonade, Gitlbauer falsisime δικαίοις scripsit.

τῇ ἡμιόνῳ ἐπέθηκεν. Ἔτι δὲ αὐτῶν πόῤῥω προβαινόντων ὁρῶν ἔτι μᾶλλον ἀποκάμνοντα πάλιν ἀπὸ τοῦ γόμου μετετίθει, μέχρι τὰ πάντα λαβὼν καὶ ἀφελόμενος ἀπ' αὐτοῦ τῇ ἡμιόνῳ ἐπέθηκε. Καὶ τότε ἐκεῖνος ἀποβλέψας εἰς αὐτὸν ἔφη· 'ἆρά σοι δίκαιος δοκῶ τῆς διπλῆς τροφῆς ἠξιωμένῃ';

Ἀτὰρ οὖν καὶ ἡμᾶς προσήκει μὴ ἀπὸ τῆς ἀρχῆς, ἀπὸ δὲ τοῦ τέλους τὴν ἑκάστου δοκιμάζειν διάθεσιν.

Aliud eiusdem narratiunculae exemplum adferre non possum; aliquatenus comparari possunt M 180, A 177, F 133, ubi asinus cum mula componitur, quae, postquam asino intolerabili sarcina presso auxilium detrectavit, mox et onus et pellem asini sub onere lapsi ferre coacta est. In qua fabula mulae equum substituunt Babrius 7, Bodl. 12, C 125 et p. 327 sq., F 24, bovem Plutarchus de sanit. praec. 25 (Mor.) p. 137 C.

In textu constituendo μετετίθει, non μετετίθη e Codicis memoria μετετέθη elicui, quemadmodum etiam n. 59 περιτιθείς in περιτιθεῖς mutare non dubitavi [1]). Fabulae exitum hoc modo interpretor: nunc tibi videor iustus erga mulam duplici cibo dignatam? Constructio δίκαιός τινι pro δίκαιος εἴς (περί, πρός) τινα a Graeci sermonis usu non abhorret [2]) neque ulla emendatione opus est, nisi τῇ pro τῆς rescribere malis.

## CXCIII.

Ὀρνιθοθήρας ὀψιαίτερον αὐτῷ ξένου παραγενομένου μὴ ἔχων, ὅ τι αὐτῷ παραθείη, ὥρμησεν ἐπὶ τὸν τιθασὸν πέρδικα καὶ τοῦτον θύειν ἔμελλε. Τοῦ δὲ αἰτιωμένου αὐτὸν ὡς ἀχάριστον, εἴγε πολλὰ ὠφελούμενος παρ' αὐτοῦ τοὺς ὁμοφύλους ἐκκαλουμένου καὶ παραδιδόντος αὐτὸς ἀναιρεῖν αὐτὸν μέλλει, ἔφη· 'ἀλλὰ διὰ τοῦτό σε μᾶλλον θύσω, εἰ μηδὲ τῶν ὁμοφύλων ἀπέχῃ'.

Ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι οἱ τοὺς οἰκείους προδιδόντες οὐ μόνον ὑπὸ τῶν ἀδικουμένων μισοῦνται, ἀλλὰ καὶ ὑπὸ τούτων, οἷς προδιδόασιν.

Similitudinem quandam refert C 164ᵃ: Πέρδικά τις θηρεύσας ἤμελλε σφάξαι, ἡ δὲ ἱκέτευε λέγουσα· 'ἔασόν με ζῆν <καὶ> ἀντ' ἐμοῦ πολλὰς πέρδικας ἐγώ σοι κυνηγήσω'. Ὁ δὲ εἶπεν· 'δι' αὐτὸ τοῦτο μᾶλλόν σε θύσω, ὅτι τοὺς συνήθεις καὶ φίλους σοι ἐνεδρεῦσαι θέλεις'.

---

[1]) Προστίθης A 61 et F 51, προςανατίθης C 82, — at cf. M 36 ἐξιεῖς. Recte autem M 69 pro διετέθησαν cum A 73 διετίθεσαν mihi scripsisse videor, ubi διετίθουν praebet C 85 (sive F 239) cf. ἐδίδου, ἀπεδίδου (M 53. 10) et ἐδίδοσαν (M 44 et ex coniectura 133).

[2]) Cf. Krueger, Griechische Sprachlehre I 48, 13, 2. Similiter in lingua Latina aequus cum dativo coniungitur. — Apud Homerum habes Il. 19, 181 sq. Ἀτρείδη, σὺ δ' ἔπειτα δικαιότερος καὶ ἐπ' ἄλλῳ | ἔσσεαι.

Ὅτι ὁ κατὰ φίλων αὐτοῦ δολίως μηχανὴν συντιθεὶς αὐτὸς ἐν ταῖς ἐνέδραις τῶν κινδύνων ἐμπεσεῖται.

Coraisianae fabulae fere gemellum exemplum praebet Bodl. 122, variant F 172 et Syntipas 26 (sive C 164b), cum apologi nostri introitu magis conspirat Babrius 124 (ex F 369):

Ὀρνιθοθήρᾳ φίλος ἐπῆλθεν ἐξαίφνης
μέλλοντι θύμβραν καὶ σέλινα δειπνήσειν·
ὁ δὲ κλωβὸς εἶχεν οὐδέν· οὐ γὰρ ἠγρεύκει.
Ὥρμησε δὴ πέρδικα ποικίλον θύσων,
ὃν ἡμερώσας εἶχεν εἰς τὸ θηρεύειν.
Ὁ δ' αὐτὸν οὕτως ἱκέτευε μὴ κτεῖναι·
'<φείδου>· τὸ λοιπὸν δικτύῳ τί ποιήσεις,
ὅταν κυνηγῇς; τίς δέ σοι συναθροίσει
εὐωπὸν ἀγέλην ὀρνέων φιλαλλήλων;
τίνος μελῳδοῦ πρὸς τὸν ἦχον ὑπνώσεις';
Ἀφῆκε τὸν πέρδικα καὶ γενειήτην
ἀλεκτορίσκον συλλαβεῖν ἐβουλήθη.
Ὁ δ' ἐκ πετεύρου κλαγγὸν εἶπε φωνήσας·
'πόθεν μαθήσῃ, πόσσον εἰς ἕω λείπει
τὸν ὡρόμαντιν ἀπολέσας με; πῶς γνώσῃ,
πότ' ἐννυχεύει χρυσότοξος Ὠρίων;
ἔργων δὲ τίς σε πρωϊνῶν ἀναμνήσει,
ὅτε δροσώδης ταρσός ἐστιν ὀρνίθων';
Κἀκεῖνος εἶπεν· 'οἶσθα χρησίμους ὥρας·
ὅμως δὲ δεῖ σχεῖν τὸν φίλον, τί δειπνήσει'.

Ὅτι τῷ ἀνδρὶ δουλεύειν ἐπιθυμίαις εἰθισμένῳ οὐδεὶς λόγος ἰσχυρὸς πρὸς τὸ μὴ πράττειν ἀεὶ τὰ καθ' ἡδονήν.

Quam fabulam occasione oblata explanare et emendare lubet:

V. 6 Rutherford κτείνειν pro κτεῖναι scripsit fortasse propter n. 53, 2 ζωγρεῖν ἐδεῖτο μηδὲ γραῦν ἀποκτείνειν. Attamen infinitivum aoristi ipse Babrius confirmat n. 95, 47 sq. πάλιν δὲ κερδοῦν ἱκέτευε φωνήσας | ἄλλον τιν' εὑρεῖν δεύτερον δόλον θήρης et 136, 3 sq. τέττιξ δὲ τοῦτον ἱκέτευε [1]) λιμώττων | δοῦναι τι καὐτῷ τῆς τροφῆς. — Accedant ex M haec exempla: n. 4 τῆς δὲ ἱκετευούσης αὐτὸν πρὸς τὸ παρὸν μὴ θοινηθῆναι αὐτήν, 25 τοῦτον ἱκέτευσε κατακρύψαι αὐτήν, — 13 ᾔτει δὲ τὸν

1) Dosithei Magistri codex Parisinus 6503 ἱκετήρευ exhibet, unde Gitlbauer violato metro ἱκέτευεν adsumpsit. Editor Londinensis ἱκέτευσε dedit (ἱκέτευσεν cod. Vossianus), sed usus poetae imperfectum commendat cf. n. 3, 5; 6, 5 et 13; 10, 8; 13, 3; 107, 3; 134, 14.

θεὸν ὁ ὄρνις τόπον αὐτῷ πρὸς νεοττοποιίαν ἀσφαλῆ παρασχεῖν, — 226 ταὼς ἠξίου αὐτὸν (non αὑτόν, — in A 216 Schneider non recte ἑαυτὸν supplevit) χειροτονῆσαι, — 14 ἡ δὲ μέλλουσα ἀναιρεῖσθαι ἐδέετο αὐτοῦ μεθεῖναι αὐτὴν (μαθεῖν αἰτοῦσα καὶ M, quod corrigendum ex A 4), 44 δεόμενοι βασιλέα αὐτοῖς παρασχεῖν. 127 <ὁ δὲ> αὐτοῦ ἐδεήθη πρὸς τὸ παρὸν μεθεῖναι αὐτόν, 145 τοῦ δὲ δεηθέντος μεθεῖναι αὐτόν, 196 τοῦ δὲ δεομένου μεθεῖναι αὐτόν [1]), — 15 παρεκάλει ἀναβολὴν αὐτῷ δοῦναι, 41 τοῦτον παρεκάλουν ἀλλάξαι αὐτοῖς τὸν ἄρχοντα, 89 παρεκάλει δοῦναί τι αὐτῷ, 180 παρεκάλει τὴν ἡμίονον μέρος τι τοῦ γόμου αὐτοῦ προςδέξασθαι, 224 παρεκάλει καταβῆναι, 225 παρεκάλει αὐτὸν ᾆσαι ἐν τῷ πότῳ. Quibus adiungi possunt n. 61 ἐδεήθη αὐτῶν, ὅπως ἐπιτρέψωσιν, 109 ἐδέετο, ὅπως αὐτῇ κέρατα προςνείμῃ, 114 ἐδέετο, ὅπως αὐτὸν ἀπολύσωσι, 160 τούτου ἐδέοντο, ὅπως ἰσχὺν παράσχηται, 169 ἐδεῖτο, ὅπως μὴ θύσῃ αὐτήν, — 31 παρεκάλει αὐτόν, ὅπως αὐτῷ σύνοικος γένηται. 51 παρεκάλει αὐτόν, ὅπως αὐτῷ διαλλαγῇ. — Alteram vero classem repraesentant n. 13 παρεκάλει μὴ ἀπάγειν αὐτοῦ τὸν ἱκέτην, — 115 καὶ τούτοις (τούτους praeter M offert A 122; recte C 101[b] sive F 285) ἠξίου συνδιαιτᾶσθαι [2]), denique n. 40 τούτους ἱκετεῦσαι, ὅπως μὴ χρησάμενοι τῇ τοῦ ἰξοῦ ἐνεργείᾳ συλλαμβάνωνται αὐτά, — quamquam ab auctoris nostri usu et coniunctio ὅπως cum coniunctivo praesentis copulata et vocis συλλαμβάνω forma media abhorrere videntur cf. *a*) praeter locos citatos n. 18 παραινέσαι αὐτῇ, ὅπως ἐκροφήσῃ τὴν θάλασσαν, 29 ἔτυπτε τὸ ὕδωρ, ὅπως οἱ ἰχθύες φεύγοντες ἀπροφυλάκτως τοῖς βρόχοις ἐμπέσωσι, 50 ηὔξατο τῇ Ἀφροδίτῃ, ὅπως αὐτὴν μεταμορφώσῃ εἰς γυναῖκα, 51 εἱστήκει παρατηρούμενος, ὅπως, ἂν ἐξίῃ, εὐθέως αὐτὸν πατάξῃ, 86 συνέθεντο, ὅπως εἰς μάχην ἀλλήλοις καταστῶσι καὶ τῷ νικῶντι ἥ τε τοῦ ὕδατος καὶ τῆς γῆς νομὴ γένηται (corr. ex A 91 et C 185 sive F 272; γίνηται perperam M), 90 ἓν δὲ τοῦτο εὔχεσθαι τοῖς θεοῖς, ὅπως χειμὼν γένηται (p. 26, 33 sq.) et τοῦτο δὲ μόνον εὔχεσθαι, ὅπως αἰθρία τε καὶ λαμπρὰ ἐπιμείνῃ ἡ σελήνη (p. 27, 2 sq.), 128 συνέθεντο ἀλλήλαις, ὅπως πρὸς τὸ ὕδωρ ἐκπιεῖν καὶ ἐπὶ τὰς βύρσας παραγένωνται, 178 ηὔξατο τῷ Διί, ὅπως τοῦ κηπουροῦ αὐτὸν ἀπαλλάξας ἑτέρῳ δεσπότῃ ἐγχειρίσῃ [3]), — *b*) συλλαμβάνει (82), συνελάμβανε (88), συλλαμβάνων (76. 137. 196), συλλαμβάνοντος (82. 146), συλλαμβάνειν (4), συνέλαβε(ν) (12. 14. 83. 108. 191. 196), συνέλαβον (7), συλλαβὼν

[1]) N. 156 ex A 157 supplevi: τούτου ἐδεήθη ποτὸν αὐτῷ ὀρέξαι cf. C 106 (sive F 257).

[2]) N. 81 memoria ᾔτει αὐτὸν μή τι φέρειν in mendo cubat.

[3]) N. 92 αὔλησον, ὅπως ὀρχήσομαι C 94 et F 74 ὀρχήσωμαι exhibent; cum M conspirat A 98.

(123. 127. 129. 145. 200)[1], συλλαβόντος (195), συλλαβόντες (7. 147), συλλαβόντων (144), συλλαβεῖν (98. 107. 139), συνείληφας (200), — passive: συλλαμβανόμενοι (44. 162), συνελήφθη (48. 169. 204), συνελήφθησαν (232), συλληφθείς (145), συλληφθεῖσα (73. 169), συλληφθέντος (78), συλληφθῆναι (48. 71. 202). Nec tamen adeo res est certa, ut nullus scrupulus remaneat.

V. 7 φείδου inserui cf. Babrius 107, 7 ἀλλὰ λίσσομαι, φ ε ί δ ο υ. Volgo cum C. E. Chr. Schneidero inter τὸ λοιπὸν et δικτύῳ vox εἶπε adicitur.

De versus 9. sinceritate equidem quam maxime dubito, cum neque εὐωπὸν satis conveniat, quod C. E. Schneideri est commentum pro εὐωπῶν, et epitheton φιλαλλήλων falsum esse ipsa venandi ratio demonstret, quam hisce verbis describit[2]) Aristoteles Hist. Anim. IX 8 p. 614ᵃ 10 sqq.: καὶ τῶν περδίκων δ' οἱ τιθασσοὶ τοὺς ἀγρίους πέρδικας ὀχεύουσι καὶ ἐπικορρίζουσι καὶ ὑβρίζουσιν. Ἐπὶ δὲ τὸν θηρευτὴν πέρδικα ὠθεῖται τῶν ἀγρίων ὁ ἡγεμὼν ἀντᾴσας ὡς μαχούμενος· τούτου δ' ἁλόντος ἐν ταῖς πηκταῖς πάλιν προσέρχεται ἄλλος ἀντᾴσας τὸν αὐτὸν τρόπον. Ἐὰν μὲν οὖν ἄρρην ᾖ ὁ θηρεύων, τοῦτο ποιοῦσιν· ἐὰν δὲ θήλεια ἡ θηρεύουσα ᾖ καὶ ᾄδουσα, ἀντᾴσῃ δ' ὁ ἡγεμὼν αὐτῇ, οἱ ἄλλοι ἀθροισθέντες τύπτουσι τοῦτον καὶ ἀποδιώκουσιν ἀπὸ τῆς θηλείας, ὅτι ἐκείνῃ, ἀλλ' οὐκ αὐτοῖς προσέρχεται· ὁ δὲ πολλάκις διὰ ταῦτα σιωπῇ προσέρχεται, ὅπως μὴ ἄλλος τῆς φωνῆς ἀκούσας ἔλθῃ μαχούμενος αὐτῷ. Ενίοτε δέ φασιν οἱ ἔμπειροι τὸν ἄρρενα προσιόντα τὴν θήλειαν κατασιγάζειν, ὅπως μὴ ἀκουσάντων τῶν ἀρρένων ἀναγκασθῇ διαμάχεσθαι πρὸς αὐτούς. — Expecto: π υ ρ ω π ὸ ν ἀγέλην ὀρνέων π ο τ' (φίλ'?) ἐ μ φ ύ λ ω ν[3]) cf. Oppianus Cyneg. II 317 πέρδικες θοῦροι δὲ π υ ρ ώ π ε ε ς et M 193 τοὺς ὁ μ ο φ ύ λ ο υ ς ἐκκαλουμένου cl. Simia Anth. Pal. VII 203:

οὐκέτ' ἀν' ὕλαεν δρίος εὔσκιον, ἀγρότα πέρδιξ,
ἠχήεσσαν ἵης γῆρυν ἀπὸ στομάτων·
θηρεύων βαλίους σ υ ν ο μ ή λ ι κ α ς ἐν νομῷ ὕλης·
ᾤχεο γὰρ πυμάταν εἰς Ἀχέροντος ὁδόν.

V. 15 ὡρόμαντιν ex I. G. Schneideri coniectura pro ὡρομάτην (ὡρομαθὴν F) legitur; praestat, opinor, ὡρόμαρτυν.

In nostri apologi contextu ὅτι pro εἰ reseribendum esse probant C 164ᵃ (et Bodl. 122) ὁ δὲ εἶπεν· δι' αὐτὸ τοῦτο μᾶλλόν σε θύσω, ὅ τ ι κτλ. et F 172 ὁ δὲ πρὸς αὐτὴν οὕτως ἀνταπεκρίθη· διὰ γὰρ τοῦτο μᾶλλον

[1]) N. 3 lectio συλλαβὼν in σύλλαι abiit, genuinam scripturam servarunt A 16, C 6, F 15.

[2]) Stagiritae narrationem laudat Athenaeus IX p. 389 CD cf. etiam Aelianus N. A. IV 16.

[3]) Si vitium latius serpsit, equidem ὁμογνήτων in fine reponendum esse putaverim.

ἐγώ σε θύσω, ὅτι φίλους σους προςενεδρεῦσαι θέλεις. Adde M 119 ἀλλὰ καὶ διὰ τοῦτο μᾶλλον αὐτῇ θύω, διότι οἶδα αὐτὴν ἀπεχθῶς διακειμένην et 196 δι' αὐτὸ τοῦτο γοῦν ἄξιος εἶ κολάσεως, ὅτι μετὰ πονηρῶν κεκάθικας cl. n. 114 οἱ δὲ ὑποτυχόντες ἔφασαν· ἀλλὰ καὶ διὰ τοῦτό σε μάλιστα (μᾶλλον melius A 121 et C 97 sive F 249) [1]) θύομεν· ἐκείνους γὰρ ἐγείρων ἐξ ἑτέρων ἡμᾶς οὐκ ἐᾷς κλέπτειν. — Sane n. 227 (A 220) legitur: ἡ κύων ἔλεγε καὶ κατ' αὐτὸ τοῦτο αὐτὴν ἀγνωμονεῖν, εἴγε Ἀφροδίτη μισεῖ, sed particula εἴγε ibidem recte ad ἀγνωμονεῖν spectat, sicuti saepius post verba, quae animi motum significant, εἰ (εἴγε) pro ὅτι (ὅτι γε M 86. 165) ponitur cf. M 16 τοῦ δὲ ποιμένος ἀχαριστίαν αὐτῶν κατηγοροῦντος, εἴγε, 25 μεμφομένου δὲ αὐτὴν τοῦ δρυτόμου, εἴγε, 67 ἀλλ' ἔμοιγε οὐκέτι λυπηρὸς ὁ θάνατος, εἴγε, 79 καὶ ὁ ὄνος ἀναπτερωθεὶς κατ' αὐτοῦ, εἴγε, 88 ἀγανακτοῦντος δὲ τοῦ θηρευτικοῦ καὶ τὸν ἕτερον ὀνειδίζοντος, εἴγε, 104 κάνθαρος δὲ τοῦτον θεασάμενος ἐθαύμασεν ὡς ἐπιπονώτατον, εἴγε (ἤγε M, recte A 111 et F 84), 109 καὶ ὁ Ζεὺς ἀγανακτήσας κατ' αὐτῆς, εἴγε, 141 ἀλώπηξ δὲ αὐτὸν θεασαμένη ὠνείδιζεν, εἰ (p. 39, 24 sq.) et ἐθαύμασα δέ, εἰ (l. 26), 142 ἄθλιοι ἡμεῖς, εἴγε, 192 καὶ δὴ ὄνος ὁρῶν τοὺς ἀμφοῖν γόμους ἴσους ὄντας ἠγανάκτει καὶ ἐσχετλίαζεν, εἴγε, 206 ἄθλιαι ἡμεῖς, εἴγε (p. 57, 24 sq.) et ἀλλὰ μὴ θαύμαζε, τέκνον, εἰ (l. 27), 235 κάνθαρος δὲ τοῦτον θεασάμενος ἐταλάνιζεν ὡς ἐπιπονώτατον, εἴγε.

## CCXVI.

Συκέα παρ' ὁδὸν ἦν. Ἀλώπηξ δὲ θεασαμένη δράκοντα κοιμώμενον ἐζήλωσεν αὐτοῦ τὸ μῆκος· βουλομένη δὲ αὐτῷ ἐξισωθῆναι παρανιαπεσοῦσα ἐπειρᾶτο ἑαυτὴν ἐκτείνειν, μέχρις οὗ ὑπερβιαζομένη ἔλαθε ῥαγεῖσα.

Τοῦτο πάσχουσιν οἱ τοῖς κρείττοσιν ἀνθαμιλλώμενοι· θᾶττον....... διαρρήγνυνται ἢ ἐκείνων ἐφικέσθαι δύνανται.

Haud absimilis est Babrii fabula n. 41:

Διαρραγῆναί φασιν ἐκ μέσου νώτου
δράκοντι μῆκος ἐξισουμένην σαύραν.
Βλάψεις σεαυτὸν κοὐδὲν ἄλλο ποιήσεις,
ἂν τὸν σὲ λίαν ὑπερέχοντα μιμήσῃ.

Quodsi contentio quaedam et comparatio fiat, lacerta recte cum serpente iungitur, vulpes non item, cuius τὸ συνετὸν τῶν φρενῶν καὶ τὸ ποικίλον (M 99) insigne proprium sit et peculiare. Serpentem et lacertam componit Appendix Phaedri n. 23:

---

[1]) Cf. insuper M 16 ἀλλὰ καὶ δι' αὐτὸ τοῦτο μᾶλλον φυλαττόμεθα.

Serpens lacertam forte adversam prenderat;
quam devorare patula cum vellet gula,
arripuit illa prope iacentem surculum
et pertinaci morsu transversum tenens
avidum sollerti rictum frenavit mora.
Praedam dimisit ore serpens inritam [1]).

Quare eo inclino, ut voce ἀλώπηξ in fabula nostra avem denotari putem, de qua haec habet Aristoteles Hist. Anim. I 5 p. 490a 5 sqq. τῶν δὲ πτηνῶν τὰ μὲν πτερωτά ἐστιν, οἷον ἀετὸς καὶ ἱέραξ, τὰ δὲ πτιλωτά, οἷον μέλιττα καὶ μηλολόνθη· τὰ δὲ δερμόπτερα, οἷον ἀλώπηξ καὶ νυκτερὶς cf. insuper Mnesimachus fr. 4, 48 sq. (vol. II p. 438 Kock) ἀλεκτρυόνος, νήττης, | κίττης, πέρδικος, ἀλωπεκίου, ubi itidem avicula significatur.

Rana ad bovis molem aequandam se inflat in apologo Babriano n. 28:

Γέννημα φρύνου συνεπάτησε βοῦς πίνων·
ἐλθοῦσα δ' αὐτὸν (οὐ παρῆν γὰρ) ἡ μήτηρ
παρὰ τῶν ἀδελφῶν, ποῦ ποτ' ἦν, ἐπεζήτει·
'τέθνηκε, μῆτερ, ἀρτίως πρὸ τῆς ὥρης·
ἦλθεν πάχιστον τετράπουν, ὑφ' οὗ κεῖται
χηλῇ μαλαχθείς'. Ἡ δὲ φρῦνος ἠρώτα
φυσῶσ' ἑαυτήν, εἰ τοσοῦτον ἦν ὄγκῳ
τὸ ζῷον. Οἱ δὲ μητρὶ 'παῦε, μὴ πρίου·
θᾶσσον σεαυτήν' εἶπον 'ἐκ μέσου ῥήξεις
ἢ τὴν ἐκείνου ποσσότητα μιμήσῃ'.
Ὅτι ἐπικίνδυνον τοῖς ἐλάττοσι παρατείνεσθαι τοῖς μείζοσι.

Quam fabulam decurtatam praebet Ignatius apud Boissonadum ad Babr. p. 61:

Χηλῇ βοὸς πατεῖτο βατράχου τέκος·
ὀργῇ δὲ μήτηρ εἶπεν, ἧς θλάσε τέκος. [2])
Καὶ τέκνον ἄλλο φησί· 'κἂν ῥαγῇς ὅλη
πρὸς οὐδὲν αὐτῷ, μῆτερ, ἐμφερὴς ἔσῃ'
cf. etiam Phaedrus I 24:

---

[1]) Promythium, ubi leonis pellis deficit, vulpinam induendam esse, hoc est, ubi deficiunt vires, astu utendum Lysandri dictum refert (Plutarchus Vit. Lysandri VII 5 p. 437 A, Reg. et imper. apopgthegm. p. 190 E, Apophthegm. Lacon. p. 229 C), quod in proverbium abiit cf. Zenobius I 93, Diogenianus I 83, Gregorius Cyprius Mosquensis I 83, Apostolius III 24, IV 19a, XIV 95, Suidas vol. I 1 p. 429, 14 sqq. (Bernhardy).

[2]) Lacunam statui.

Inops, potentem dum vult imitari, perit.
In prato quondam rana conspexit bovem
et tacta invidia tantae magnitudinis
rugosam inflavit pellem: tum natos suos
interrogavit, an bove esset latior.
Illi negarunt; rursus intendit cutem
maiore nisu et simili quaesivit modo,
quis maior esset. Illi dixerunt bovem.
Novissime indignata, dum vult validius
inflare sese, rupto iacuit corpore, —

Horatius Sat. II 3, 314 sqq.:

Absentis ranae pullis vituli pede pressis
unus ubi effugit, matri denarrat, ut ingens
belua cognatos eliserit: illa rogare,
quantane? num tantum, sufflans se, magna fuisset?
„Maior dimidio.“ „Num tanto“? Cum magis atque
se magis inflaret, „non, si te ruperis“, inquit
„par eris“,

Martialis X 79, 9 sq.:

grandis ut exiguam bos ranam ruperit olim,
sic, puto, Torquatus rumpet Otacilium.

Babrii fabella (n. 28) mendis aliquot inquinata redit apud Furiam n. 378, equidem v. 4 gravi corruptela liberavi. Nihil enim agunt, qui volgatam scripturam: τέθνηκε, μῆτερ· ἄρτι γὰρ πρὸ τῆς ὥρης | ἦλθεν ita interpretantur, ut ante unius horae spatium ranae prolem periisse verbis πρὸ τῆς ὥρης significari censeant. Frustra difficultati mederi student coniecturae Boissonadi (ἄρτι γὰρ πρῴ τῆς ὥρης), Lachmanni (ἄρτι γὰρ πρὸ τῆσδ' ὥρης), Bergkii (ἄρτι γὰρ πρῴης ὥρας), Duebneri (ἄρτι πρωΐης ὥρης). Genuinum textum innuit F: τέθνηκε, μῆτερ, εἶπον, ἄρτι πρὸ τῆς ὥρας· ἦλθε γὰρ πάχιστον κτλ. Videlicet ranulae fatum deploratur, quod praemature evenisse formula πρὸ τῆς ὥρης declarat cf. Ammonius de differ. vocab. p. 120 (Valckenaer) πρὸ μοίρας καὶ πρὸ ὥρας διαφέρει· πρὸ μοίρας μὲν γὰρ ὁ βιαίως ἀποθανών, πρὸ ὥρας δὲ ὁ ἐν νεότητι et Eustathius Thessalonicensis ad Homeri Od. 9, 134 sq. (μάλα κεν βαθὺ λήϊον αἰεὶ | εἰς ὥρας ἀμῷεν) p. 1619, 62 sq. τὸ δὲ εἰς ὥρας ἐξ Ὁμήρου λαβόντες οἱ Ἀττικοί φασιν ἐπὶ ἀρᾶς τό· μὴ εἰς ὥρας ὁ δεῖνα ἵκοιτο, ἀλλὰ δηλαδὴ πρὸ ὥρας ἐκθερισθείη. Quae male precandi phrasis apud Atticos saepenumero ita inflectitur, ut ὥρασιν pro εἰς ὥρας compareat cf. Aristophanes Lysistr. 1037 (accedat v. 391) ἀλλὰ μὴ ὥρασ' ἵκοισθ', Alexis fr. 266, 1 sq. (Kock) μὴ ὥρασι μὲν—ἵκοιθ' ὁ τοὺς θερμοὺς φαγών, Lucianus Deor. Dial. VI 4 ἄπαγε

μὴ ὥρασιν ἵκοιτο τῶν ὑπὲρ αὐτὸν ἐπιθυμῶν, de Salt 5 μὴ ὥρασιν ἄρα ἱκοίμην, εἴ τι τοιοῦτον ἀνασχοίμην ποτέ, Dial. Meretr. X 3 μὴ ὥρασιν ἵκοιτο ὁ λῆρος ἐκεῖνος τοιαῦτα παιδεύων τὸ μειράκιον. Scholiasta Luciani V haec adnotat (Deor. Dial.) σεσολοίκισται μὲν Ἀττικῶς· ὤφειλε γάρ· μὴ ὥρας ἵκοιτο· ἔστι δὲ τοῦτο τὸ ἐν τῇ συνηθείᾳ· μὴ καλὰ αὐτῷ τὰ ἔτη, μὴ εἰς καιρὸν φθάνοι [1]) et (de Salt.) Ἀττικὸν τοῦτο καὶ σόλοικον δοκοῦν· ὤφειλε γὰρ μὴ ὥρας εἶναι αἰτιατική· σημαίνει δὲ τό· μὴ εἰς τοὔπιον φθάνοι, ineptit Commentator G (ad Dial. de Salt. 5) τοῦτ' ἔστιν μὴ εἰς οὐρανὸν ἤτοι Ὄλυμπον ἤτοι εἰς τὴν τῶν μακάρων ἵκοιτο. Ὧραι γὰρ παρὰ τοῖς παλαιοῖς τοῦ οὐρανοῦ πύλαι, ὥσπερ Ὅμηρος (Il. 5, 749 sq.). ἀφικέσθαι δὲ τούτων ἐλέγοντο οἱ πασῶν χαρίτων τετυχηκότες· καὶ διὰ τοῦτο Φιλόστρατος εἴκοσι β' (immo: II 34) περὶ Ὡρῶν οὕτω λέγει· τὸ μὲν ἐπὶ ταῖς Ὥραις εἶναι τὰς τοῦ οὐρανοῦ πύλας Ὁμήρῳ ἀφῶμεν εἰδέναι καὶ ἔχειν· εἰκὸς γάρ που αὐτὸν ξυγγενέσθαι ταῖς Ὥραις, ὅτε τὸν αἰθέρα ἔλαχε. Ὅρα τὸν λόγον Φιλοστράτου, Aristophanis versum (Lysistr. 1037) his verbis circumit Scholastia Puteanus: τουτέστιν ἀλλὰ οὐ κατὰ τὰς ὥρας καὶ τὸν καιρὸν ἵκοισθ' ἄν. — Exsecrationem aliter exprimunt Timocreon Rhodius apud Plutarchum Vit. Themistoclis XXI 4 p. 122 D οἱ δ' ἤσθιον κηὔχοντο μὴ ὥραν Θεμιστοκλέους γενέσθαι et Theophylactus Simocatta Epist. 17 p. 768 (Hercher) μὴ ἵκοιτο ὥρας ὁ Λεύκιππος cf. insuper Schol. ad Aristophanis Lysistr. 690, ubi verba ἵνα μηκέτι φάγῃ σκόροδα μηδὲ κυάμους μέλανας ita explicantur: ἵνα μὴ εἰς ὥραν ἔλθῃ. Bene ominandi formulam adhibuit poeta incertus [2]) Anth. Pal. XII 107, 1 sq.

τὸν καλόν, ὦ Χάριτες, Διονύσιον, εἰ μὲν ἕλοιτο
τἀμά, καὶ εἰς ὥρας αὖτις ἄγοιτε καλόν. [3])

Locutione πρὸ τῆς ὥρας Suidas vocem πρόωρος definit, qua praecox fatum haud semel designatur cf. Crinagoras Mytilenaeus Anth. Pal. VII 643, 3 sq. πρόωρον-μοῖραν, Phalaecus ibid. XIII 27, 7 sq. αἰαῖ! κωκύει τὸν ἑὸν γόνον ἤματα πάντα | λέγουσα τὸν πρόωρον ὡς ἀπέφθιτο, — Cassius Dio LXXVII 20 πρόωρον οὕτως οἰκτρῶς ἀπολωλότα, Plutarchus

[1]) Cf. Georgius Acropolita Annal. 15 p. 29, 15 (Bekker) ἡ μὲν οὖν βασιλὶς Ἄννα ἔφθη πρὸ καιροῦ τελευτῆσαι.

[2]) Fortasse Meleager Gadarenus cf. Anth. Pal. XII 81, 5 et quae dixi ad Anthologiae Planudeae Appendicem Barberino-Vaticanam (L. 1890) p. 58.

[3]) Maturitatis tempus significatur in Socratis dicto apud Laertium Diogenem II 5, 32 τούς τε τὰ πρώιμα πολλοῦ ἐωνημένους ἀπογινώσκειν ἔλεγεν εἰς τὰς ὥρας ἐλθεῖν et in fabula Aesopia apud Dionem Chrysostomum Or. LXXII vol. II p. 387 Reiske (C 330, F 385) καὶ δὴ καὶ πρὸς δρῦν ἄρτι φυομένην, ἐπειδὰν πρὸς ὥραν ἀφίκηται, ἑτοίμως ἔχειν ἱζάνειν (cf. ibidem p. 388 τοὐναντίον δὲ ἔχαιρε τῇ δρυῒ φυομένῃ· ἐπειδὴ δὲ ἱκανὴ ἦν, καθίσαντα ἐπ' αὐτὴν ᾖδε). Vindemiae tempus notat Ps.-Homerus Hymn. XXV 12 δὸς δ' ἡμᾶς χαίροντας εἰς ὥρας αὖτις ἱκέσθαι.

Consol. ad Apollon. 1 (Mor.) p. 101 F περὶ τῆς τοῦ προςφιλεστάτου πᾶσιν ἡμῖν υἱοῦ σου προώρου μεταλλαγῆς τοῦ βίου, M. Antoninus IX 33 καὶ ὁ ἐσχατόγηρως ἀποθανὼν εἰς ἴσον καταστήσεται τῷ προώρῳ, Suidas s. v. Ζήνων βασιλεὺς Ῥωμαίων· ἀλλ' ὁ πάντων ἔφορος — πρόωρον τῶν ἀνθρωπείων ἐδικαίωσεν ἐκβῆναι. — Eodem sensu Babrius dixit n. 12, 3 sq. ἡ δ' ἀπεθρήνει | τὸν Ἴτυν ἄωρον ἐκπεσόντα τῆς ὥρης, 118, 7 sq. ἡ δὲ δειλαίη | παίδων ἀώρων συμφορὰς ἀπεθρήνει, denique n. 53, 7 sq. verbis τρίτον δ' ἐπ' αὐτοῖς εἴθε μή σύγ' εἰς ὥρας | ἵκοιο μηδέ μοι πάλιν συναντήσῃς vulpes optat, ne lupus ad seriorem aetatem perveniat, ubi sensu non perspecto paraphrastae substituerunt: καὶ μηδαμῶς τῇ ὥρᾳ ταύτῃ ζήσῃς (Bodl. 31, C 232 sive F 301) et μηδαμῶς δὲ τῆς ὥρας ταύτης τὸ ζῆν σοι μὴ (includo) ἐπεβραβεύθη (C p. 379).

Ἄρτι in ἀρτίως mutatum patrocinio non eget, quamquam etiam ἄρτι <παῖς> πρὸ τῆς ὥρης recte scribi potuit; ἀρτίως pro ἄρτι πως Babrio reddiderim n. 135 Gitlbauer (= cod. Vatic. Knoellii n. 192 p. 688) v. 11 'σὺ δ' ἄρτι πως ὠνητός, ὡς λέγεις, ἥκων | παρρησιάζῃ' φησὶ 'καὶ κατρακρώζεις'.

Verum haec hactenus! Ad M 216 redeundum est. Ac primum quidem παραναπεσοῦσα pro παρὰ ἀναπεσοῦσα correxi cf. Artemidorus Onirocr. I 79 p. 121, 2 (Reiff) οἷον τὰ μὲν ὄπισθεν παραναπίπτει ὡς κάμηλος καὶ κύνες. Omnino M libentissime duas praepositiones copulat cf. (ἀπημπόλησαν 7), ἀποκατέστησεν 50. 99. 171, διανεβάλλετο 205, διανέστη 13, διενοχλεῖν 205, διεξιόντος 22, διεξιὼν 31, ἐμπεριέλαβεν 29, ἐναποληφθεὶς 52, ἐνδιατρίβοντες 68, (ἐξαναλωθῇ 59), ἐξαναστὰς 30. 141. 143. 145. 165, ἐξαναστᾶσα 50. 80, ἐξαναστῆναι 142. 179. 189, ἐξαναστήσεσθαι 35, ἐξανέστη 179, ἐπανελθοῦσα 11. 28. 231, ἐπανελθοῦσαι 69, ἐπανελθὼν 34. 39. 69. 155. 229, ἐπανελόμενος 171, ἐπανῆλθε 121, ἐπανῆλθεν 143, ἐπεκχυθέντος 67, ἐπεμβαίνεις (l. ἐπεμβαίνων) 3, ἐπικαθίσαντος 190. 196, ἐπικαθίσας 130, (καταναλισκόμενοι 199, καταναλωθέντων 137), κατεκπηδησάντων 211, κατεπαγγέλλομαι 34, κατεπαγγελλομένη 56, κατεπαγγελλόμενοι 220, κατεπαγγέλλονται 35. 219, μεταπαρέδωκε 46, μεταπεριάγειν 185, παρειςκυλίοντες 199, προϋποσχόμενος 81, συγκαταφαγόντα 209, συμμετασχηματιζόμενοι 169, συνανήνεγκε 70, συναποθνήσκοντα 105, συναπολλύντες 191, (συνδιαιτᾶσθαι 115), συνεξώσθη 105, ὑπερεξελθὼν 70; adde (παρανάλωμα 199), περικατάληπτος 64. 110, παρακαταθήκην 155.

Inter θᾶττον et διαρρήγνυνται sex vel septem litterae in M evanuerunt. Conieci ἐκεῖνοι, quamquam etiam θᾶττον διαρρήγνυνται commode legas cf. C 306ᵉ sive F 391 (ex Plutarchi Coniugal. praecept. 12 p. 139 E) τοῦτο ποιοῦσιν αἱ πλεῖσται γυναῖκες· ἀφαιρουμένοις τοῖς ἀνδράσι [βίᾳ] τὴν τρυφὴν καὶ τὴν πολυτέλειαν διαμάχονται καὶ χαλεπαίνουσιν· ἂν δὲ πείθωνται μετὰ λόγου, πρᾴως ἀποτίθενται καὶ μετριάζουσιν, brevius compo-

sita epimythia habes C 260ᵇ τοῦτο πολλοὺς τῶν πρὸς χάριν ἅπαντα πολιτευομένων ὁρῶμεν πεπονθότας et F 423 οὕτω πανθάνουσιν οἱ τὰ ἀληθῆ πιστεύοντες. — De sententiae colore apte conferri potest M 128, ubi affabulationem gravis corruptela obsedit: οὕτως ἔνιοι τῶν ἀνθρώπων δι' ἐλπίδα κέρδους ἐπισφαλεῖς μόχθους ὑφιστάμενοι φθάνουσι πρὸς τὸν μόχθον ὧν βούλονται περιγενέσθαι. Codicis vestigiis iusto tenacius pressis φθάνουσι πρὸς τῷ μόχθῳ, ὧν βούλονται, <οὐ> περιγενέσθαι in editione exhibui; attamen medelam monstrat A 134: φθάνουσι πρῶτον καταναλισκόμενοι ἢ ὧν βούλονται περιγενόμενοι, unde in πρὸς τὸν μόχθον verba πρῶτον καταναλισκόμενοι (οἰχόμενοι?) ἢ delitescere discimus. Alterum participium vindicare videntur Aristoteles Meteor. II 6 p. 364ᵇ 10 sqq. ἂν γὰρ ὦσι μᾶλλον ψυχροὶ ἢ μεγάλοι φθάνουσι πηγνύντες ἢ προωθοῦντες. Plutarchus Vit. Artoxerx. VIII 4 p. 1015 C καὶ Κῦρος ἔφθη κατακοπεὶς ἢ χρησάμενός τι τῇ Κλεάρχου νίκῃ, Galb. II 2 p. 1054 A ἔφθησαν ἐν ταῖς ἀποστάσεσι καὶ προδοσίαις ἀναλώσαντες αὑτοὺς ἢ τυχόντες ὧν ἤλπισαν, quamquam πρῶτον haud levem scrupulum inicit cf. Herodotus VI 91 ἔφθησαν ἐκπεσόντες πρότερον ἐκ τῆς νήσου ἤ σφι ἵλεων γενέσθαι τὴν θεόν, Theophrastus fragm. de coloribus 41 τὰ δὲ φύλλα τῶν πλείστων δένδρων τὸ τελευταῖον γίνεται ξανθὰ διὰ τὸ τῆς τροφῆς ὑπολειπούσης φθάνειν αὐτὰ καταξηραινόμενα πρότερον ἢ τελέως ἐν αὐτοῖς μεταβάλλειν εἰς τὸ μέλαν χρῶμα τὸ ὑγρόν, — M 68 οὕτω καὶ τῶν ἀνθρώπων οἱ τοῖς φαύλοις ἐπιτηδεύμασιν ἐνδιατρίβοντες φθάνουσιν ἀπολλύμενοι, πρὶν ἢ ἐπὶ τὰ καλλίονα τρέπεσθαι[1]), Herodotus VI 116 καὶ ἔφθησάν τε ἀπικόμενοι, πρὶν ἢ τοὺς βαρβάρους ἥκειν, IX 70 ἔφθησαν ἐπὶ τοὺς πύργους ἀναβάντες, πρὶν ἢ τοὺς Λακεδαιμονίους ἀπικέσθαι, Plutarchus Reg. et imper. apophthegm. (Mor.) p. 178 E (Philipp. n. 21) ἔφθη γὰρ τελευτῆσαι, πρὶν ἢ παρ' ἐμοῦ χάριν ἀξίαν τῆς φιλίας ἀπολαβεῖν[2]). Similiter verbum φθάνω excipit particula πρὶν cum infinitivo

---

[1]) Rectius τραπέσθαι A 69 et C 84 (sive F 238) cf. M 26 οὐ πρότερον ἀποστάντας, πρὶν ἢ ἀλλήλους αἱμάξαι, 48 ἀλλ' οὐ νῦν σε δεῖ φυλάττεσθαι, ὅτε οὐδὲν ὄφελος, τότε δέ, πρὶν καὶ (l. πρὶν ἢ cum C 77 sive F 235; πρὶν καὶ praeter M adgnoscit A 48) συλληφθῆναι cll. n. 226 πρὶν παθεῖν, φυλάττονται et 2 οὐ πρότερον <ἂν> καταβεβήκεις, πρὶν τὴν ἄνοδον ἐσκέψω. — In M 128 συνέβη δὲ αὐτὰς πινούσας διαῤῥαγῆναι ἢ τῶν βυρσῶν ἐφικέσθαι ante διαῤῥαγῆναι supplendum esse πρότερον comprobat C 207 (sive F 289) συνέβη δὲ αὐταῖς πιούσαις πρότερον διαῤῥαγῆναι ἢ τῶν βυρσῶν ἐφικέσθαι cf. insuper Plutarchus de commun. notit. 19 (Mor.) p. 1067 F οὐδὲν ἀπολείποντας τῶν κυνῶν, ἅς φησιν Αἴσωπος δερμάτων τινῶν ἐμπλεόντων ἐφιεμένας ὁρμῆσαι μὲν ἐκπίνειν τὴν θάλασσαν, ῥαγῆναι δὲ πρότερον ἢ τῶν δερμάτων λαβέσθαι. Idem valet de A 134, ubi πρὶν inter διαῤῥαγῆναι et ἢ a Schneidero oblatum editoris commentum esse ipse Codex me docuit.

[2]) Falso tamen Fabri coniecturam φθάνοντες pro φθείροντες amplexus locum Aelianeum V. H. XIV 27 ita constituit Hercher: ἐγὼ δὲ ἐπαινῶ μάλιστα ἐκείνους, ὅσοι τὰ ὑποφυόμενα τῶν κακῶν φθάνοντες [ἀεὶ ταῦτα] ἐκκόπτουσι, πρὶν ἢ δυνάμεώς τινος ἐπιλαβέσθαι.

coniuncta neque testimonia infinitivi ab ἢ suspensi desunt cf. Homerus Il. 16, 322 ἔφθη ὀρεξάμενος, πρὶν οὐτάσαι, Thucydides IV, 67, 4 βουλόμενοι φθάσαι, πρὶν ξυγκλῃσθῆναι πάλιν τὰς πύλας, VI 97, 2 φθάνει ἀναβὰς κατὰ τὸν Εὐρύηλον, πρὶν τοὺς Συρακοσίους αἰσθομένους ἐκ τοῦ λειμῶνος καὶ τῆς ἐξετάσεως παραγενέσθαι, VII 36, 1 τῇ ἄλλῃ παρασκευῇ τοῦ πεζοῦ, ἥνπερ ἐπ' αὐτὸ τοῦτο πρὶν ἐλθεῖν αὐτοὺς φθάσαι βουλόμενοι ξυνέλεγον, Xenophon Cyrop. II 4, 25 φθάνειν δεῖ πεπραγμένους τοὺς πόρους, πρὶν κινεῖσθαι τὴν θήραν, III 2, 4 ἢν γὰρ φθάσωμεν, πρὶν τοὺς πολεμίους συλλεγῆναι, ἀναβάντες, IV 1, 3 ἔφθασεν ἔξω βελῶν τὴν τάξιν ποιήσας, πρὶν τοὺς πολεμίους κατανοῆσαι, V 4, 38 ἆρ' οὖν, ἔφη, δυναίμην ἂν συσκευασάμενος φθάσαι, πρίν σε ἐξιέναι, VII 5, 39 ἕως περ ἔφθασεν ἑσπέρα γενομένη, πρὶν τοῖς φίλοις αὐτὸν σχολάσαι καὶ συγγενέσθαι, Anab. II 5, 5 φθάσαι βουλόμενοι, πρὶν παθεῖν, IV 1, 4 ἅμα δὲ φθάσαι, πρὶν τοὺς πολεμίους καταλαβεῖν τὰ ἄκρα, Antiphon Or. I 29 ἐὰν μὲν δύνωνται καὶ φθάνωσι, πρὶν ἀποθανεῖν, Isocrates Or. V 7 ἔφθητε ποιησάμενοι τὴν εἰρήνην, πρὶν ἐξεργασθῆναι τὸν λόγον, VIII 120 ἀνὴρ μὲν γὰρ ἀσεβὴς καὶ πονηρὸς τυχὸν ἂν φθάσειε τελευτήσας, πρὶν δοῦναι δίκην τῶν ἡμαρτημένων, Aristoteles Meteorol. I 13 p. 349[b] 13 sqq. τούτους δὲ δι' ὀλιγότητα τοῦ ὕδατος φθάνειν ξηραινομένους, πρὶν ἐπελθεῖν τὸ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, II 5 p. 361[b] 17 sq. ἔτι δ' αὐτὴν τὴν γῆν φθάνει ξηραίνων, πρὶν γενέσθαι ἔκκρισιν ἀθρόαν, III 1 p. 371[a] 22 sq. διὰ δὲ τὸ τάχος φθάνει διεξιών, πρὶν ἐκπυρῶσαι καὶ ἐπιδιατρίψας μελᾶναι, Politic. V 2 p. 1302[b] 23 βουλόμενοι φθάσαι, πρὶν ἀδικηθῆναι, Problem. X 44 p. 895[b] 21 sq. καὶ φθάνει ἀναλισκόμενον τὸ ὑγρόν, πρὶν ἐκπνευματωθῆναι καὶ ποιῆσαι ἢ ἐρυγεῖν ἢ ψοφῆσαι, Arrianus Exped. Alex. I 13, 3 ὑποφθάσομεν γὰρ αὐτοὶ περάσαντες, πρὶν ἐκείνους ἐς τάξιν καθίστασθαι, III 18, 10 ἔφθη ἀφικέσθαι, πρὶν τὰ χρήματα διαρπάσασθαι τοὺς φύλακας, V 14, 3 Ἀριστόβουλος δὲ τὸν Πώρου παῖδα λέγει φθάσαι ἀφικόμενον σὺν ἅρμασιν ὡς ἑξήκοντα, πρὶν τὸ ὕστερον ἐκ τῆς νήσου τῆς μακρᾶς περᾶσαι Ἀλέξανδρον, VI 15, 6 ἔφθη ἐπὶ τοῖς ὁρίοις γενέσθαι τῆς Μουσικανοῦ χώρας, πρὶν πυθέσθαι Μουσικανόν, ὅτι ὥρμηται ὡς ἐπ' αὐτὸν Ἀλέξανδρος, 18, 4 ἔφθασαν δὲ ἐποκείλαντες αὐτάς, πρὶν παντάπασι διαπεσεῖν ἐν τῷ ὕδατι, VII 22, 1 ἀλλ' ἔφθη γὰρ ἐλάσας ἔξω Βαβυλῶνος, πρίν τι παθεῖν, Alexander Aphrodisiensis Problem. II 8 φθάνει γὰρ σβεσθῆναι καὶ ἐκτεφρωθῆναι ὁ χυμός, πρὶν γεννῆσαι τὴν διάθεσιν [1]), — Herodotus VI 108 φθαίητε γὰρ ἂν πολλάκις ἐξανδραποδισθέν-

[1]) Aliter I 30 φθάνουσι μεταβληθῆναι καὶ πεφθῆναι, πρὶν δράσωσι, quam syntaxin confirmant Semonides Amorginus fr. 1, 11 sq. (Bergk) φθάνει δὲ τὸν μὲν γῆρας ἄζηλον λαβόν, | πρὶν τέρμ' ἵκηται, Euripides Orest. 1218 sqq. φύλασσε δ', ἤν τις, πρὶν τελευτηθῇ φόνος, | ἢ ξύμμαχός τις ἢ κασίγνητος πατρὸς | ἐλθὼν ἐς οἴκους φθῇ cf. etiam Iosephus

τες ἤ τινα πυθέσθαι ἡμέων, Xenophon Cyrop. I 6, 39 ἠσκήκεις δὲ φθάνειν ἕλκων ἢ τὰ πτηνὰ φεύγειν, Theocritus Id. II 114 sqq. ἦ ῥά με Σιμαίθα τόσον ἔφθασας, ὅσσον ἐγὼ θην | πρᾶν ποκα τὸν χαρίεντα τρέχων ἔφθασσα Φιλῖνον | ἐς τὸ τεὸν καλέσασα τόδε στέγος ἤ με παρεῖμεν.

Citra necessitatem πρῶτον in πρότερον mutat Halmius (ad n. 218 = A 134), siquidem vocis πρῶτον usus luculentis exemplis adstrui potest. Eodem fere modo Plutarchus Cat. Min. XLIII 2 p. 780 A καὶ οὐκ ἐφθη πρῶτον ἀφεθείς, καὶ [1]) πάλιν ἀναστρέψας ἵετο πρὸς τὸ βῆμα μετὰ κραυγῆς ἐγκελευόμενος τοῖς πολίταις ἀμύνειν, — accedant: Heraclitus apud Clementem Alexandrinum Strom. V 14 p. 712 θάλασσα διαχέεται καὶ μετρέεται εἰς τὸν αὐτὸν λόγον, ὁκοῖος πρῶτον ἦν ἢ γενέσθαι γῆν, Sophocles Philoctet. 332 sq. οἴμοι· φράσῃς μοι μὴ πέρα, πρὶν ἂν μάθω | πρῶτον τόδ', Aristophanes Eccles. 1015 sqq. ἔδοξε ταῖς γυναιξίν, ἢν ἀνὴρ νέος | νέας ἐπιθυμῇ, μὴ σποδεῖν αὐτήν, πρὶν ἂν | τὴν γραῦν προσκρούσῃ πρῶτον (πρότερον coni. Herwerden), Xenophon Hier. IV 2 τούτων, πρὶν ἀπάρχεσθαι τοῖς θεοῖς, τοὺς διακόνους πρῶτον κελεύουσιν ἀπογεύσασθαι, Strato Anth. Pal. XII 206, 6 πρῶτον συμμελετᾶν ἢ μελετᾶν μαθέτω, Aelianus V. H. V 18 οὐ πρῶτον (πρότερον Hercher) αὐτὴν ἀπέκτειναν, πρὶν ἢ ἀπεκύησεν, Gnom. Vat. n. 418 [2]) (de Xenocrate) οὐ πρῶτον, εἶπεν, ἐκεῖνον ἀφελεῖς ἢ τοῦτον, — Evang. Ioann. XV 18 γινώσκετε, ὅτι ἐμὲ πρῶτον ὑμῶν μεμίσηκεν, Epiphanius adv. Haeres. III 2, 9 p. 1088 C (Pet.) Ἐμπεδοκλῆς ὁ τοῦ Μέτωνος Ἀκραγαντῖνος πῦρ καὶ γῆν καὶ ὕδωρ καὶ ἀέρα τέτταρα πρωτόγονα εἰσέφερε στοιχεῖα καὶ ἔλεγεν ἔχθραν ὑπάρχειν πρῶτον τῶν στοιχείων, Chariton V 4 δεῖ δὲ πρῶτον [3]) τῶν λόγων ἅπαντας παρεῖναι τοὺς ἀναγκαίους ἐν τῇ δίκῃ, — Evang. Luc. XI 38 οὐ πρῶτον ἐβαπτίσθη πρὸ τοῦ ἀρίστου, — Sophocles Ai. 110 μάστιγι πρῶτον νῶτα φοινιχθεὶς θάνῃ, Aristophanes Av. 484

---

Flavius Antiqu. Iud. VII 9, 7 μὴ μεταγνοὺς ὁ παῖς αὐτοῦ διώκειν ὁρμήσῃ καί, πρὶν ἐν ἀσφαλείᾳ γένηται, φθάσας καταλάβῃ.

[1]) Verborum conformatio eadem est Vit. Mar. XVII 9 p. 415 D, Pomp. XXXIII 3 p. 637 A, Anton. LXVI 2 p. 946 F, Galb. V 1 p. 1055 A, de garrul. 11 (Mor.) p. 507 A, Amat. Narrat. III 13 p. 774 A.

[2]) „Wiener Studien" vol. XI (1889) p. 104. In narratione Laertii Diogenis IV 2, 11 habes: οὐκ ἄν γε, ἔφη, τὶς πρότερον τούτου

[3]) Πρὸ Cobetus, quam coniecturam amplexus est Hirschigius, — at cf. d'Orville p. 478 sq. (ed. Lips.). Eandem structuram iam Homerus adhibuit Il. 13, 502 Αἰνείας δὲ πρῶτος ἀκόντισεν Ἰδομενῆος, ubi voci πρῶτος comparativi vis subiecta est, quae etiam Il. 14, 402 et 18, 92 recurrit. Posteriorum exempla composuit Bernhardy ad Eratosthen. Cataster. 42 p. 122 et ad Dionys. Perieg. 889 p. 770 cf. praeterea Musgrave ad Sophocl. Antig. 1349, Wesseling ad Herodot. II 2, Vahlen Beiträge zu Aristoteles Poetik III („Sitzungsberichte der philos.-hist. Classe der Wiener Akademie der Wissenschaften" vol. LVI — 1867 — p. 341).

ἦρχέ τε Περσῶν πρῶτον (πρότερον Dindorf, πρότερος Meinekius) πάντων, Eccl. 990 ὅταν γε κρούσῃς τὴν ἐμὴν πρῶτον θύραν, 1079 ἣν οὖν ὑφ' ὑμῶν πρῶτον ἀπόλωμαι κακῶς, Menander fr. 710 (Kock) ὅταν τι μέλλῃς τὸν πέλας κακηγορεῖν, | αὐτὸς τὰ σαυτοῦ πρῶτον ἐπισκέπτου κακά, Aelianus N. A. III 14 καὶ τοῦτο πρῶτον γενόμενον μάθημά τε ὁμοῦ καὶ παίδευμα τῶνδε τῶν ὀρνίθων τὸ κυβερνητικὸν καὶ τοῖς ἀνθρώποις παρεδόθη [1]). Ex conlectione nostra facit huc n. 67 ἀλλ' ἔμοιγε οὐκέτι λυπηρὸς ὁ θάνατος, εἴγε ὁρᾶν μέλλω τὸν ἐχθρόν μου ἀποπνιγόμενον πρῶτον [2]) neque alia ratione M πρῶτος et πρότερος coniungit n. 78: καὶ ὄνος εἰδὼς (ἰδὼν recte A 175 cf. C 175 et F 132 ὁρῶν) τὰ ὑπὸ τοῦ δεσπότου πραττόμενα ἔφη· ἀλλ' ἔμοιγε αἱρετώτερον ἦν παρὰ τοῖς προτέροις δεσπόταις ἀχθοφοροῦντα λιμώττειν ἢ ἐνταῦθα παραγενέσθαι (p. 50, 15 sqq.) et ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι τότε μάλιστα τοὺς πρώτους [3]) δεσπότας οἱ οἰκέται ποθοῦσιν, ὅταν καὶ ἑτέρων πεῖραν λάβωσιν (l. 19 sq.). Quae conformatio [4]) recurrit in A 194:

Ὄφις ὑπὸ πολλῶν πατούμενος ἀνθρώπων τῷ Διὶ ἐνετύγχανε περὶ τούτου. Ὁ δὲ Ζεὺς πρὸς αὐτὸν εἶπεν· 'ἀλλ' εἰ τὸν πρότερον πατήσαντα ἐπλήξας, οὐκ ἂν ὁ δεύτερος ἐπεχείρησε τοῦτο ποιῆσαι'.

Ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι οἱ τοῖς πρώτοις ἐπιβαίνοντες τοῖς ἄλλοις φοβεροὶ γίνονται [5]).

---

[1]) Cadat igiur necesse est Hercheri commentum V. H. V 18; adde N. A. I 44 εἴ τῳ ἱκανοὶ τεκμηριῶσαι οἱ πρῶτοι φυλάξαντες ταῦτα, III 22 νικᾷ δὲ ὁ πρῶτος φθάσας (ubi ichneumonis cum aspide pugna describitur), VIII 12 και ἐπεφήμισαν Ἀσκληπιοῦ θεράποντα εἶναι οἱ πρῶτοί μου (οἱ πρῶτοι perperam Hercher) ταῦτα ἀνιχνεύσαντες, XVI 16 εἰ μὲν οὖν τὰ πρόσφατα ἐξακούεται μόνα ἢ καὶ τῶν πρώτων (προτέρων coniecit Hercher) τινά, οὐκ οἶδα.

[2]) Προαποπνιγόμενον pro ἀποπνιγόμενον πρῶτον offerunt A 68 et F 58, — aliter C 27: ἀλλ' ἔμοιγε οὐκ ἔστι λυπηρόν, εἶπεν, ὁ θάνατος, εἴγε ὁρᾶν μέλλω πρὸ ἐμοῦ τὸν ἐχθρὸν ἀποθνήσκοντα. — In M 24 καὶ ἡμᾶς ἔδει τοσαῦτα προησθέντας πρῶτον παθεῖν τι καὶ λυπηρὸν legendum πάντως cum A 13, C 13, F 28, quamquam προησθέντας πρῶτον per se nihil offendit cf. e. gr. Thucydides I 23, 5 προέγραψε πρῶτον, 29, 1 προπέμψαντες — πρότερον, VIII 66, 2 πρότερον — προὔσκεπτο.

[3]) Προτέρους corrigebat Minoides Minas, sed cum M concinit A. — Utrobique comparativum suppeditat C, πρώτους in affabulatione habet F, ubi asini verba paululum inmutata sunt: οὐαί μοι τῷ τάλανι! αἱρετώτερον ἦν μοι παρ' ἐκείνοις τοῖς δεσπόταις εἶναι.

[4]) Ante εἶθ' οὕτως M modo πρότερον (2) modo πρῶτον (186. 191) usurpat.

[5]) Ex C 119a et F 149 haec varietas scripturae accedit: πατούμενος ἀνθρώπων] ἀνθρώπων πατούμενος C ‖ ἐνετύγχανε περὶ τούτου] ἐνετύγχανεν ‖ πρότερον] πρότερόν σε F ‖ ἐπεχείρησε] ἐπεχείρησέ σοι F ‖ ὁ λόγος] ὁ μῦθος C, δῆλος F, ubi ὁ λόγος recte emendavit Corais p. 324. Idem mendum deprehenditur in F 71. 72. 92. 95. 96. 107. 116. 119. 138. 139. 143. 146. 148. 158. 162. 166. 167. 170. 179. 180. 182. 183. 186. 190. 192. 194. 195. Videlicet Furia Codicis compendium falso interpretatus est ‖ οἱ τοῖς πρώτοις ἐπιβαίνοντες] τοῖς πρώτοις ἀνθρώποις (οἱ τοὺς πρώτους ἀνθρώπους coni. Corais) ἀμυνόμενοι F, οἱ τοῖς πρότερον ἐπιβαίνουσιν ἀνθιστάμενοι C. — Mihi in A verba οἱ τοῖς πρώτοις ἐπιβαίνοντες

Epimythium, a quo tota disputatio ducta est (M 128), in C 207a (sive F 289) hanc formam habet [1]): πολλοὶ δι' ἐλπίδα κέρδους ἐπισφαλοῦς (optime) [2]) μόχθους ὑφιστάμενοι φθάνουσι πρῶτον καταναλισκόμενοι, quacum contendi potest [3]) M 107 οὕτως οἱ τοῖς πέλας ἐπιβουλὰς ῥάπτοντες φθάνουσιν αὐτοὶ συμφοραῖς περιπίπτοντες. Rectius tamen illic λανθάνουσιν scripseris ex C 32 (sive F 225) [4]) cf. p. 31, 12 sq. ὁ δὲ λιποψυχῶν ἔφη πρὸς ἑαυτόν· 'ἄθλιος ἔγωγε, ὅς ἕτερον θηρεῦσαι βουλόμενος ἔλαθον αὐτὸς ἀγρευθῆναι [5]) εἰς θάνατον. Epimythia similiter conformata praebet M n. 28 οὕτω καὶ τῶν ἀνθρώπων ἔνιοι τοὺς ἐχθροὺς φυλαττόμενοι λανθάνουσι πολλῷ χαλεπωτέροις τῶν ἐχθρῶν φίλοις ἐμπίπτοντες, 79 οὕτω καὶ τῶν ἀνθρώπων ἔνιοι ταπεινουμένους [μὲν] τοὺς αὐτῶν ἐχθροὺς ὁρῶντες καὶ διὰ τοῦτο καταθρασυνόμενοι λανθάνουσιν ὑπ' αὐτῶν ἀναλισκόμενοι, 109 οὕτω πολλοὶ διὰ πλεονεξίαν τοῖς ἄλλοις ἐποφθαλμιῶντες λανθάνουσι καὶ τῶν ἰδίων στερούμενοι, 143 οὕτως ἔνιοι τῶν ἀνθρώπων μετρίοις κέρδεσι μὴ ἀρκούμενοι, μείζονας δὲ ἐλπίδας διώκοντες λανθάνουσι καὶ τὰ ἐν χερσὶ προϊέμενοι, 148 οὕτω καὶ τῶν πόλεων αἱ τοὺς δημαγωγοὺς ῥᾳδίως προδιδοῦσαι λανθάνουσι καὶ αὐταὶ ταχέως πολεμίοις χειρούμεναι, 191 οὕτως οἱ τοῖς κοινωνοῖς ἐπιβουλεύοντες λανθάνουσι πολλάκις καὶ ἑαυτοὺς συναπολλύντες, 199 οὕτω καὶ [οἱ] ἐπὶ τῶν πόλεων οἱ ἐν ταῖς τῶν δημαγωγῶν στάσεσιν ἑαυτοὺς παρεισκυλίοντες λανθάνουσιν αὐτοὶ ἑκατέρων παρανάλωμα γενόμενοι, 202 οὕτως ἔνιοι τῶν ἀνθρώπων διὰ σφοδρὰς ἐπιθυμίας ἀπροσκέπτως τοῖς πράγμασιν ἐπιχειροῦντες λανθάνουσιν ἑαυτοὺς εἰς ὄλεθρον εἰσιέντες, 210 οὕτως οἱ τοὺς πονηροὺς περισῴζοντες λανθάνουσι καθ' ἑαυτῶν πρῶτον αὐτοὺς ῥωννύντες cll. n. 57 οὕτως οἱ πονηροὶ τῶν ἀνθρώπων διὰ πλεονεξίαν λανθάνουσι καθ' ἑαυτῶν τὸν ἔλεγχον

corrupta videntur pro οἱ τοὺς πρῶτον ἐπιβαίνοντας ἀμυνόμενοι eodemque modo sylloges Florentinae memoriam refingendam esse censeo.

[1]) Longius distat Syntipas 61 (sive C 207b) ὁ μῦθος οὗτος ἐλέγχει τοὺς τοῖς ἀνηνύτοις ἐξ ἀφροσύνης ἐπιχειροῦντας. Fabulae recensionem Latinam praebet Phaedrus I 20 cf. insuper Plutarchus de commun. notit. 19 (Mor.) p. 1067 F.

[2]) Cf. C 55 (sive F 228) ὁ μῦθος πρὸς τοὺς διὰ κέρδος εὐτελὲς μέγαν ὑφισταμένους κίνδυνον.

[3]) Cf. etiam praeter Aeliani locum (N. A. III 22) supra exscriptum (p. 407 n. 1) Xenophon Anab. III 4, 20 καὶ ὁπότε δέοι γέφυραν διαβαίνειν ἢ ἄλλην τινὰ διάβασιν, ἔσπευδεν ἕκαστος βουλόμενος φθάσαι πρῶτος.

[4]) Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ τοῖς πέλας ἐπιβουλεύοντες λανθάνουσι πολλάκις ὑφ' ἑτέρων τοῦτ' αὐτὸ πάσχοντες. Cum M conspirat A 114.

[5]) A ἀγρευθεὶς praebet, sed infinitivum adgnoscit M praeterea n. 41 ἔλαθε καταπεσεῖν, 105 ἔλαθεν ὑπὸ σφοδρᾶς ὁρμῆς ἐκβρασθῆναι, 107 ἔλαθεν ἀσπίδα πρὸ τῶν ἑαυτοῦ ποδῶν κοιμωμένην πατῆσαι, 123 ἔλαθον ἐμαυτὸν καὶ σωτηρίας στερῆσαι (p. 35, 10) et ἔλαθον εἰς μείζονα δεινὰ περιπεσεῖν (ibid. l. 12 sq.), 195 ἔλαθεν ἐμπεσεῖν. Similiter verbum τυγχάνω cum infinitivo coniungitur n. 187 ἐτύγχανε γὰρ αὐτοῦ προακηκοέναι, ubi προσακηκουῖα (sic) offert A 184, προακηκουῖα C 113.

ἐπισπώμενοι, 179 οὕτω καὶ τῶν ἀνθρώπων ἔνιοι <διὰ> τὰς ἰδίας ἐπινοίας λανθάνουσιν εἰς συμφορὰς ἐνσειόμενοι. Quibus locis fretus n. 18 ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι οἱ τοὺς κρείττονας χλευάζοντες λανθάνουσι μείζονας ἑαυτοῖς τὰς ἀνίας ἐξ αὐτῶν ἐπισπώμενοι ex A 8, C 111, F 375 λαμβάνουσι in λανθάνουσι mutavi, tum n. 7 ἐν τοσούτῳ δὲ θύννος διωκόμενος καὶ πολλῷ τῷ ῥοίζῳ φερόμενος ἔλαθεν εἰς τὸ σκάφος ἐναλλόμενος cum A 21 ἔλαθεν pro Codicis memoria ἔδωκεν reposui [1]), cui vix patrocinatur n. 44 καὶ οἱ βάτραχοι τὸ μὲν πρῶτον καταπλαγέντες τὸν ψόφον ἑαυτοὺς εἰς τὰ βάθη τῆς λίμνης ἐδίδοσαν. Hinc vero correxi n. 133 ἐνταῦθα βάτραχοι ἀκούσαντες τῆς ποδοφορίας αὑτοὺς εἰς τὰ βαθέα (l. βάθη) τῆς λίμνης ἐδίδοσαν, ubi M αὐτοὺς — ἐδίωσαν suppeditat cf. A 137 et F 89.

## Excursus I (ad p. 381 n. 2).

M perraro δ' ante vocales praebet: δ' ἀκροχολήσας (233), ἄρα (40) αὐτῷ (11), αὐτῶν (177), οὐδὲν (57); — οὐδ' ἀργὴν (155). — Particulae non elisae exempla haec sunt: δὲ ἀγανακτήσας (163), ἀγανακτοῦντες (165), ᾖδει (48), ἀδελφὴ (90), ἀεὶ (198. 205) [2]), Ἀθηναῖος (32), αἴθυια (168), αἰτιωμένου (193), αἰφνίδιον (165), ἀκούουσα (203), ἀλεκτρυόνα (114), ἀλόγιστον (8. 100), ἀλώπεκος (22), ἀλώπηξ (11. 26), ἀμελετήτως (2. 78), ἄμπελος (10), ἀμφιγνοοῦντες (115), ἀναιρεῖσθαι (71. 169), ἄνθρωπον (93), ἀνθρώπου (46 bis), ἀνιμήσασθαι (112), ἄντικρυς (147), ἀντισχεῖν (99), ἄξονος (45), ἀπ' (13), ἀπαυδήσας (129), ἀπεκρίνατο (29. 152. 234), ἀποδεξάμενοι (40), ἀποδιδόντας (95), Ἀπόλλωνος (97), ἀπόπειραν (30), ἄρκτου (64), ἀρξάμενον (154), ἀροτὴρ (39; nisi legendum ἀρότης cum A 38 cf. fabulae principium p. 12, 17), ἀσμένως (140), αὐτὰ (94) [3]), αὐταῖς (55. 149), αὐτὰς (128), αὐτῇ

[1]) Participium a verbo λανθάνω pendet insuper n. 13. 65. 202. 209. 216.

[2]) N. 205 ὁ δὲ [ὡς] ἀεὶ αὐτὸ (αὐτὸν prave M) διανεβάλλετο λέγων μετ' ὀλίγον χρόνον μεταβήσεσθαι male ὡς inrepsit. Paulo aliter C 269ᵃ (sive F 316) ὁ δὲ ἀνεβάλλετο λέγων μετ' ὀλίγον χρόνον μεταβήσεσθαι, ubi corrupte A 200: ὁ δὲ ἀνεβάλετο χρόνον λέγων μεταβήσεσθαι.

[3]) M perperam τὰ inter δὲ et αὐτὰ inculcat: οὕτω καὶ τῶν ἀνθρώπων οἱ χρεωφειλέται, μέχρι μὲν τὰ ἀλλότρια ἔχουσι χρήματα, δοκοῦσί τινες εἶναι, ἐπειδὰν δὲ [τὰ] αὐτὰ ἀποδώσωσιν, ὁποῖοι ἐξ ἀρχῆς ἦσαν, εὑρίσκονται cf. C 188ᵇ et F 78. Scripturam ἐπειδὰν δὲ ταῦτα ἀπαιτηθῶσιν offert C 188ᵃ, ἐπειδὰν δὲ ἀποδώσουσιν A 101, ubi ἀποδώσωσιν reponendum est. Schneideri lectio ἀποδῶσιν potius auctorem quam libri memoriam corrigit cf. M 156 ἐὰν ποτόν σοι ἐπιδώσω (ἐπιδῶ C 106 sive F 257, ἐπιδώσω etiam A 157), C 167ᶜ ἵνα δώσῃ αὐτοῖς ἕτερον ἄνακτα, F 104 μήπως τῇ ὥρᾳ ταύτῃ ἐπιδώσω σε τῷ λύκῳ, 132 ὅπως τοῦ κηπωροῦ αὐτὸν ἀπαλλάξῃ καὶ ἑτέρῳ δεσπότῃ αὐτὸν ἐκδώσῃ (corr. Furia pro ἐκδώσει) cf. Lobeckio ad Phrynich. p. 720 sqq. Etiam in C 188ᵇ ἐπὰν δὲ αὐτὰ ἀποδώσωσιν sine neces-

(25. 202), αὐτὴν (2. 25. 144. 191), αὐτῆς (11. 21. 28. 71. 80), αὐτοῖς (46. 64. 161. 184. 232), αὐτὸν (14 bis. 84. 134. 141. 145. 195. 217), αὐτὸς (12), αὐτοῦ (12. 19. 41. 63. 65. 80. 85. 94. 102. 129. 171. 172. 178. 185. 211), αὐτοὺς (19. 60), αὐτῷ (78. 135. 136. 179. 216), αὐτῶν (50. 54. 61 bis. 69. 75. 86. 133. 146. 192 bis. 212), ἀφείλετο (48), ἀφελκύσαντες (21), — ἐγένετο (70. 71. 153. 180), ἐγένοντο (43), ἔγχελυς (61), ἐγὼ (2), ἐθερμάνθη (174), εἰ (141. 154), εἶπε (64. 81), εἶπεν (47. 51. 103. 146. 234), εἰπόντος (3. 67. 70. 137. 171. 195. 219), εἰπόντων (183), εἰπούσης (90. 98. 169), εἰς (49. 81. 173), εἰσελθοῦσα (11), εἰσελθὼν (146), εἰσιὼν (57), ἐκκοπάθει (178), ἑκατέρου (22), ἐκεῖνοι (204), ἐκεῖνος (140), ἐκείνου (150), ἐκπλαγέντος (15), ἐκροφήσασα (18), ἔλεγε (25. 57), ἔλεγεν (93), ἐλθὼν (138), ἐλπίδας (143), ἔμπνουν (37), ἐν (7. 13. 71. 189), ἐνέστη (94), ἐνταῦθα (9. 86. 199), ἐξαναστὰς (141. 145. 165), ἐξαναστῆναι (142), ἐπακολουθούσης (201), ἐπανελθοῦσα (231), ἐπανελθὼν (69), ἐπελθόντων (66), ἐπὶ (57. 67. 113. 168. 179. 226), ἐπιγνόντος (171), ἐπικαθίσαντος (190), ἐπιλαθομένη (50), ἐπιστᾶσα (59), ἐπιστραφεὶς (124. 125), ἐπιστραφέντος (120), ἐπιφανέντος (171), Ἑρμῆν (178), Ἑρμῆς (95), ἐρωδιῷ (151), ἐρωτώμενος (167), ἑτέραν (90. 214), ἑτέρας (206), ἕτερος (43. 64. 66. 81), ἔτι (52. 85), ἐτύγχανε (187), εὖ (145), εὐτόνως (185), ἔφασαν (86. 157), ἔφη (104. 119. 147. 167. 235), ἐφύλαξεν (149), ἔχων (65), — ἢ (93), ἡμέρα (111), — ἴδια (214), ἰδίων (214), ἰδὼν (182), ἱκετευούσης (4), ἵνα (227), — ὁ (64. 68 bis. 92 bis.), [1]) ὀθνείαις (16), οἱ (162), οἰκείων (167), οἶκον (93), οἰκουρὸν (88), ὀλίγας (127), ὁμοιωθεῖσα (165), ὀνηλάτης (180), ὀνηλάτου (190), ὄνος (87. 100), ὀρνιθοθήρα (195), ὅτε (19. 104. 235.) [2]), ὅτι (81. 84. 126. 154). οὐ (201), οὐδαμῶς (118), οὐδὲν (81 bis. 88), οὐδενὸς (137), οὐκ (15. 84. 177), οὖσι (217), οὗτος (60), οὐχ (123), — ὁδὸς (227), ὑπ' (142. 223) [3]),

---

sitate ἀπαιτηθῶσιν edidit Halmius n. 200[b]; eandem formam sylloges Florentinae memoria ἀποδόκωσιν (n. 78) significat.

[1]) N. 64 corpusculi Parisini lectio ὑποχωρησάσης δὲ ἀπὸ τοῦ δένδρου ἐπυνθάνετο αὐτοῦ recto talo stare non potest, quamobrem inter δὲ et ἀπὸ verba ὁ ἕτερος καταβὰς ἀπὸ τοῦ δένδρου supplevi cf. F 56 ἀπαλλαγείσης δὲ αὐτῆς ὁ ἕτερος καταβὰς ἀπὸ τοῦ δένδρου ἐπυνθάνετο cl. C 249[b] ὁ δὲ ἕτερος καταβὰς ἀπὸ τοῦ δένδρου ἐπυνθάνετο. In A 65 et C 249[a] habes: ὁ ἀπὸ τοῦ δένδρου καταβάς, quod quidem supplementum ex mea sententia non sufficit.

[2]) Et n. 104 et n. 235 M exhibet: ὕστερον δέ, ὡς ὅτε χειμὼν ἐνέστη, ubi ὡς cum A 111 resecui; ὅτι omittit F 84 ὕστερον δέ, ὡς χειμὼν ἀνέστη (ἐνέστη corr. Corais p. 384 n. 6), fortasse recte. Eandem coniunctionem M falso invexit n. 130 ἀλλ' οὔτε, ὅτε ἦλθες, ἔγνων οὔτε, [ὅτε] ἐὰν ἀπέλθῃς, γνώσομαι, quo loco ὅταν temptare noli cf. A 136, C 213[a] (sive F 291 et Bodl. 70), Babrius 84, 6.

[3]) N. 142 ὑπ' in ὑπὲρ abiit: δεινῶς δὲ ὑπὲρ ἀλλήλων διατεθέντες, ἐπειδὴ ἐσκοτώθησαν, ἡμιθανεῖς ἔκειντο cf. A 145 δεινῶς (οὖν addidit Schneider) ὑπ' ἀλλήλων διατεθέντων, ἐπειδὴ ἐσκοτώθη, ἡμιθανεῖς ἔκειντο, ubi corrigendum: διατεθέντες et ἐσκοτώθησαν cf. etiam C 39[a]

ὑπὸ (42. 46. 73. 175), ὑποτυχόντες (114), ὑποτυχοῦσα (89. 173. 222), ὑποτυχοῦσαι (17), ὑποτυχὼν (127. 130. 151. 177), ὑστεραίᾳ (16), ὕστερον (51), ὑφ' (233), — ὠνητοῦ (170), ὡς (44. 52. 53. 71. 79. 176. 179. 189. 210. 224. 229); — μηδὲ ἅπαξ (58), ἀρνήσασθαι (135), ὅταν (211), ὕπνου (3); — οὐδὲ ἀνθρώπους (56), ἐν (66), ἓν (138), ἑνὸς (60). — Qua observatione nixus equidem δέ, non δ' [1]) supplevi ante ἀπόλωλας (66) [2]), αὐξηθεῖσαν (4), αὐτὸν (198), αὐτοῦ (127), ἐπαινῶν (63) [3]), ὑποτυχὸν (156), ὑποτυχὼν (140).

---

δεινῶς οὖν ὑπ' ἀλλήλων διατεθέντες, ὡς ἐκ τῆς πολλῆς μάχης καὶ σκοτοδινιᾶσαι, ἀπαυδήσαντες ἔκειντο et 39ᵇ δεινῶς οὖν ὑπ' ἀλλήλων κατακοπέντες ἐσκοτίσθησαν ἐκ τῆς πολλῆς μάχης καὶ ἔκειντο ἡμιθανεῖς. Recte F 96 δεινῶς οὖν ὑπ' ἀλλήλων διατεθέντων καὶ ἐκ τῆς πολλῆς μάχης ἀμφοτέρων σκοτισθέντων καὶ ἡμιθανῶν κειμένων ἀλώπηξ — δρομαῖος ᾤχετο — Falso Schneider verba ἐπειδὴ ἐσκοτώθη de ingruentibus tenebris noctis vel de ingruente crepusculo dicta esse existimat.

¹) Falso δὲ inserit M ante ἄλλα (104), ἔλεγεν (3), ἔφη (15).

²) Ἐκεῖνος <δὲ> ἀπόλωλας <εἶπεν> pro ἐκεῖνος ἀπόλωλας scripsi; melius tamen reponas: κἀκεῖνος· 'ἀπόλωλα, εἰπέ' cf. A 67 κἀκεῖνος ὁ μὴ εὑρὼν ἔφη 'ἀλλ' ἀπόλωλα (ἀπόλωλας Cod.; corr. Schneider) εἰπὲ (sic A, non εἶπεν) cl. C 83 (sive F 237) ὁ δ' εἶπεν· 'ἀπόλωλα, λέγε, οὐκ· ἀπολώλαμεν'. Forma κἀκεῖνος in M recurrit n. 13. 30. 36. 69. 151. 167. 220. 224, κἀκείνου n. 218, κἀκεῖνοι n. 120. 184. 221, κἀκείνους n. 67, κἀκείνη n. 18. 22. 71. 219, κἀκείνην n. 57. Falso tamen κἀκεῖνος pro ἐκεῖνος se insinuavit n. 155 ἐπειδὴ (adde δέ, — in editione ἐπεὶ δὲ exhibui) συνεχῶς κἀκεῖνος παρεπόμενος οὐδ' ἀρχὴν ἁρπάζειν ἐπεχείρει et 201 τῆς δὲ κατηγορούσης αὐτοῦ δυσσέβειαν — κἀκεῖνος ὑποτυχὼν εἶπεν cf. a) F 105 cl. C 236; — b) A 196, C 48, F 159.

³) Locum desperatum hoc modo constitui: εἷς δέ τις τῶν διαβιβάζειν εἰθισμένων θεασάμενος διαποροῦντα προσελθὼν καὶ ἀράμενος <διεπέρασεν αὐτόν· ὁ δὲ ἐπαινῶν> αὐτοῦ τὴν φιλοφροσύνην εἱστήκει τὴν αὐτοῦ πενίαν μεμφόμενος. Verbum ἀράμενος pro ἐράμενος obtulit F 56, ubi ineptissime legitur: καὶ ἀράμενος αὐτοῦ τὴν φιλοφροσύνην διεπέρασεν αὐτόν· ὁ δὲ εἱστήκει. Prorsus a vero abhorret C. E. Chr. Schneideri commentum (Ind. Graecitatis s. v. αἴρω) καὶ ἀράμενος αὐτοῦ (!) τῇ φιλοφροσύνῃ nec meliorem coniecturam excogitavit Corais (p. 262 ad n. 398), quem Halmius n. 119 sequitur: καὶ ἀράμενος αὐτὸν σὺν φιλοφροσύνῃ cf. M 103 (A 110, C 191 sive F 276) ἕνα ἕκαστον τῶν θεῶν μετὰ πολλῆς φιλοφροσύνης ἠσπάζετο. Portitoris benevolentiam, quae nulla fuerit, fabulae auctor laudare non potest, iure meritoque laudat causa nondum cognita Diogenes. Ceterum pro ἐπαινῶν legi potest ἀποδεξάμενος (cf. M 154 ἀποδεξάμενος αὐτοῦ τὸ ἀψευδὲς et 171 ἀποδεξάμενος αὐτοῦ τὴν δικαιοσύνην) ac fortasse legi debet, si gemellae narrationis ratio habetur, quam servavit Eustathius Thessalonicensis ad Homeri Od. 4, 401 p. 1503, 17 sqq. τὴν γὰρ ἀδοκίμαστον φιλίαν καὶ ἀδιαφόρως καὶ εἰκῇ πρὸς οὓς ἂν καὶ τύχῃ γινομένην ἄλλοι τε καὶ ὁ Πλάτων πόῤῥω που τῶν τῆς ἀληθοῦς φιλίας ὅρων βάλλουσιν. Ὃς καί ποτε καταλύσας παρά τινι ξένῳ καὶ χαριέντως ἐπιξενωθεὶς καὶ τὸν ἄνδρα τῆς φιλοφροσύνης ἀποδεξάμενος, εἶτα καὶ τοὺς ἄλλους ἐπ' ἄλλοις ἰδὼν ἥκοντας καὶ ἀνεξετάστως καὶ αὐτοὺς φιλουμένους διέδρα τὸν ξένον καὶ τοὺς ἄλλους ἔσω μένειν ἀφεὶς αὐτὸς τὴν ἀπείραστον ξενίαν διέφυγεν. Quae fabella respicitur etiam ad Il. 6, 14 p. 622, 17 sqq. κατά τινας δὲ φαυλιστικὸς ὁ λόγος· ἀποδοκιμάζει γάρ, φασί, τὴν ἄκριτον φιλοξενίαν ὁ ποιητὴς οἷα χυδαίαν καὶ ἀσυντελῆ, ὡς μὴ καλὸν ὂν πάντας ἀκρίτως ξενίζειν καὶ αὐτούς, εἴ που τύχῃ, τοὺς φαυλοτάτους. Διὸ καὶ ὁ Πλάτων παρά τινι ξενισθεὶς

Aliam rationem sylloge Augustana ante vocales praestat: saepius quidem δ' occurrit, nec tamen pauci loci restant, quibus δὲ elisione afficiatur cf. a) δ' ἀλλήλων (68), ἀλώπεκος (14), ἄμπελος (42), ἀναμνήσασθαι (119), ἀπαυδήσας (135), ἀποδεξάμενοι (39), ἄρα (39), αὐτὰς (134), αὐτῇ (22. 132), αὐτὴν (22. 147), αὐτῆς (13. 25. 57. 75), αὐτοῖς (181. 187), αὐτὸν (88), αὐτοῦ (11. 109. 135. 182), αὐτοὺς (11), αὐτῷ (1. 2. 10. 176), αὐτῶν (63. 74. 79. 91. 172), εὖ (148) [1]), ὅτι (132), οὐδὲν (93), οὐκ (5. 88. 104) [2]), ὑστεραίᾳ (6), ὡς (53); — μηδ' ὅταν (206); — οὐδ' αὐτὸς (104), ὅλως (1. 231), ὑμεῖς (129); — b) ἀγανακτοῦντες (122), ᾄδει (48), Ἀθηναῖος (30), Αἰσχύνης (108), ἀλεκτρυόνα (121), ἀλόγιστον (27. 107), ἀλώπηξ (1. 24), ἀμελετήτως (9), ἀμφιγνοοῦντες (122) [3]), ἀναιρεῖσθαι (75), ἀνεβάλλετο (200), ἀνθρώπου (46 bis), ἄντικρυς (150), ἀντισχεῖν (106), ἄξονος (45), ἀπ'

---

ἀλλοδαπῷ καὶ θαυμάσας τὸν ἄνδρα, ὡς εἶδεν ἐκεῖνον καὶ εἰς δεύτερόν τινα καὶ εἰς τρίτον καὶ εἰς πλείονας ἔτι τὸ αὐτὸ ποιοῦντα, ἀπεπήδησε καὶ τὴν ξενίαν ἀπείπατο· οὐ γὰρ ἤθελε τοὺς τυχόντας ἀνθρώπους τῶν αὐτῶν τῷ σπουδαίῳ ἀξιοῦσθαι καὶ πάντας ἐν ἴσῳ κεῖσθαι παρὰ τῷ φιλοφρονουμένῳ. Eadem fere de Stratonico citharoedo referunt Aelianus V. H. XIV 14 et Gnomologium Parisinum a nobis editum n. 43 („Rozprawy Wydziału filologicznego" etc. vol. XX p. 140), cum apologo nostro magis concinit Seneca de benef. IV 18, 1 Platon cum flumen nave transisset nec ab illo quicquam portitor exegisset, honori hoc suo datum credens dixit positum illi esse apud Platonem officium. Deinde paulo post, cum alium atque alium gratis eadem transveheret sedulitate, negavit illi iam apud Platonem positum officium. Demosthenis nomen apophthegma praebet Gnomologii Vaticani („Wiener Studien" vol. X — 1888 — p. 218, ubi etiam Florilegii Vindobonensis et Maximi Gnomologi testimonia adtuli) ὁ αὐτὸς (scil. Δημοσθένης) εὐχεροῦς αὐτῷ ἀργύριον χρήσαντός τινος εἶθ' ὁρῶν πολλοῖς αὐτὸν τὸ αὐτὸ ποιοῦντα εἶπεν· 'οὐκέτι σοι ἔχω χάριν· νόσῳ γάρ, οὐ κρίσει τοῦτο ποιεῖς'. De sententia conferri possunt praeterea Epicharmus fragm. incert. 29 (p. 263 Lorenz: τὸ λεγόμενον Ἐπιχάρμου πρὸς τὸν ἄσωτον Plutarchus Vit. Poplicolae XV 7 p. 105 B, τὸ λελεγμένον πρὸς τὸν εἰκῆ καὶ ἀκρίτως ἐκχέοντα τὰ ἑαυτοῦ καὶ καταχαριζόμενον de garrul. 15 Mor. p. 510 C) οὐ φιλάνθρωπος τύγ' ἐσσ'· ἔχεις νόσον· χαίρεις διδούς, Seneca de benef. I 14, 1 beneficium qui quibuslibet dat nulli gratum: nemo se stabularii aut cauponis hospitem iudicat nec convivam dantis epulum, ubi dici potest: quid enim in me contulit? nempe hoc, quod et in illum vix bene notum sibi et in illum etiam inimicum ac turpissimum hominem. numquid enim me dignum iudicavit? morbo suo morem gessit et 15, 6 non est beneficium, cui deest pars optima datum esse iudicio.

[1]) Schneider falso νῦν δ' ἴσθι pro νῦν δ' εὖ ἴσθι edidit.

[2]) N. 88 in codice ὅδ' pro ὁ δ' legitur. Schneider ὁ δὲ habet, sicuti etiam n. 93 δὲ οὐδέν, n. 119 δὲ ἀναμνήσασθαι tamquam ex Codice praebet; — n. 93 perperam μηδ' ἐξιὼν enotavit, ubi A δ' (supra scr. μὲν) ἐξιὼν offert. Scilicet ipse librarius δ' in μὲν mutantum esse significavit.

[3]) Ἀμφιγνόντες A, quod correxi ex M 115 cf. etiam C 101[b] (sive F 285) οἱ δὲ ἀγνοοῦντες αὐτοῦ τὸ εἶδος καὶ τὴν φωνὴν παίοντες αὐτὸν ἐξέβαλον.

(3), ἀπεκρίνατο (26), ἀποδώσωσιν (101) [1], Ἀπόλλωνος (103), ἀπολύσειν (187), ἀπόπειραν (28), ἄρκτου (65), ἀρότης (38), ἀσμένως (104. 143), ἀτημελήτως (82) [2], αὐξηθεῖσαν (18) [3], αὐταῖς (55), αὐτὴν (4), αὐτῆς (84. 198), αὐτοῖς (46. 162. 226), αὐτὸν (5. 144. 148. 189. 218. 222), αὐτὸς (2), αὐτοῦ (40. 84. 101. 133. 169. 175. 206. 227) [4], αὐτῷ (82 bis. 138) [5], αὐτῶν (50. 54. 63. 137. 147. 149), ἀφείλατο (48), — ἐγένετο (75. 177), ἐγένοντο (43), ἐγκαλεσάντων (39), ἔγγελυς (63), εἶπε (85), εἶπεν (47. 51. 65. 110. 149), εἰπόντος (16. 68. 89. 90. 140. 168. 189. 210), εἰπούσης (95. 96. 105), εἰς (49. 85. 90. 104 bis. 159. 170), εἰςελθοῦσα (1), εἰςελθὼν (149), εἰςίασι (96), εἰςιὼν (57), ἑκατέρων (14), ἐκεῖθεν (230), ἐκεῖνοι (199), ἐκεῖνος (62. 143), ἐκείνου (152), ἐκπλαγέντος (5), ἐκροφήσασα (8) ἐκτριβομένης (59), ἔλεγε (57. 62), ἔλεγεν (100), ἐλέφαντα (217), ἐλθὼν (141), ἑλκύσαντες (13), ἐμέμφετο (207), ἐμὸν (228), ἔμπνουν (26), ἐν (3. 65. 69. 165. 185), ἐνέστη (101), ἐνταῦθα (32. 91. 193), ἐξαναστὰς (144. 148), ἐξαναστῆναι (145), ἐπανελθόντων (167), ἐπανελθοῦσα (225), ἐπανελθὼν (73. 223), ἐπὶ (51. 68. 120. 167. 176. 216), ἐπιγνόντος (168), ἐπικαθίσαντος (186), ἐπιλαθομένη

---

[1]) Ἀποδώσουσιν A, ἀποδῶσιν Schneider, — at cf. p. 409 n. 2 supra.

[2]) Τοῦ δὲ ἀ τ η μ ε λ ή τ ω ς ἐπελθόντος καὶ ὑπὸ τῆς παγίδος συλληφθέντος αἰτιωμένου τε τὴν ἀλώπεκα ὡς ἐνεδρεύσασαν αὐτῷ ἐκείνη ἔφη. Sed omnino legendum ἀμελετήτως cum M 78 cf. C 29 ὁ δ' ἀ π ε ρ ι σ κ έ π τ ω ς προςελθὼν καὶ συλληφθεὶς ὑπὸ τῆς παγίδος ὡς ἐξαπατήσασαν ἐμέμφετο τὴν ἀλώπεκα. In ἀμεταμελήτως a librario eadem vox [cf. Corais p. 295 n. 7; — perperam ἀμελλήτως temptabat C. E. Chr. Schneider ad F 4, quo loco idem vitium eadem ratione frustra sanaturus erat cf. M 2 et A 9] mutata est in F 69 τοῦ δὲ ἀ μ ε τ α μ ε λ ή τ ω ς ἐλθόντος καὶ ὑπὸ τῆς πάγης συλληφθέντος ᾐτιᾶτο παρ' αὐτοῦ ἡ ἀλώπηξ ὡς δελεάσασα καὶ ἐνεδρεύσασα αὐτῷ cf. insuper Epimythium οὕτως (ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οὕτω καὶ F) οἱ τοῖς πράγμασιν ἀ π ε ρ ι σ κ έ π τ ω ς ἐπιχειροῦντες ἐπὶ τῷ δυστυχεῖν (σὺν τῷ δυστυχεῖς εἶναι A) καὶ γέλωτα ὀφλισκάνουσιν (sic etiam A, non ὀφλισκάνουσι) MAF, ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ πράξεσί τισιν ἀ π ε ρ ι σ κ έ π τ ω ς ἐπιχειροῦντες δυστυχήμασι περιπίπτουσι C.

[3]) A αὐξυνθείσης habet, unde αὐξυνθεῖσαν elicuit Schneider, quod nihili est, αὐξυνθεῖσαν e Lachmanni coniectura Halmius (n. 28), quae forma sequioris aetatis est propria cf. F 232 ἐπεὶ δ' η ὐ ξ ύ ν θ η et 343 (ex Syntipa: n. 55) ὄντως α ὐ ξ υ ν θ ε ὶ ς ἐν ὑστέρῳ ἐπονεῖσθαί μοι ποιήσω σε. Utrobique fortasse citra necessitatem Corais (n. 71 et 383) ηὐξήθη et αὐξηθεὶς reposuit, nostro loco αὐξηθεῖσαν confirmat M 4 cl. F 20 ὅτε δὲ αὐξηθῶ, ubi ἀλλ' ὅταν α ὐ ξ η ν θ ῶ praebet C 12. Legitima forma in A bis redit: n. 188 [= M 194, F 145 cf. αὐξηθέντα C 117[a], sed εἰ γὰρ α ὐ ξ η ν θ ῶ σ ι Syntipas 57 sive C 117[b]] ἂν αὐξηθῇ et 205 [= M 210, C 273 sive F 319, ubi etiam ηὐξήθησαν pro ἐτράφησαν legitur] ηὐξημένους.

[4]) N. 142 ἀπαλλαγέντος δὲ [αὐτοῦ] τοῦ λέοντος recte Schneider αὐτοῦ seclusit cf. M 139 et F 93 cl. C 220.

[5]) N. 120 κιθαρῳδὸς ἄμουσος ἐν κεκονιαμένῳ οἴκῳ συνεχῶς ᾄδων ἀντηχούσης [δὲ] αὐτῷ τῆς φωνῆς, ὥστε αὐτὸν νομίσαι εὔφωνος εἶναι σφόδρα, καὶ δὴ ἐπαρθεὶς ἐπὶ τούτῳ ἔγνω δεῖν καὶ εἰς θέατρον εἰςελθεῖν molesta particula δὲ caret M 113, ubi etiam vocis νομίσαι nec vola nec vestigium adparet, quapropter ὥστε αὐτὸν in ᾠήθη αὐτὸν transformandum esse conieci cf. C 96 (sive F 248).

50), ἐπιστᾶσα (61), ἐπιστραφεὶς (98. 131), ἐπιστραφέντος (127), Ἑρμῆν (175), Ἑρμῆς (102), ἕρπων (218), ἑτέραν (95), ἑτέρας (201), ἕτερον (215), ἕτερος (65. 85), ἔτι (89), ἐτύγχανε (184), εὐτόνως (182), ἔφασαν (160), ἔφη (111. 126. 231), ἔχων (66), — ἡ (228), ἡμέρα (118), ἥτις (143), — ἰδὼν (179), ἱκετευούσης (18), — ὁ (65. 69. 71. 98) [1], ὁδοιπόρον (207), ὀθνείαις (6), οἱ (163), οἶκον (100), ὀλίγας (96), ὀλιγωρούμενον (215), ὀνηλάτης (177), ὀνηλάτου (186), ὄνος (92. 177), ὀρνιθοθήρα (189) [2], ὅτε (11. 111), ὅτι (85. 88), οὐ (60. 177. 196), οὐδαμῶς (125), οὐδὲν (57. 85 bis 219), οὐδενὸς (140), οὐκ (174), οὖσι (222), οὐχ (22. 130), ὄφις (192), — ὑὸς (220), ὑπὸ (41. 46. 77. 172), ὑποτυχόντες (121) [3], ὑποτυχοῦσα (94. 170), ὑποτυχοῦσαι (7), ὑποτυχὼν (90. 133. 136. 143. 174), ὕστερον (51) [4], — ὠνητοῦ (99), ὡς (40. 52. 75. 83. 173. 176. 185. 205. 219); — μηδὲ ἅπαξ (58), ἀρνεῖσθαι (138), εἰς (107) [5]; — οὐδὲ ἂν (175), ἀνθρώπους (56), αὐτῶν (23), ὕπνου (16).

## Excursus II (ad p. 393 n. 3).

In corpusculo Augustano epimythiis carent n. 45. 148. 169. 199. 216. 231. Quodsi de lacunis sarciendis quaeritur, inprimis sylloge M respicienda est, quae quidem omnes apologos praeter n. 231 commodis affabulationibus ornet:

---

[1]) N. 64 δηχθείς τις ὑπὸ κυνὸς ἐζήτει τὸν ἰασόμενον· εἰπόντος δέ τινος οὕτως, ὡς ἄρα δέοι αὐτὸν ἄρτῳ τὸ αἷμα ἐκμάξαντα τῷ δακόντι κυνὶ βαλεῖν ὑποτυχὼν [δὲ ὁ δηχθεὶς] ἔφη verba inclusa emblematis manifestam speciem praestant cf. M 62. Nulli dubitationi obnoxius est Syntipas 56 (sive C 25$^b$) ἀνήρ τις ὑπὸ κυνὸς καιρίως δηχθεὶς ἐζήτει τὸν τὴν αὐτοῦ πληγὴν θεραπεύσοντα. Ἕτερος δέ τις αὐτῷ συναντήσας ἔφη πρὸς αὐτόν· 'τοῦτο προσήκει ποιῆσαί σε· ἀπὸ τοῦ τῆς πληγῆς αἵματος ἐπισταλάξαι τῷ ψωμῷ καὶ τῷ δακόντι κυνὶ τὸν ψωμὸν ἐπιῤῥῖψαι· καὶ οὕτως ἡ πληγή σου θεραπευθήσεται'. Ὁ δὲ δηχθεὶς ἀντέφη αὐτῷ cf. praeterea C 25$^a$ et F 55.

[2]) Sic A, non ὀρνιθοθήρου, quae Schneideri est lectio.

[3]) In A ὑποτυχοῦντες repperi.

[4]) N. 23 μικρὸν δὲ ἐθεάσατο τοὺς ἀλεκτρυόνας πρὸς ἑαυτοὺς μαχομένους καὶ οὐ πρότερον ἀποστάντας πρὶν ἢ ἀλλήλους αἱμάξαι (perperam e Codice πατάξαι enotatum est) ἔφη πρὸς ἑαυτὸν Schneider, cui adstipulatur Halmius (n. 22), ὕστερον ὡς inter δὲ et ἐθεάσατο addidit, — genuinum supplementum διαλιπὼν ὡς M 26 servavit; — aliter C 10 et F 16.

[5]) N. 132 μηδὲ ἦν huc non pertinere supra p. 381 n. 3 monui. — Inter ἐθεάσαντο et τοὺς et in M 199 et in A 193 excidit: αὐτοὺς μαχομένους. ἐξῆλθον βαδίζοντες· ἰδόντες δὲ cf. C 261 (sive F 314). Minus recte Schneider supplevit: αὐτοὺς μαχομένους, ἐξῆλθον βαδίζοντες· οἱ δὲ ἰδόντες. — N. 171 ἐπειδὴ δὲ ἐθερμάνθη tacite Schneider δὲ adiunxit in Codice omisum; ἐπεὶ δὲ ἐθερμάνθη commendat F 130, sed editoris emendationem extra omnem dubitationis aleam ponit M 174

45) M 45: οὕτω καὶ τῶν ἀνθρώπων ἔνιοι ἑτέρων μοχθούντων ἑαυτοῖς βάρος προσποιοῦνται cf. F 39 et C 168ᵇ; C 168ᵃ; Bodl. 32; Babrius 52 sqq. et Epim.: οὕτω καὶ τῶν ἀνθρώπων ἔνιοι] οὕτως καὶ ἔνιοι F, οὕτως ἔνιοι C 168ᵇ. Saepissime in affabulationum introitu M offert: οὕτω (οὕτως n. 113, sed οὕτω A 120 cf. C 96 sive F 248) καὶ τῶν ἀνθρώπων (23. 28. 79. 175. 179), δανειστῶν (180), οἰκετῶν (161), ῥητόρων (113) ἔνιοι sive οὕτως (n. 69 οὕτως pro οὕτω scripsi) ἔνιοι τῶν ἀλαζόνων (219), ἀνθρώπων (60. 67. 69. 73. 128. 143. 202. 206. 225), ἀπαιδεύτων (187). Quae sermonis proprietas obscuratur n. 173 οὕτω καὶ τῶν ἀνθρώπων τινές, ubi cum M conspirat A 170, οὕτω πολλοὶ praebet C 251, sed οὕτω καὶ τῶν ἀνθρώπων ἔνιοι F 129 ‖ μοχθούντων ἑτέρων] ἑτέρων μοχθούντων FC utroque loco ‖ κάμνειν] πονεῖν C 168ᵇ ‖ αὐτοὶ προσποιοῦνται κάμνειν] ἑαυτοῖς βάρος προσποιοῦνται C 168ᵃ ‖ οὕτω — κάμνειν] ὅτι τινὲς ἐπ' ἀλλοτρίοις πόνοις [καὶ πλούτῳ καυχώμενοι][1]) μέγα φρονοῦσιν ὡς αὐτοὶ χειμασθέντες ἐν αὐτοῖς Bodl., κακοῦ πρὸς ἀνδρός ἐστι μακρὸν οἰμώζειν | ἄλλων πονούντων, αὐτὸς ὡςπερεὶ κάμνων Babr. v. 7 sq., ὁ μῦθος τοῦτο λέγει μηδαμῶς ἐν τοῖς πράγμασιν ἄλλων πονουμένων ἄλλους ἀδίκως οἰμώζειν καὶ πόνους ἀλλοτρίους ἑαυτοῖς ἐπιγράφειν Babr. Epim., ubi ἄλλους in ἡμᾶς mutandum, nec tamen supplemento Eberhardiano δεῖν (post οἰμώζειν) opus est[2]) cf. Babrius n. 45 ὁ μῦθος ἡμᾶς ἐκδιδάσκει μηδαμῶς τῶν οἰκείων ἀμελεῖν, 62 ὁ μῦθος διδάσκει ἡμᾶς μὴ μέγα φρονεῖν ἐν ταῖς εὐημερίαις, 77 ὁ μῦθος διδάσκει μηδαμῶς ἄνθρωπον ἐπαίνοις ἐξαπατᾶσθαι, 100 (= F 358) ὁ μῦθος ἐκδιδάσκει μὴ τάχιστα πᾶσι πιστεύειν, 114 ὁ μῦθος ἡμᾶς διδάσκει μηδαμῶς φυσιοῦσθαι (ὁ μῦθος δηλοῖ μὴ ἐπαίρεσθαι cod. Vaticanus Knoellii n. 114 p. 675) ἐπὶ τοῖς τοῦ βίου λαμπροῖς, 117 ὁ λόγος διδάσκει ἡμᾶς μηδὲν ψέγειν τὰς τοῦ θεοῦ περὶ τοὺς ἀνθρώπους ἀκαταλήπτους οἰκονομίας (ὁ λόγος δηλοῖ μηδένα τολμᾶν ψέγειν τὰς τοῦ θεοῦ περὶ τοὺς ἀνθρώπους ἀκαταλήπτους οἰκονομίας F 363 sive Vaticanus Knoellii n. 122 p. 676 sq.), — 86 ὁ μῦθος παραινεῖ μηδαμῶς σπεύδειν τινὰ πρὸς πλεονεξίαν τοῦ πέλας, — 97 ὁ

---

[1]) Knoellius καὶ πλούτῳ resecat, ego etiam καυχώμενοι interpolatori tribuo, quamquam haud male ὕπουλος (pro καὶ πλούτῳ cf. Bodl. 123) καυχώμενοι conicias. Verba seclusa videntur ex alia fabula irrepsisse cf. C 188ᵃ οὕτω καὶ τῶν ἀνθρώπων ἔνιοι ἐν ἀλλοτρίοις χρήμασιν ἐγκαυχώμενοι δοκοῦσιν αὐχεῖν (l. δοκοῦσιν εἶναί τινες cf. C 188ᵇ cll. F 68, M 94, A 101; δοκοῦσί τι ἔχειν ex Neveleti coniectura Corais edidit), ἐπειδὰν δὲ ταῦθα ἀπαιτηθῶσιν, ὁποῖοι τὸ πρότερον ἦσαν, εὑρίσκονται, ubi Bodl. 59 praebet: ὅτι ὀνειδός ἐστιν ἀνθρώπῳ ἐξ ἀλλοτρίου πλούτου κοσμεῖσθαι ἑαυτόν, ὅτι κατάδηλος πᾶς, εἰ καὶ φανερὸς γένηται, quo loco κατάδηλος in καταγέλως mutare non dubito cf. Babrius 72 ὅτι οἱ νόθον καὶ ἐπείσακτον αὑτοῖς περιθέντες κόσμον ἀλλοτρίῳ τε κάλλει σεμνυνόμενοι, εἴποτε τοῦ τοιούτου γυμνωθεῖεν, γέλως λοιπὸν τοῖς πρὶν ἀγνοοῦσιν ὁρῶνται. Nicephorus Basilacius 5 (sive C p. 368) τὸν αὐτὸν ἄρα τρόπον καὶ ὅσοι περιάπτοις κόσμοις ὑπεκρίθησαν τὸ ἐξαίρετον ἔχειν καὶ τὸ μακάριον, τῆς σκηνῆς φωραθείσης μετὰ γέλωτος καὶ τὴν ψυχὴν αὐτὴν προςαπώλεσαν.

[2]) Falsissime locum constituit Gitlbauer.

μῦθος ἡμᾶς ὑπομιμνήσκει τὸ ἐπιὸν πάντως δεινὸν προορῶντας μηδαμῶς ἀμελεῖν τῆς ἑαυτῶν σωτηρίας. Accedant M 13 ὁ λόγος διδάσκει (δηλοῖ A 3 et C 2[a]) μηδενὸς καταφρονεῖν, 43 (= A 43) ὁ λόγος ἡμᾶς διδάσκει μὴ ἀπερισκέπτως προσέρχεσθαι τοῖς πράγμασιν, 75 (= A 79 cf. C 268) ὁ λόγος διδάσκει μὴ σφόδρα ταῖς εὐτυχίαις ἐπαίρεσθαι, — C 403 ὁ μῦθος δηλοῖ μηδαμῶς πλησιάζειν et 244 ὁ μῦθος διδάσκει μὴ ἀμελεῖν ἡμᾶς ἐπὶ τῇ τῶν ἀναγκαίων φροντίδι, ἀλλὰ καιρῷ εὐθέτῳ τὰ πρὸς σωτηρίαν μεριμνᾶν. Hinc in M 16 ὁ λόγος δηλοῖ μὴ δεῖν τούτων ἀσμενίζεσθαι τὰς φιλίας reducenda codicis scriptura μηδέν, cui A 6 μὴ δὲ substituit.

148) M 145 ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι καιρῶν μεταβολαῖς οἱ σφόδρα δυνατοὶ τῶν ἀσθενεστέρων ἐνδεεῖς γίνονται cf. F 98; C 217 et Bodl. 77; Babrius 107, 17 sqq.: ὁ λόγος δηλοῖ] om. C Bodl., ὁ μῦθος δηλοῖ F ‖ καιρῶν μεταβολαῖς] ἐν καιρῷ μεταβολῆς F, at cf. M 235 οὕτω καὶ τῶν ἀνθρώπων οἱ παρὰ τὰς εὐθηνείας τοῦ μέλλοντος μὴ προνοούμενοι παρὰ τὰς τῶν καιρῶν (κενῶν M 104, recte A 111 et F 84) μεταβολὰς τὰ μέγιστα δυστυχοῦσιν cl. C 82 εἰ γὰρ ὁ καιρὸς μεταβάλοι (ἂν γὰρ ὁ καιρὸς μεταλλάξῃ τὴν φύσιν M 59, A 61, F 51) ‖ οἱ] καὶ οἱ F ‖ καιρῶν-γίνονται] οἱ εὐνοοῦντες ἄνθρωποι (ἀνθρώπων C), κἂν πένητες ὦσι (ὦσιν Bodl.), δύνανται ἐν καιρῷ καὶ δυνάστας (δυνάστην Bodl.) ὠφελεῖν C et Bodl. ‖ ὁ λόγος-γίνονται] σαφὴς ὁ μῦθος εὐνοοῦσιν ἀνθρώποις | σῴζειν πένητας μηδὲ τῶν ἀπελπίζειν. | εἰ καὶ λέοντα μῦς ἔσωσ' ἀγρευθέντα Babr., quod epimythium gravi corruptela laborat. Legendum videtur: σαφὴς ὁ μῦθος πᾶσιν οὗτος ἀνθρώποις | σῴζειν πένητας εὐνοοῦντας ἀνθρώπους | ἀτυχεῖς δυνάστας μηδόλως ἀπελπίζειν κτλ. De affabulationis introitu cf. Babrius 22, 14 φάσκει δὲ μῦθος τοῦτο πᾶσιν ἀνθρώποις, 38, 8 ὁ μῦθος ἡμῖν τοῦτο πᾶσι μηνύει, 56, 8 ὁ λόγος δοκεῖ μοι πᾶσι τοῦτο σημαίνειν, 96, 5 ὁ μῦθος ὀρθῶς πᾶσι τοῦτο μηνύει. Fabulae sententiam aliter expressit Iulianus Epist. VII 4 p. 339 (Hercher) πάντως που καὶ παρὰ τῶν ἡττόνων εἶναί τι χρηστὸν ὁ μῦς τὸν λέοντα σώσας ἀρκούντως δείκνυσιν.

169) M 172 (= C 252[a]): οὕτω πολλοὶ τῶν ἀνθρώπων δι' ἑαυτοὺς (αὑτοὺς C) δυστυχήσαντες τοὺς θεοὺς αἰτιῶνται cf. C 252[b] et F 62; C p. 388; Bodl. 33; Babrius 49: οὕτω-αἰτιῶνται] ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πολλάκις πράττοντες κακῶς καὶ σφαλλόμενοι (σφαλλόμενοι πράττοντες κακῶς F; πράττοντες κακῶς inclusit Halmius n. 316[b]) περιπίπτομεν κινδύνοις καὶ μεμφόμεθα τὴν τύχην C 252[b] et F, ὅτι πολλάκις οἱ ἄνθρωποι σφαλλόμενοι οὐχ ἑαυτοῖς, ἀλλὰ μᾶλλον τῇ τύχῃ τὸν μῶμον προσάγουσι (προσάπτουσι?) C p. 388, ὅτι πολλάκις σφαλλόμενοι καὶ κακῶς πράσσοντες κινδύνοις περιπεσόντες εἱμαρμένην καὶ τύχην καταμεμφόμεθα Bodl., ἔλεγχος τῶν εἱμαρμένην δοξαζόντων καὶ ἀνάγκῃ τὰ τῆς ἡμῶν ἐξουσίας ὑποβαλλόντων καὶ μὴ τῷ αὐτεξουσίῳ εἰς δέον κεχρημένων Babr.

199) M 204: ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι ἡ τῶν μηδὲν προσηκόντων ἐπιχείρησις οὐ μόνον ἀσύμφορος, ἀλλὰ καὶ ἐπιβλαβής ἐστιν cf. F 162; C $309^{a}$; Syntipas 46 (sive C $309^{b}$); Bodl. 93: ὁ λόγος] ὅλως F; corr. Corais p. 402 n. 2; cf. p. 407 n. 5 supra ‖ ὁ λόγος δηλοῖ] om. Bodl., ὁ μῦθος δηλοῖ C utrobique ἡ τῶν μηδὲν προσηκόντων ἐπιχείρησις] <ὁ> τὸ μὴ προσῆκον αὐτῷ ἐπιχειρῶν C $309^{a}$ ‖ ὅτι-ἐστιν] ὡς οἱ τὰ ὑπὲρ αὐτοὺς μιμεῖσθαι πειρώμενοι ἑαυτοῖς ἐντεῦθεν ἐπάγουσι κίνδυνον C $309^{b}$, ὅτι μηδείς, ὃ μὴ ἔμαθε μηδὲ ἐκ πείρας ἔχει, πειράτω ποιεῖν· σὺν τῇ ἀπειρίᾳ γὰρ καὶ κακόν τι προσλήψεται Bodl.

216) M 226: ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι οὐ μεμπτοί, ὅσοι προειδότες τοὺς μέλλοντας κινδύνους, πρὶν παθεῖν, φυλάττονται. Aliter C 53, F 183, Syntipas 53 (sive C p. 309): ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι] ὅλως (corr. Corais p. 308 n. 2 cf. p. 407 n. 5 supra) δηλοῖ, ὅτι F, ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι C, ὁ μῦθος δηλοῖ, ὡς Syntip. οὐ-φυλάττονται] τοὺς ἄρχοντας οὐ διὰ κάλλος μόνον, ἀλλὰ καὶ ῥώμην καὶ φρόνησιν ἐκλέγεσθαι δεῖ C, ἀεὶ τοὺς δυνάστας μὴ κάλλει, ἀλλὰ φρονήσει καὶ δυνάμει δεῖ κοσμεῖσθαι F, τὸ βασιλεύειν οὐ τοῖς τῷ κάλλει φαιδρυνομένοις ἁρμόττει, ἀλλὰ τοῖς ῥωμαλέοις καὶ ἐν γενναιότητι διαπρέπουσιν Syntip.

N. 231 in M deest; aptam affabulationem suppeditat F 196: ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ὁ κακὸς οὐ πρεπει ἐλεηθῆναι, κἂν μέγας ᾖ κἂν μικρὸς cf. insuper C 292 ὅτι κακῷ οὐ πρέπει ἐλεηθῆναι, κἂν μέγας ᾖ κἂν μικρός, ubi dativus κακῷ commodior, nec tamen necessarius est cf. Sophocles Electr. 1254 sq. ὁ πᾶς ἂν πρέποι παρὼν ἐννέπειν | τάδε δίκᾳ χρόνος, fragm. 285 (quod exemplum huc trahendum esse videtur) ὀξηρὸν ἄγγος οὐ μελισσοῦσθαι πρέπει, — O. R. 9 sq. ἐπεὶ πρέπων ἔφυς | πρὸ τῶνδε φωνεῖν, fr. 592, 2 σιγώμενος γάρ ἐστι θρηνεῖσθαι πρέπων, Plutarchus Vit. Poplicolae XVII 7 p. 106 D οὐκ ἄχθομαι τῇ τύχῃ διαμαρτὼν ἀνδρὸς ἀγαθοῦ καὶ φίλου μᾶλλον ἢ πολεμίου Ῥωμαίοις εἶναι πρέποντος. Accedat R. Kuehner, ausführliche Grammatik d. griech. Sprache vol. II 2 p. 599.

Praeterea minus placet epimythii initium, a M plane alienum, in A vix quattuor locis obvium [n. 158 ὅτι τὸ καλὸν οὐκ ἐν πλήθει δεῖ μετρεῖν, ἀλλὰ πρὸς ἀρετὴν ἀφορᾶν [1]), 219 ὅτι κρεῖττον περίβλεπτον εἶναί τινα <ἐν> πενιχρᾷ ἐσθῆτι ἢ ζῆν ἀδόξως ἐν πλούτῳ γαυρούμενον [2]), 229 ὅτι πολλοὶ ἐν φιλονεικίαις τῶν φρονιμωτέρων παρακούσαντες ἑαυτοὺς ἔβλαψαν [3]), 230

[1]) Melius C 215 ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι τὸ καλὸν οὐκ ἐν πλήθει, ἀλλ' ἀρετῇ et F 106 ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τὸ καλὸν οὐκ ἐν πλήθει, ἀλλ' ἐν ἀρετῇ. Aliter F 189 et Bodl. 142.

[2]) Cf. F 376 et Bodl. 47; aliter Babrius 65, 7 sq.

[3]) Verba ὁ μῦθος δηλοῖ praemittit C $61^{a}$; adde F 193 ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πολλοὶ τῶν ἀνθρώπων ἐν ταῖς φιλονεικίαις τῶν φρονιμωτέρων αὐτῶν παρακούσαντες ἑαυτοὺς καταβλάπτουσιν. Aliter Ignatius 53 (sive C $61^{b}$)

ὅτι μὴ δεῖ ἐπὶ τῶν ἐλαχίστων τοῦ θείου δεῖσθαι, ἀλλ' ἐπὶ τῶν ἀναγκαίων [1])], cum formula ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι sententiam inchoet n. 1. 8. 10. 12. 16. 18. 23. 24. [2]) 29. 32. 33. 34. 36. 39. 42. 44. 46. 48. 51. 52. 53. 54. 58. 60. 62. 65. 66. 67. 70. 80. 86. 91. 92. 94. 99. 100. 106. 112. 113. 120. 141. 147. 152. 153. 156. 159. 160. 164. 167. 168. 171. 175. 178. 181. 186. 189. 191. 194. 196. 200. 206. 212. 213. 215. 217. 218. 221. 223. 224. 225. 227. 228 cf. etiam ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι 165, ὁ μῦθος οὗτος δηλοῖ, ὅτι 61, ὁ λόγος διδάσκει, ὅτι 222 el. n. 4 ὁ λόγος δηλοῖ, ὡς οὕτω.

Quodsi epimythia in A omissa in disputationem deducuntur, praetermitti non possunt fabulae tres:

## XCIX.

Ἑρμῆν τις ξύλινον κατασκευάσας καὶ προσενεγκὼν εἰς ἀγορὰν ἐπώλει μηδενὸς δὲ ὠνητοῦ προσιόντος ἐκκαλέσασθαί τινας βουλόμενος ἐβόα, ὡς ἀγαθὸν δαίμονα καὶ κέρδους θεωρητικὸν πιπράσκει. Τῶν δὲ παρατυχόντων τις ἔφη· 'ὦ ἄνθρωπε, τί <τοῦτον> τοιοῦτον εὐεργέτην ὄντα πωλεῖς; δέον ἐστὶ τῶν παρ' αὐτοῦ ὠφελειῶν ἀπολαύειν σε'. Κἀκεῖνος ἀπεκρίνατο λέγων· 'ὅτι ταχείας τινὸς ὠφελείας ἐπιδέομαι, αὐτὸς δὲ βραδέως εἴωθε τὰ κέρδη ποιεῖν'.

Ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι διδόασι κατὰ τῶν ἀμεινόνων τὰ θράση οἱ καιροί.

## CLIX.

Λύκος ἀρνίον ἐδίωκε· τὸ δὲ εἰς τὸ ἱερὸν κατέφυγε. Προσκαλουμένου δὲ τοῦ λύκου καὶ λέγοντος, ὅτι θυσιάσει αὐτὸ ὁ ἱερεύς, ἔφη πρὸς αὐτόν· 'ἀλλ' αἱρετώτερόν μοί ἐστι θυσίαν γενέσθαι ἢ ὑπὸ σοῦ διαφθαρῆναι'.

---

[1]) Ante ὅτι librarius rubro adscripsit ὁ μῦθος (per compendium), unde reponendum ὁ μῦθος δηλοῖ μὴ δεῖν cum C 62 cf. A 3. 6 (ὁ λόγος δηλοῖ c. inf.) el ὁ λόγος διδάσκει 79. 144, ὁ λόγος ἡμᾶς διδάσκει 43, οὗτος ὁ λόγος ἡμᾶς διδάσκει 195. Similiter M 233 ἀτὰρ οὖν καὶ ἡμᾶς ὁ λόγος διδάσκει μὴ δεῖν ἐπὶ τὰ ἐλάχιστα καὶ ἀκίνδυνα πράγματα ἐπευθὺς τὸ θεῖον ἀνακαλεῖν, ἀλλ' ἐπὶ τὰς μείζους ἀνάγκας, ubi ἐπευθὺς τὸ θεῖον pro corrupta memoria ἐπ' εὐήθειαν temptavi cf. F 194 ὁ λόγος (ὅλως F: corr. Corais p. 313 n. 3 cf. p. 407 n. 5 supra) δηλοῖ, ὅτι οὐ δεῖ ἐπὶ τὰ ἐλάχιστα καὶ ἀκίνδυνα πράγματα ἐπευθὺς (εὐθὺς Corais), τοὺς θεοὺς ἐπικαλεῖσθαι, ἀλλ' ἐπὶ ταῖς μείζοσιν ἀνάγκαις καὶ συμφοραῖς.

[2]) Ex codice χρόνος pro λόγος enotavi; particulam ὅτι A bis omittit: n. 5 ὁ λόγος δηλοῖ (ὅτι adiungit M 15, τοῦτο C 289 sive F 328; nihil monet Schneider) πολλοὶ διὰ τὸ ἴδιον κέρδος οὐκ ὀκνοῦσιν οὐδὲ τοῖς ἀδυνάτοις ψευδομαρτυρεῖν et 33 ὁ λόγος δηλοῖ (ὅτι M 33 cf. ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι C 11 et F 30) ὧν πρόχειρος ἡ δι' ἔργων πεῖρα, περὶ τούτων πᾶς λόγος περιττός ἐστι.

Ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι οἱ φιλονεικοῦντες τοῖς κρείττοσι τῆς ἑαυτῶν σωτηρίας καταφρονοῦσι.

## CCXV.

Τοὺς πιθήκους φασὶ δύο τίκτειν καὶ τὸ μὲν <ἓν> τῶν γεννημάτων στέργειν καὶ μετ' ἐπιμελείας τρέφειν, τὸ δὲ ἕτερον μισεῖν καὶ ἀμελεῖσθαι. Συμβαίνει δὲ κατά τινα θείαν τύχην τὸ μὲν ἐπιμελούμενον ἀποθνήσκειν, τὸ δὲ ὀλιγωρούμενον ἀναθάλλειν.

Ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι πάσης προνοίας ἡ τύχη δυνατωτέρα καθέστηκε.

N. 99 cum leni lectionis varietate offerunt M 170, C 148, F 128, sed plurimum affabulationes differunt, quae quidem ad apologum ipsum optime quadrent: πρὸς ἄνδρα αἰσχροκερδῆ μηδὲ θεῶν πεφροντικότα ὁ λόγος εὔκαιρος (M), πρὸς ἄνδρα αἰσχροκερδῆ καὶ τὸ θεῖον περιφρονοῦντα (C), πρὸς ἄνδρα αἰσχροκερδῆ καὶ τῷ θεῷ [1]) περιφρονοῦντα (F). Sylloges Augustanae memoriam ineptissimam esse in oculos incurrit, ratio vero in promptu est, quae rei naturam evolvat. Nimirum simul cum epimythio fabulae nostrae apologus de lupo et agno intercidit in C 139[a] et F 75 servatus, ad quem verba ὁ λόγος—καιροὶ accommodatissima sunt:

Ἔριφος ἐπί τινος δώματος (ὑψηλοτάτου addit F) ἑστώς, ἐπειδὴ λύκον (λύκον τινὰ F) παριόντα εἶδεν, ἐλοιδόρει καὶ ἔσκωπτεν (ἐλοιδόρει F) αὐτόν. Ὁ δὲ λύκος ἔφη· 'ὦ οὗτος, οὐ σύ με λοιδορεῖς, ἀλλ' ὁ τόπος' (ἐν ᾧ ἵστασαι adnectit F).

Ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι πολλάκις καὶ ὁ τόπος καὶ ὁ καιρὸς δίδωσι τὸ θράσος κατὰ τῶν ἀμεινόνων (κατὰ τῶν ἀμεινόνων τὸ θράσος F).

Simillimum fabulae desideratae exemplum proponi vel inde sequitur, quod eodem modo atque narratio de statuario [2]) a littera E incipit. In aliis eiusdem argumenti apologis alia est primi verbi ratio, quapropter etiam epimythia plus minusve distant cf. Bodl. 81 (= C 139[d], ubi affabulatio omissa est) ὅτι καὶ καιροὶ φέρουσι καὶ τόπων διαστάσεις εὐτελίζεσθαι καὶ ἀτιμάζεσθαι παρὰ εὐτελῶν καὶ ἀγενῶν ἐνδόξους, Babrius 96, 5 sq. ὁ μῦθος ὀρθῶς πᾶσι τοῦτο μηνύει· | μηδεὶς διὰ καιρὸν ἰσχύων τι γαυρούσθω [3]), Epim. κατάλληλος ὁ μῦθος τοῖς διὰ περίστασιν καὶ τόπον κατὰ τύχην τῶν δυνατωτέρων κατεπαιρομένοις, Ignatius 9 (sive C 139[c]) καιρῷ μὴ θρασύνεσθαι, C 139[b] ὁ μῦθος πρὸς τοὺς ὑπομένοντας ὕβριν ὑπὸ ἀναξίων ἀνθρώπων διὰ φόβον ὑψηλοτέρων (adde: τόπων). [4])

---

[1]) Corais p. 346 n. 3 τοῦ θεοῦ vel τὸν θεὸν coniecit, sed rectius τῶν θεῶν emendandum esse statuas.

[2]) M 170, C 148, F 128 in exordio ξύλινόν τις Ἑρμῆν conspirat.

[3]) Legendum videtur: διὰ καιρὸν ἰσχύοντα μή τι γαυροῦσθαι.

[4]) Cf. in fabulae initio: ἀρνὸς ἐφ' ὑψηλοῦ τόπου ἱστάμενος.

Genuinum fabulae 159. epimythium praebent C 228 et F 107, ubi itidem vox λύκος in apologi principio conlocatur: ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι, ᾧ διάκειται τὸ ἀποθανεῖν, κρείττων ἐστὶν ὁ εἰς δόξαν θάνατος (C), ὁ λόγος (ὅλως F; Corais p. 378 n. 2 cf. p. 407 n. 5 supra) δηλοῖ, ὅτι, οἷς ἐπίκειται τὸ ἀποθανεῖν, κρείττων ἐστὶν ὁ μετὰ δόξης θάνατος cf. praeterea Avianus 42, 15 sq. sic quotiens duplici subeuntur tristia casu | expedit insignem promeruisse necem. Aliter Babrius Knoellii (cod. Vatic. 777 n. 135 p. 687 = n. 132 Gitlbauer) ὅτι ταῖς τῶν δολερῶν ἀνδρῶν κακοβουλίαις μὴ πιστευτέον προορωμένους τὸν τούτων δόλον, κἂν χρηστολογίαις ἐξαπατᾶν βουληθῶσιν.

Sylloges Augustanae memoriam explanat n. 160:

Λαγωοί ποτε πολεμοῦντες ἀετοὺς παρεκάλουν εἰς συμμαχίαν ἀλώπεκας. Αἱ δὲ ἔφασαν· 'ἐβοηθήσαμεν ἂν ὑμῖν, εἰ μὴ ᾔδειμεν, τίνες ἦτε καὶ τίσι πολεμεῖτε'.

Ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι οἱ φιλονεικοῦντες τοῖς κρείττοσι σὺν τῷ διαμαρτεῖν καὶ καταπαίζονται.

Epimythium quidem ab ipsius narrationis indole non abhorret, sicuti etiam aliis fabellis eadem sententia apte adnectitur cf. A 21 (= M 12) οὕτως ἡ πρὸς τοὺς ὑπερέχοντας ἅμιλλα πρὸς τῷ μηδὲν ἀνύειν κα ἐπὶ συμφοραῖς προςκτᾶται γέλωτα, 124 (= M 124 et C 98 sive F 250) οὕτω καὶ τῶν ἀνθρώπων οἱ τοῖς κρείττοσιν ἀνθαμιλλώμενοι (ἁμιλλώμενοι C) πρὸς τῷ (τὸ M) τῶν ἴσων (ἧς[s] M) μὴ ἐφικέσθαι καὶ γέλωτα ὀφλισκάνουσι (ὀφλισκάνουσιν M) cl. n. 103 οὕτως οἱ τοῖς (sic legitur in A, non τοῖσι, quod cum Schneidero praebet Halmius n. 151) ἀνθαμιλλώμενοι γέλωτος ἄξιοί εἰσιν, ubi M 97 et C 187 (sive F 284) offerunt: οὕτως οἱ τοῖς κρείττοσιν ἀνθαμιλλώμενοι (ἁμιλλώμενοι C) πρὸς τῷ ἐκείνων (τὸ ἐκείνου M) μὴ ἐφικέσθαι (ἐφικνεῖσθαι C) καὶ γέλωτα ὀφλισκάνουσιν (ὀφλισκάνουσι C).[1]) Optime tamen ad narrationem de leporibus et vulpibus gemella eiusdem apologi exempla M 157, C 107[a], F 108 affabulationem trahunt, quae quidem cum n. 159 nullo pacto cohaerere potest: ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι οἱ φιλονεικοῦντες τοῖς κρατοῦσι τῆς ἑαυτῶν (ἑαυτῆς Cod.) σωτηρίας <adde: καταφρονοῦσιν> (M), ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οἱ τοῖς κρείττοσι φιλονεικοῦντες τῆς ἑαυτῶν σωτηρίας καταφρονοῦσι (C), ὁ μῦθος τοῦτο δηλοῖ, ὅτι οἱ φιλονεικοῦντες τοῖς κρείττοσι τῆς ἑαυτῶν σωτηρίας καταφρονοῦσι (F).[2]) — Quae cum ita sint, fabulae 160 pristinum epimythium apologo praegresso prave adhaesisse, tum vero novam affabulationem compositam esse efficitur. Ean-

---

[1]) Idem est color n. 82 (= M 78, F 69) οὕτως (ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οὕτω καὶ F) οἱ τοῖς πράγμασιν ἀπερισκέπτως ἐπιχειροῦντες σὺν τῷ δυστυχεῖς εἶναι (ἐπὶ τῷ δυστυχεῖν MF) καὶ γέλωτα ὀφλισκάνουσιν (ὠφλισκάνουσιν M librarii lapsu).

[2]) Aliter Syntipas 22 (sive C 107[b]) ὁ μῦθος οὗτος ἐλέγχει τοὺς τοῖς ἰσχυροτέροις προςκρούοντας καὶ ἑαυτοῖς ἐξ αὐτῶν κίνδυνον ἐπάγοντας.

dem rationem patefaciunt F 57 ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τοὺς γνησίους τῶν φίλων αἱ συμφοραὶ δοκιμάζουσιν· ἤ· ἀπέχεσθαι χρὴ φίλων, οἵτινες ἐν κινδύνοις οὐ βοηθοῦσιν οὐδὲ παραμένουσι, 59 ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οὕτω καὶ οἱ πρὸς τὸν καιρὸν καὶ τοὺς κρείττονας αὐτῶν μὴ ἀνθιστάμενοι κρείττονές εἰσι τῶν πρὸς μείζονας φιλονεικούντων· ἤ· ὅτι οὐ δεῖ τοῖς κρείττοσιν ἀντιπίπτειν, 66 ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ὁμοίως πολλάκις τινὲς δοκοῦντες ἔχειν τι χρήσιμον λανθάνουσιν ἑαυτοὺς βλαπτόμενοι δι' ἐκείνου· ἢ οὕτως· πολλάκις (l. ἤ· οὕτως πολλάκις) ἐν κινδύνοις οἱ μὲν ὕποπτοι τῶν φίλων σωτῆρες γίνονται, οἱ δὲ σφόδρα ἐμπιστευθέντες προδόται, 96 ὁ λόγος (ὅλως F; corr. Corais p. 290 n. 6 cf. p. 407 n. 5 supra) διδάσκει, ὅτι εὐλόγως ἐκεῖνοι ἄχθονται, οἳ τῶν ἰδίων καμάτων τοὺς τυχόντας ὁρῶσι τὰς ἐπικαρπίας ἀποφερομένους· ἤ· ὅτι πολλοὶ μόχθον καὶ κόπον ἑτέρων ποιοῦνται ἴδιον κέρδος, 101 ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι γνώμην κακούργου καὶ πλεονέκτου λόγος οὐ πείθει, κἂν ἀληθὴς τυγχάνῃ· ἤ· ὅτι οἷς πρόθεσίς ἐστιν ἀδικεῖν, παρ' αὐτοῖς οὐδὲ δικαία ἀπολογία ἰσχύει, 118 ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι, εἰ καὶ τὰ ἄλογα ζῷα αἴσθησιν ἔχουσι τοῦ καλοῦ, πῶς οὐ δεῖ ἡμᾶς τοὺς εὐεργέτας ἀμείβεσθαι; ἤ· δύνανται καὶ τὰ μικρὰ (supple: ζῷα) τοῖς εὐεργέταις μεγάλας ἀμοιβὰς παρέχειν, — Babrius 1 ὅτι δεῖ ἐκ τῶν προσφερομένων γινώσκειν τὴν ἑκάστου διάθεσιν καὶ ὅτι ἡ σοφία τῆς δυνάμεως διαφέρει, 15 ὅτι οὐ δεῖ τοὺς μεγιστᾶνας κινεῖν εἰς ὀργὴν κατὰ τῶν ὑπεξουσίων· εἰς ματαιολογίας καὶ ἔριδας, 16 διδάσκει ἡμᾶς ὁ μῦθος, ὅτι οὐ χρὴ πᾶσι πιστεύειν, γυναικὶ δὲ ἥκιστα μεγάλα καὶ πάμπολλα ἐπαγγελλομένῃ· πρὸς τὸν κεναῖς ἀπάταις ἐξαπατηθέντα cf. n. 95 ὅτι τοὺς τοῖς προλαβοῦσι κακοῖς μὴ σωφρονισθέντας εἰκότως ἄρρητα κακὰ διαδέχεται, ἐν ᾧ καὶ ἔλεγχος κατὰ φιλοδόξων. — Quae epimythia in aliis corpusculis in singulas partes digeruntur cf.

F 57) a] M 64, A 65, C 249ᵃ, Georgides Gnomol. p. 90 Boiss. (= Babr. n. 198 Gitlbauer): μῦθος] λόγος MAC ‖ ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι om. Georg. ‖ δοκιμάζουσιν] δοκιμάσουσιν A (sed ipse librarius litteram paragogicam delendam esse significavit), δοκιμάζουσι C; — b] C 249ᵇ: ἀπέχεσθαι] ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἀπέχεσθαι C ‖ ἐν κινδύνοις οὐ βοηθοῦσιν οὐδὲ παραμένουσι] ἐν καιρῷ περιστάσεως οὐ παραμένουσι βοηθεῖν C cf. F in fabulae textu: ἀπὸ τοῦ νῦν τοιούτοις μὴ συνοδοιπορεῖν φίλοις, οἳ ἐν κινδύνοις οὐ παραμένουσιν.

F 59) a] C 143ᵃ: οὕτω καὶ om. C, at cf. F 2. 4. 8. 46. 48. 55. 69. 88. 92. 135. In C eadem formula deprehenditur n. 4ᵃ. 8ᵃ. 33 (sive F 226). 96 (sive F 248). 98 (sive F 250); adde 3ᵃ ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι καὶ τῶν ἀνθρώπων οὕτως ἀλόγιστοί εἰσιν οἱ δι' ἐλπίδα μειζόνων ἀδήλων τὰ ἐν χερσὶ προϊέμενοι. Cf. praeterea in epimythiorum introitu: ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι οὕτως καὶ (C 216 sive F 295), ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οὕτω (F 26. 86; C 85 et 93 sive F 239 et 246), ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οὕτως (F 176), ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ὁμοίως (F 66) cll. F 6 ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι οὗτος ὁ λόγος ἁρμόζει ἐκείνοις, οἳ τὰς συμβουλίας ποιοῦνται πρὸς τοὺς πέλας

οὐ δι' εὔνοιαν, ἀλλὰ διὰ τὸ αὐτοῖς συμφέρον, 16 ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ὁ λόγος πρὸς φρονίμους ἀνθρώπους, οἵτινες ῥᾳδίως φέρουσι τὰς ἐκ τῶν πέλας ὕβρεις, ὅταν ἴδωσιν αὐτοὺς μηδὲ τῶν οἰκείων ἀπεχομένους, 157 ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι τοὺς δολίους ὑποκριτὰς τοὺς λέγοντας φιλεῖν ὁ μῦθος ἐλέγχει ‖ πρὸς τὸν καιρὸν καὶ τοὺς κρείττονας] τῷ καιρῷ καὶ τοῖς κρείττοσιν C ‖ κρείττονές εἰσι] κρείττους εἰσὶ C; — b] in simili fabula C p. 342 ὅτι τοῖς κρατοῦσιν οὐ δεῖ ἀνθίστασθαι, ἀλλὰ μᾶλλον ὑπείκειν, Bodl. 29 ὅτι οὐ δεῖ ἀνθίστασθαι τοῖς κρατοῦσιν ἐνδόξοις, ἀλλ' ὑποτάσσεσθαι καὶ ὑπείκειν, C 143[b] ὅτι οὐ δεῖ ἀνθίστασθαι τοῖς κρατοῦσιν, ἀλλ' ὑποτάσσεσθαι καὶ ὑπακούειν, Babrius 36, 13 sq. ὁ δέ γε μῦθος ἐμφαίνει | μὴ δεῖν μάχεσθαι τοῖς κρατοῦσιν, ἀλλ' εἴκειν, Ignatius 16 (sive C 143[d]) βίᾳ καιροῦ μὴ ἀντιτάσσεσθαι. Magis ad a) accedunt M 221 ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι πρὸς τὰ χαλεπὰ τῶν πραγμάτων τὸ εἴκειν τοῦ ἀνθίστασθαι ἀσφαλέστερον, A 213 ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι πρὸς τὰ ἀσφαλῆ (sic, non ἀσφελῆ, videlicet propter ἀσφαλέστερον A) τῶν πραγμάτων τὸ εἴκειν τοῦ ἀντιτάσσεσθαι ἀσφαλέστερόν ἐστιν (litteram paragogicam ipse Codex habet), F 180 ὁ λόγος (ὅλως F; corr. Corais p. 341 n. 4) δηλοῖ, <ὅτι adiecit Corais> [1]) πρὸς τὰ χαλεπὰ τῶν πραγμάτων τὸ εἴκειν καὶ ὑποτάσσεσθαι ἀσφαλέστερον (ubi verba τοῦ ἀντιτάσσεσθαι ante ἀσφαλέστερον videntur intercidisse), C 143[c] ὁ καιροῖς ὑπείκων οὐκ ἐκπεσεῖται τοῦ σῴζεσθαι.

F 66) a] inflectit C 181[b] ὁ μῦθος, ὅτι πολλάκις (τινὲς adde. — Corais πολλοὶ πολλάκις ex coniectura scripsit) ἔχοντές <τι> χρήσιμον λανθάνουσι καὶ ἐξ ἐκείνου βλάβην αὐτοῖς (l. αὑτοῖς) ἐγγίνεσθαι οἴονται, qua cum sententia cf. Ignat. 14 (sive C 181[c]) πολλάκις τις ὠφελεῖται, ἐξ ὧν δοκεῖ βλάπτεσθαι; — b] M 71, A 75, C 181[a]: οὕτως] οὕτω MAC ‖ γίνονται] ἐγένοντο MA. — Plane aliter Babrius 43, 16 sqq. περὶ τῶν σεαυτοῦ πραγμάτων ὅταν κρίνῃς, | μηδὲν βέβαιον ὑπολάβῃς προγινώσκων | μηδ' αὖτ' ἀπογνῷς μηδ' ἀπελπίσῃς· οὕτω | σφάλλουσιν ἡμᾶς ἐνίοθ' αἱ πεποιθήσεις, Bodl. 34 ὅτι περὶ πράγματός τινος ἐὰν διακρίνῃς καλὸν εἶναι, μὴ ἔχῃς (λέγῃς cum Hartelio Knoellius) βεβαίως (βέβαιον codices, quod in βέβαιόν τι editor mutavit) περὶ τούτου· πολλάκις γὰρ σφάλλουσιν αἱ ἐλπίδες, εἰς ἃς ἐπερειδόμεθα, unde in C 181[d] ὅτι περὶ πράγματός τινος, ἐὰν διακρίνῃς, καλόν εἶναι μὴ ἔχειν βεβαίως περὶ τούτου· πολλάκις γὰρ σφάλλουσιν αἱ ἐλπίδες, εἰς ἐπερειδόμεθα verba καλὸν εἶναι ad διακρίνῃς trahenda esse adparet, — Syntip. 16 (sive C p. 366) ὁ μῦθος οὗτος δηλοῖ, ὡς οὐ χρή τινα τῶν ἐν ἑαυτῷ τι ἐπαινεῖν, εἰ μὴ τὰ εὔχρηστα καὶ ἐπωφελῆ.

---

[1]) F 3 ὁ μῦθος δηλοῖ· πρὸς τοὺς ὑπερέχοντας ἅμιλλαν μηδὲν ἀνύειν καὶ ἐπὶ συμφοραῖς προςκτῶνται γέλωτα corruptela laborat. Rectam scripturam ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι ἡ πρὸς τοὺς ὑπερέχοντας ἅμιλλα πρὸς τῷ μηδὲν ἀνύειν καὶ ἐν ταῖς (vel ἐπὶ ταῖς) συμφοραῖς προςκτᾶται γέλωτα adsecutus est Corais p. 370 n. 2, citra necessitatem vero ἐπὶ συμφοραῖς in dubium vocavit cf. M 12 et A 2.

F 96) a] M 142, A 145: διδάσκει] δηλοῖ M ‖ ὁ λόγος διδάσκει ὅτι om. A ‖ ἐκεῖνοι] ἐκείνου M mendose ‖ καμάτων] πόνων M ‖ ἀποφερομένους] ἐπιφερομένους A; — b] cf. C $39^{a}$ ἄλλων κοπιώντων ἄλλοι κερδαίνουσιν, $39^{b}$ πολλοὶ κοπιῶντες καὶ μοχθοῦντες ἑτέροις κέρδος προσκτῶνται.

F 101) a] Bodl. 83 cl. Babr. 89: ὁ μῦθος δηλοῖ om. Bodl. ‖ πλεονέκτου] πονηροῦ πλεονέκτου Bodl. ‖ τυγχάνῃ] ὑπάρχῃ Bodl. ‖ ὁ μῦθος — τυγχάνῃ] ὅτι τοὺς φύσει πονηροὺς καὶ ἀδίκους οὐδ' εὔλογος ἀπολογία πείθει Babr.; — b] M 150, A 152, C $229^{a}$: ὅτι] ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι MA, ὁ λόγος δηλοῖ C, ubi ὅτι periit[1]) ‖ πρόθεσίς ἐστιν] ἡ πρόθεσίς ἐστιν M, πρόθεσις C ‖ ἀδικεῖν] ἀδικεῖν τοὺς πάντας M ‖ οὐδὲ] οὐ C ‖ δικαία ἀπολογία] δικαιολογία C ‖ ἰσχύει] ἐστὶν (sic) A; — aliter Ignatius 35 (sive C $229^{c}$) ἀδικία προφάσεως εὔπορος sive (cf. Corais p. 427) πρὸς τοὺς ἀδεῶς φανερῶς ἀδικοῦντας.

F 118) a] cf. A 165 ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι καὶ τὰ ἄλογα ζῷα αἴσθησιν ἔχει καὶ ἀλλήλοις ὠφελεῖ et C 41 ὁ μῦθος δηλοῖ, ὅτι δεῖ τοῖς εὐεργέταις χάριν ἀποδιδόναι.

Babrius 1) aliter Bodl. 11 ὅτι ἐκ τῆς ἀρχῆς τὰ τέλη δεῖ προσκοπῆσαι, καὶ τότε δὴ λοιπὸν ἑαυτοὺς (ἑαυτοῖς Cod.) περισώζειν, C p. 397 ὅτι ἐκ τῆς ἀρχῆς τὸ τέλος δεῖ προϊδεῖν καὶ ἑαυτοὺς περισώζειν, — C $279^{a}$ (sive F 323) ὁ μῦθος δηλοῖ μηδαμῶς πλησιάζειν τοὺς πόῤῥωθεν χαλεπὰ πράττοντας, Ignatius 34 (sive C $279^{b}$) γνωσιμαχεῖν ἐκ πείρας διδασκόμεθα.

Babrius 15) cf. Bodl. 10 ὅτι τῶν ὑπεξουσίων ἡ ἔρις τοὺς δεσπότας πείθει ὀργίλους εἶναι κατὰ τῶν ὑπηκόων, unde fortasse διὰ ματαιολογίας καὶ ἔριδας reponendum pro εἰς ματαιολογίας καὶ ἔριδας.

Babrius 16) cf. Bodl. 1 et C p. 337 ὅτι κεναῖς ἐλπίσιν ἀπατᾶται ὁ πειθόμενος γυναικῶν ὁμιλίαις, C $138^{b}$ ἄπορον ἐλπὶς μὴ προσλαβοῦσα τὴν ἔκβασιν, — prorsus differunt M 153 οὗτος ὁ λόγος ἁρμόσειεν ἂν πρὸς ἐκείνους τοὺς ἀνθρώπους, οἳ τοῖς λόγοις οὐκ ἔχουσι τὰ ἔργα ἀκόλουθα, A 153 ὁ λόγος ἁρμόσει τοῖς μὴ τοῖς λόγοις τὰ ἔργα ἔχουσιν ἑπόμενα, C $138^{a}$ ὁ μῦθος πρὸς ἀνθρώπους, οἵτινες τὰ ἔργα τοῖς λόγοις οὐκ ἔχουσιν ὅμοια, F 104 ὁ μῦθος οὗτος δηλοῖ τοὺς ἀνθρώπους, οἵτινες τὰ ἔργα οὐκ ἔχουσι κατὰ τοὺς λόγους.

Babrius 95) b] cf. Bodl. 75 et F 356 ὅτι ὁ τῆς φιλοδοξίας ἔρως τὸν ἀνθρώπινον (ἀνθρώπων F) νοῦν ἐπιθολοῖ καὶ τὰς τῶν κινδύνων συμφορὰς οὐ κατανοεῖ. —

Ad idem genus nescio an trahi debeat A 207:

Παῖς ποτε λουόμενος ἔν τινι ποταμῷ ἐκινδύνευσεν ἀποπνιγῆναι· ἰδὼν δὲ ὁδοιπόρον τοῦτον ἐπὶ βοήθειαν ἐφώνει· ὁ δὲ ἐμέμφετο τὸν παῖδα ὡς τολμη-

---

[1]) Similiter C 2'9 sive F 328 ὁ λόγος δηλοῖ τοῦτο· οὐκ ὀκνοῦσιν οἱ πολλοὶ διὰ τὸ ἴδιον κέρδος εἰς τὰ ἀδύνατα καὶ ἀνύπαρκτα ψευδομαρτυρεῖν (sed cf. M 15 ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι πολλοὶ διὰ τὸ ἴδιον κέρδος οὐκ ὀκνοῦσιν οὐδὲ τοῖς ἀδυνάτοις ψευδομαρτυρεῖν, ubi ὅτι etiam A 5 omittit) et $310^{a}$ ὁ μῦθος δηλοῖ τοῦτο· μὴ μέμφου, πλὴν ἐλέησον. Attamen F 108 habet: ὁ μῦθος τοῦτο δηλοῖ, ὅτι οἱ φιλονεικοῦντες τοῖς κρείττοσι τῆς ἑαυτῶν σωτηρίας καταφρονοῦσι.

ρόν. Τὸ δὲ μειράκιον εἶπε πρὸς αὐτόν· 'ἀλλὰ νῦν βοήθει, ὕστερον δὲ σωθέντα [μὴ] μέμφου'.

Ὁ λόγος εἴρηται πρὸς τοὺς ἀφορμὰς καθ' ἑαυτῶν διδόντας ἀδικεῖσθαι.

Procul dubio affabulatio a fabulae tenore alienissima aliunde inrepsit; quodsi de pristina memoria quaestio exoritur, verba in A tradita aut ad fabellam deperditam pertinent aut alterum apologi praecedentis (n. 206) epimythium repraesentant:

Ποιμὴν ἐξελαύνων αὐτοῦ τὴν ποίμνην ἀπό τινος κώμης πορρότέρω διετέλει τοιαύτῃ παιδιᾷ χρώμενος· ἐπιβοώμενος γὰρ τοὺς κωμήτας ἐπὶ βοήθειαν ἔλεγεν, ὡς λύκοι τοῖς προβάτοις ἐπῆλθον. Δὶς <δὲ> καὶ τρὶς τῶν ἐκ τῆς κώμης ἐκπλαγέντων καὶ ἐκπηδησάντων, εἶτα διὰ γέλωτος ἀπαλλαγέντων συνέβη τὸ τελευταῖον ταῖς ἀληθείαις λύκους ἐπελθεῖν. Ἀποτεμνομένης δὲ αὐτοῦ τῆς ποίμνης αὐτὸς ἐπὶ βοήθειαν βοῶν ἐκεῖνοι ὑπολαβόντες αὐτὸν παίζειν κατὰ τὸ ἔθος οὐδὲν ἐφρόντισαν. Καὶ οὕτως αὐτῷ συνέβη ἀπολέσθαι τὰ πρόβατα.

Ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι τοῦτο κερδαίνουσιν οἱ ψευδόμενοι τὸ μηδ' ὅταν ἀληθεύωνται πιστεύεσθαι ὑπό τινος.

Idem vitium occupavit F 166 et 167, ubi gemellis fabulis gemella epimythia subiunguntur [1]). Cum A 206 et F 166 alia eiusdem narrationis exempla (M 211, Bodl. 120, C 266) conspirant [2]); alteri autem apologo alia affabulatio eaque optima adhaeret in simillima conlectionis Coraisianae fabella n. 310ᵃ ὁ μῦθος δηλοῖ τοῦτο· μὴ μέμφου, πλὴν ἐλέησον cf. etiam Bodl. 115 ὅτι τοὺς ἐν κινδύνοις ἀπείρως ἐμπεσόντας δεῖ πρότερον σώζειν, ἔπειτα διδάσκειν καὶ νουθετεῖν et Syntipas 23 (sive C 310ᵇ) ὁ μῦθος δηλοῖ, ὡς ὁ ἐν περιστάσει τινὰ προςονειδίζων ἀκαίρως αὐτοῦ καὶ ἀπρεπῶς καταμέμφεται.

Alia tamen ratio intercedit in Bodl. 30:

Ὅτι τοιοῦτον ἦθός τινες τῶν ἀνθρώπων ἔχουσιν, οἷς ἀεὶ μᾶλλον ἐχθραίνειν ἐστὶ καλὸν ἢ φιλεῖν.

Δύο γεννᾷ τέκνα μιμώ· καὶ τὸ μὲν ἓν ἀγαπᾷ, τὸ δὲ ἕτερον μισεῖ. Καὶ ὃ μὲν στέργει, ἀεὶ ἐν τοῖς κόλποις περιφέρουσα καὶ τιθεῖσα ἔνθεν κἀκεῖθεν καὶ τοῦτο καταφιλοῦσα ἀποπνίγει· ὃ δὲ μισεῖ <καὶ> διώκει, τοῦτο [δὲ] [3]) ἐν ταῖς ἐρημίαις ἀπελθὸν ζῇ καθ' ἑαυτό.

---

[1]) Varietas scripturae haec est: A 206) ὁ λόγος] ὅλως F; corr. Corais p. 395 n. 6 ‖ μηδ'] μηδὲ ‖ ἀληθεύωνται] ἀληθεύουσι ‖ ὑπό τινος om.; — A 207) ὁ λόγος] ὅλως F; corr. Corais p. 404 n. 3 ‖ ἀφορμὰς] ἀφορμήν.

[2]) Ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι τοῦτο κερδαίνουσιν οἱ ψευδόμενοι τὸ μηδὲ ὅταν ἀληθεύωσι πιστεύεσθαι M, ὅτι τοῦτο ὄφελος τῷ ψεύστῃ, ἵνα, κἂν ἀλήθειαν λέγῃ, μὴ πιστεύηται Bodl., ὅτι τοσοῦτον ὄφελος τῷ ψεύστῃ, ὅτι καὶ ἀληθῆ λέγων πολλάκις οὐ πιστεύεται C. — De sententia ipsa cf. Gnomol. Vat. 366 cum nota nostra („Wiener Studien" vol. XI — 1889 — p. 51).

[3]) Καὶ adieci, δὲ resecui ex C 267ᵇ. Eodem modo sanandi sunt Babrii versus (n. 35):

δύο μὲν υἱοὺς ἡ πίθηκος ὠδίνει,
τεκοῦσα δ' αὐτοῖς ἐστιν οὐκ ἴση μήτηρ.

Ὀλεθρίου φιλίης ἔχθρα προτιμοτέρη.

Fabularum Babrianarum paraphrasis Bodleiana singulis apologis semper promythia praemittit, epimythia numquam comparent; duplex igitur affabulatio probari non potest. Adulterinum textum eiusdem recensionis codex M(arcianus) prodit, quiquidem verba ὀλεθρίου (ὀλέθριος Bodl.; corr. Knoell.) φιλίης ἔχθρα προτιμοτέρη prorsus ignoret. Sed fortasse interpolator sententiam de perniciosa amicitia cum extremis narratiunculae verbis hoc fere modo consociata esse voluit: ἀπελθὼν ζῇ καθ' ἑαυτὸ <διδάσκον, ὅτι> cf. C p. 396 τὸ δὲ μισηθὲν εἰς τὰς ἐρήμους φοιτῆσαν διέδρασε τὸν κίνδυνον κρείττω ἡμῖν τῆς κακίστης φιλίας τὴν ἔχθραν ἐλέγχουσα. De formis Ionicis cf. Bodl. 14 ἀρούρῃ παγίδας γεωργὸς ἔστησε, 68 εἰ δὲ ἐχθρός, τί σαίνεις οὐρήν; 94 ὁ δὲ οἰκόσιτος ἦλθε πρῶτος δειπνήσων ἐπὶ τῆς ἀρούρης ἔτι ἀνθούσης.

Promythium ipsum ex fabulae Babrianae v. 7 sq. detortum est:

τοιοῦτο πολλῶν ἐστιν ἦθος ἀνθρώπων,
οἷς ἐχθρὸς αἰεὶ ¹) μᾶλλον ἢ φίλος γίγνου.

Similiter C 267ᵇ ὅτι τισὶν ἐχθραίνειν μᾶλλόν ἐστι καλὸν ἢ φιλεῖν.

Ex his vero exemplis commodum in A 215 epimythium lucramur, quo loco verba ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι πάσης προνοίας ἡ τύχη δυνατωτέρα καθέστηκε inepta sunt. Cum A faciunt F 182 et C 267ᵃ ²), ubi fere gemelli apologi proponuntur; tres igitur conlectiones una eademque corruptela obsedit. Scilicet fabula de simiae liberis epimythio genuino caret, affabulatio autem ὁ λόγος — καθέστηκε ad fabellam deperditam referenda est, in M 224 servatam:

Τέττιξ ἐπί τινος ὑψηλοῦ δένδρου ᾖδεν. Ἀλώπηξ δὲ βουλομένη αὐτὸν καταφαγεῖν τοιοῦτόν τι ἐπενόησεν. Ἄντικρυς στᾶσα ἐθαύμαζεν αὐτοῦ τὴν εὐφω-

ἀλλ' ὃν μὲν εἵλετ', ἀθλίης ὑπ' εὐνοίης
θάλπουσα κόλποις ἀγρίοις ἀποπνίγει·
τὸν δ' ὡς περισσὸν καὶ μάταιον ἐκβάλλει,
ἐκεῖνος ἐλθὼν εἰς ἐρημίην ζώει.

Volgo αὐτῶν pro εἵλετ' legitur, tum τὸν δ' — ἐκβάλλει. Κἀκεῖνος. V. 3 sq. inutitilia temptabant Nauckius et Gitlbauer.

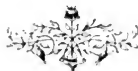
¹) Equidem Ionicam formam αἰεὶ reddiderim, ubicumque prior syllaba in arsi conlocatur, scilicet: 31, 2; 39, 1; 61, 7; 63, 4; 112, 9, quibus locis ᾱ arsin secundam explet Thesin primam eadem syllaba occupat n. 12, 9; 22, 13 et 16; 31, 6; 74, 17; 95, 53; secundam n. 143, 2; tertiam n. 102, 11; quartam n. 44, 1; 64, 8. 9; 85, 7; quintam n. 44, 8. — Cum γίγνου contendi potest γιγνώσκω n. 1, 16 cf. tamen γίνου 54, 3; 95, 80; 101, 8; γίνεται 118, 4; γίνου 87, 4 et 98, 11; γινώσκω 13, 10 et 42, 8; γινώσκεις 92, 4; γινώσκει 2, 15· προγινώσκων 43, 17; γινώσκειν 23, 9. Utramque formam tractat „Anthologiae Planudeae Appendix Barberino-Vaticana“ (L. 1890) p. 26 sq.

²) F ex more ὅλως offert (cf. p. 407 n. 5), καθέστηκε omittit C.

νίαν καὶ παρεκάλει καταβῆναι λέγουσα, ὅτι ἐπιθυμεῖ θεάσασθαι, πηλίκον ζῷον τηλικαύτην φωνὴν φθέγγεται. Κἀκεῖνος ὑπονοήσας αὐτῆς τὴν ἐνέδραν φύλλον ἀποσπάσας καθῆκε. Προσδραμούσης δὲ ὡς ἐπὶ τὸν τέττιγα ἔφη· ἀλλὰ πεπλάνησαι, ὦ αὕτη, εἰ ὑπέλαβές με καταβήσεσθαι· ἐγὼ γὰρ ἀπ' ἐκείνου ἀλώπεκας φυλάττομαι, ἀφ' οὗ ἐν ἀφοδεύματι ἀλώπεκος πτερὰ τέττιγος ἐθεασάμην.

Ὁ λόγος δηλοῖ, ὅτι πάσης προνοίας ἡ τύχη δυνατωτέρα καθέστηκεν.

Quam narrationem epimythio ὅτι τοὺς φρονίμους τῶν ἀνθρώπων τῶν πέλας αἱ συμφοραὶ σωφρονίζουσι instruxit C 278 (sive F 322).



(Ciąg dalszy na odwrotnej stronie.)

1716

J. Latkowski: Mendog, król litewski, lex. 8° str. 154 z mapą. Cena 1 zlr. 50 ct.
A. Lewicki: Powstanie Świdrygiełły, lex. 8° str. 389. Cena 3 zlr.
W. Lutosławski: O logice Platona.- Część pierwsza. O tradycyi tekstu Platona, lex. 8° str. 69. Cena 60 ct.
Wł. Łuszczkiewicz: Reszty romańskiej architektury dawnego opactwa Cysterskiego w Wachocku, folio str. 26 z 11 cynkotypami i 8 tablicami fotolitograficznemi. Cena 1 zlr.
— Polichromia drewnianego kościołka w Dębnie pod N. Targiem. Sprawozdanie z wycieczki naukowej w lecie 1891 r. Z 3 tablicami i 22 cynkotypami w tekscie, folio, str. 24. Cena 1 zlr. 50 ct.
L. Malinowski: O niektórych wyrazach ludowych polskich; zapiski porównawcze, lex. 8° str. 102. Cena 1 zlr.
Wł. Matlakowski: Budownictwo ludowe na Podhalu, 4-to str. 93 z 23 tablicami litograficznemi i 25 rysunkami w tekscie, oprawne, tablice w osobnej oprawnej teczce. Cena 7 zlr. 50 ct.
J. Milewski: Stosunek wartości złota do srebra, lex. 8° str. 118. Cena 1 zlr. 50.
A. Miodoński: Czas powstania historyi Florusa, lex. 8° str. 10. Cena 20 ct.
— Miscellanea latina, lex. 8° str. 9. Cena 20 ct.
— Incerti anctoris exhortatio de paenitentia, lex. 8° str. 10. Cena 20 ct.
Monumenta Poloniae Historica. Pomniki dziejowe Polski. Tom VI. opracowany przez lwowskie grono członków komisyi historycznej 4° str. 731. Cena 10 zlr.
K. Morawski: Andrzej Patrycy Nidecki, jego życie, dzieła, 8° str. 402. Cena 3 zlr.
— Jakób Górski, jego życie i dzieła, lex. 8° str. 37. Cena 40 ct.
— De rhetoribus latinis observationes, lex. 8° str. 20. Cena 30 ct.
Fr. Piekosiński: Uwagi nad ustawodawstwem wiślicko-piotrkowskiem króla Kazimierza W., lex. 8° str 91. Cena 90 ct.
J. Radliński: Słowniki narzeczy ludów kamczackich: (ze zbiorów Prof. B. Dybowskiego), I. Słownik narzecza Ainów, lex. 8° str. 67. Cena 60 ct.
— II. Słownik narzecza Kamczadalów wschodnich, lex. 8° str. 88. Cena 90 ct.
— III. Słownik narzecza Kamczadalów południowych, lex. 8° str. 20 Cena 50 ct.
— IV. Słownik narzecza Kamczadalów zachodnich, lex. 8° str. 84. Cena 75 ct.
— V. Słownik narzecza Koryaków wschodnich, lex. 8° str. 81. Cena 75 ct.
St. Ramult: Słownik języka pomorskiego czyli kaszubskiego. 4° str. XLVIII i 298. Cena 4 zlr.
J. Rozwadowski: Łacińskie słowa pochodne urobione z pnia imiesłowu biernego na -to- (t. z. Iterativa lub Frequentativa i Intensiva) lex 8° str. 46. Cena 50 ct.
W. Rubczyński: Traktat o porządku istnień. lex 8° str 35 z tablicą. Cena 40 ct.
J. N. Sadowski: Miecz koronacyjny polski »Szczerbcem« zwany. Z 2. tablicami i 12 rycinami. lex. 8° str. 60. Cena 1 zlr. 50 ct.
M. Sas: Przyczynek do poezyi polsko-łacińskiej XVI wieku, lex. 8° str. 32 Cena 40 ct.
— O miarach poematów łacińskich Jana Kochanowskiego, lex. 8° str. 51. Cena 50 ct.
St. Smolka: Stanowisko mocarstw w obec konstytucyi Trzeciego Maja, 16° str. 27. Cena 30 ct.
L. Sternbach: Curae Menandreae, lex. 8° str. 78. Cena 1 zlr.
— Joannis Geometrae Carmen de s. Panteleemone, lex. 8° str. 86. Cena 1 zlr 50 ct.
— Photii patriarchae opusculum, lex. 8° str. 82. Cena 1 zlr. 50 ct.
— Analecta Photiana, lex. 8° str. 42. Cena 75 ct.
— Gnomologium Parisinum ineditum. Appendix Vaticana, lex 8° str. 83. Cena 1 zlr. 50 ct.
— Fabularum Aesopiarum Sylloge, lex 8°, str. 83. Cena 1 zlr. 50 ct.
Uchwały w sprawie pisowni. Cena 40 ct.
B. Ulanowski: O założeniu i uposażeniu klasztoru Benedyktynek w Staniątkach, lex. 8° str. 131 z 5 tabl. Cena 2 zlr.
S. Windakiewicz: Pierwsze kompanie aktorów w Polsce, lex. 8° str. 21. Cena 30 ct.
S. Witkowski: Stosunek »Szachów« Kochanowskiego, do poematu Vidy »Scacchia ludus«, lex. 8° str 39. Cena 60 ct.
— De vocibus hybridis apud antiquos poetas romanos, lex. 8° str. 29. Cena 60 ct.
A. Zakrzewski: Wzrost w Królestwie Polskiem, 8° str. 39 z 2 mapkami i tablicą graficzną. Cena 75 ct.
M. Zdziechowski: Karol Hynek Macha i bajronizm czeski, lex. 8° str. 69. Cena 1 zlr.

**Skład główny wydawnictw Akademii Umiejętności znajduje się w Księgarni Spółki wydawniczej Polskiej w Krakowie.**


Stanford University Libraries
3 6105 124 428 900